Adheres to NATIONAL EDUCATION POLICY MIDDLE STAGE

BRILLIANT BOOKS

व्याकरण सुमन

8

नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अनुरूप

व्याकरण सुमन

8

अशोक कुमार गुप्ता
एम० ए०

BRILLIANT

BRILLIANT BOOKS

A-9, झिलमिल इण्डस्ट्रियल एरिया,
दिलशाद गार्डन मेट्रो स्टेशन के पीछे,
दिल्ली–110 095
email : info@brilliantbooks.co.in
www.brilliantbooks.co.in
Tollfree : 1800 270 1317

इस पुस्तक को यथासम्भव शुद्ध एवं त्रुटिरहित रूप में प्रस्तुत करने का प्रत्येक सम्भव प्रयास किया गया है; फिर भी इसमें कोई कमी अथवा त्रुटि रह गयी हो तो उससे कलित क्षति एवं सन्ताप के लिए लेखक, सम्पादक, प्रकाशक एवं मुद्रक का कोई दायित्व नहीं होगा। प्राप्त सुझावों अथवा त्रुटियों का समायोजन आगामी संस्करण में कर दिया जायेगा।

© प्रकाशकाधीन

कला कार्य
मलय चक्रवर्ती

प्रकाशक एवं मुद्रक
विद्या प्रकाशन मन्दिर प्रा० लि०

प्रस्तावना

भाषा ही मानव को अन्य प्राणियों से श्रेष्ठ बनाती है। बच्चा परिवार से भाषा सीखना आरम्भ करता है और विद्यालय में उसका उचित प्रयोग करना सीखता है। हमें भाषा शुद्ध ढंग से बोलना और लिखना आना चाहिए। इसके लिए विद्वानों ने कुछ नियम बनाए हैं। हमें इन्हीं नियमों की सही जानकारी के लिए उसके व्याकरण को जानना आवश्यक है। इससे भाषा का उचित प्रयोग करना आ जाता है।

छात्र प्रारम्भ से ही व्याकरण को कठिन विषय के रूप में देखने लगते हैं। अत: आवश्यक है कि विद्यार्थियों को व्याकरण का ज्ञान अति सरस और सरल ढंग से कराया जाए। इसी बात को ध्यान में रखते हुए प्रस्तुत पुस्तक-शृंखला **व्याकरण-सुमन** की रचना की गई है।

इस शृंखला की मुख्य विशेषताएँ हैं—

- सरल भाषा और रोचक रचनात्मक गतिविधियाँ।
- आकर्षक चित्र तथा दैनिक जीवन से जुड़े उद्धरण।
- खेल-खेल में व्यावहारिक भाषा के माध्यम से व्याकरण के नियमों की सहज व्याख्या।
- रटने की जगह स्वयं प्रयोग से सीखने पर बल।
- स्तरानुकूल सरल से कठिन की ओर बढ़ता ज्ञान।

हमारा प्रयास रहा है कि हम व्याकरण को बोझिल न होने दें और उसे कुछ इस तरह से प्रस्तुत करें जिससे विद्यार्थी व्याकरण को रुचि से आत्मसात् कर सकें। यही अभिरुचि पैदा करना हमारा ध्येय है। नये पाठ्यक्रम को ध्यान में रखते हुए इस शृंखला में वस्तुनिष्ठ प्रश्नों का अधिकाधिक समावेश किया गया है।

आशा है, यह पुस्तक-शृंखला विद्यार्थियों के लिए रुचिकर और उपयोगी सिद्ध होगी। शिक्षकों और विद्वानों के सुझावों का सदैव स्वागत है।

—लेखक

विषय-सूची

1. भाषा और व्याकरण (Language and Grammar) ... 05
2. वर्ण-विचार (Phonology) ... 10
3. शब्द-विचार (Morphology) ... 15
4. शब्द-भण्डार (Glossary) ... 20
5. संज्ञा (Noun) ... 26
6. संज्ञा के विकार : लिंग, वचन और कारक (Declension of Noun : Gender, Number and Case) ... 31
7. सर्वनाम (Pronoun) ... 42
8. विशेषण (Adjective) ... 46
9. क्रिया और काल (Verb and Tense) ... 52
10. अव्यय/अविकारी (Indeclinable) ... 58
11. अशुद्धि शोधन (Correction of Error) ... 67
12. सन्धि (Joining) ... 71
13. उपसर्ग, प्रत्यय और समास (Prefix, Suffix and Compound) ... 76
14. वाक्य-विचार (Syntax) ... 87
15. विराम-चिह्न (Punctuation-Marks) ... 90
16. मुहावरे और लोकोक्तियाँ (Idioms and Proverbs) ... 93
17. अनुच्छेद-लेखन (Paragraph-Writing) ... 100
18. सार-लेखन (Precis-Writing) ... 102
19. संवाद-लेखन (Dialogue-Writing) ... 104
20. कहानी-लेखन (Story-Writing) ... 107
21. पत्र-लेखन (Letter-Writing) ... 110
22. निबन्ध-लेखन (Essay-Writing) ... 113
23. अपठित बोध (Unseen Passages) ... 119

❖ Periodic Test : Term-1 ... 123

◉ Half-Yearly Test Paper ... 124

❖ Periodic Test : Term-2 ... 126

◉ Annual Test Paper ... 127

1

भाषा और व्याकरण
Language and Grammar

1. भाषा

एक व्यक्ति को अपने दैनिक जीवन में घर, विद्यालय, पार्क, सड़क, दुकान, बाज़ार हर जगह अपने मन के विचार या भाव दूसरे व्यक्ति तक पहुँचाने पड़ते हैं, तभी वह उसकी बात को समझ पाता है। इसके लिए वह भाषा का प्रयोग करता है। बिना भाषा के अपनी बात दूसरों को समझा पाना बहुत कठिन है। इस प्रकार, भाषा एक माध्यम है जिसके द्वारा हम अपने भावों को बोलकर या लिखकर प्रकट करते हैं और दूसरों के भावों और विचारों को सुनकर या पढ़कर समझते हैं यानी, भाषा विचार-विनिमय का साधन है।

इससे भाषा के निम्नलिखित लक्षणों का पता चलता है—

- भाषा सार्थक ध्वनियों के मेल से बनती है।
- भाषा में ध्वनियों के लिए प्रतीक होते हैं।
- भाषा मन के भावों/विचारों को दूसरों तक पहुँचाती है।

प्रत्येक भाषा में शब्दों के अर्थ होते हैं। साथ ही उसमें वर्ण, शब्द व वाक्य संरचना की व्यवस्था भी होती है।

भाषा के भेद

भाषा के दो प्रमुख रूप होते हैं—1. मौखिक तथा 2. लिखित।

1. मौखिक भाषा

जब कोई व्यक्ति मुख से बोलकर परस्पर भाषण अथवा बातचीत के द्वारा अपने विचार प्रकट करता है तो इसे मौखिक भाषा कहते हैं; जैसे—भाषण, बातचीत, नाटक, रेडियो-प्रसारण, दूरदर्शन, टेलीफोन आदि की बातचीत कथित अथवा मौखिक भाषा के रूप हैं। वास्तव में भाषा मूल रूप में मौखिक होती है। मौखिक भाषा के आधार पर ही भाषा का लिखित रूप अस्तित्व में आया।

2. लिखित भाषा

जब कोई व्यक्ति अपने भावों अथवा विचारों को लिखकर व्यक्त करता है तो इसे लिखित भाषा कहते हैं; जैसे—कक्षा में अध्यापक ब्लैकबोर्ड पर लिखते हैं। ● आप अपनी कॉपी पर लिखते हैं।

सांकेतिक भाषा—संकेतों के द्वारा भी मनुष्य अपने मनोभावों को व्यक्त करता है। रेलगाड़ी का गार्ड 'हरी झण्डी' दिखाकर गाड़ी के ड्राइवर को गाड़ी चलाने का संकेत करता है तो चौराहे का सिपाही हाथ के संकेतों द्वारा चलने या रुकने का; परन्तु ये भाव या विचार सीमित और अपूर्ण होते हैं। इनके द्वारा सभी इच्छित विचारों को न तो प्रकट किया जा सकता है और न ही भली-भाँति समझा जा सकता है। इसी कारण से सांकेतिक भाषा को भाषा के अन्तर्गत नहीं रखा जाता।

विभिन्न भाषाएँ

संसार में जितने समाज या समुदाय हैं प्राय: सबकी अपनी-अपनी भाषा है। इन भाषाओं को अलग-अलग भाषा-परिवारों में बाँटा गया है। एक ही भाषा-परिवार की भाषाओं का जन्म किसी एक मूल भाषा से हुआ माना जाता है।

मातृभाषा—जिस भाषा को बालक अपनी माँ तथा परिवार द्वारा सीखता है, उसे मातृभाषा कहते हैं। इस भाषा से बालक का सर्वप्रथम परिचय होता है। यदि परिवार द्वारा कश्मीरी भाषा बोली जाती है तो बालक की मातृभाषा कश्मीरी होगी।

राष्ट्रभाषा—वह भाषा जिसका प्रयोग एक देश के अधिकांश निवासियों द्वारा किया जाता है, राष्ट्रभाषा कहलाती है। भारत में हिन्दी का प्रयोग लगभग 70 प्रतिशत निवासियों द्वारा किसी-न-किसी रूप में किया जाता है। अत: हिन्दी हमारी राष्ट्रभाषा मानी जाती है किन्तु इसकी आधिकारिक मान्यता प्राप्त नहीं है।

राजभाषा—राज + भाषा अर्थात् राज-काज की भाषा। वह भाषा जिसका प्रयोग देश के कार्यालयों में काम-काज के लिए किया जाता है, राजभाषा कहलाती है।

- 14 सितम्बर, 1949 को संविधान के अनुच्छेद 343 के अनुसार, हिन्दी को भारत की राजभाषा घोषित किया गया। इसलिए प्रतिवर्ष इस दिन 'हिन्दी दिवस' मनाया जाता है।

सम्पर्क भाषा—सम्पर्क + भाषा अर्थात् सम्पर्क की भाषा। वह भाषा जिसका प्रयोग देश के निवासी आपस में सम्पर्क करने के लिए करते हैं, सम्पर्क भाषा कहलाती है।

- भारत की सम्पर्क भाषा हिन्दी है तथा विश्व की सम्पर्क भाषा अंग्रेज़ी।

भारत की भाषाएँ

भारत एक विशाल देश है जिसमें अनेक राज्य हैं। इन राज्यों में अलग-अलग भाषाओं का प्रयोग किया जाता है।

वर्तमान में भारतीय संविधान द्वारा भारत की बाईस भाषाओं को मान्यता प्रदान की गई है—असमिया, ओड़िया, उर्दू, कन्नड़, कश्मीरी, कोंकणी, गुजराती, तमिल, तेलुगू, मलयालम, मराठी, पंजाबी, बांग्ला, नेपाली, मणिपुरी, संस्कृत, सिन्धी, हिन्दी, डोगरी, बोडो, मैथिली और संथाली। भारत के राज्यों में अलग-अलग भाषाएँ होने पर भी 'हिन्दी' एक ऐसी भाषा है जिसका प्रयोग प्राय: सभी राज्यों में किसी-न-किसी रूप में किया जाता है।

मानक भाषा—जब भाषा विकास-प्रक्रिया से गुज़रती है तब उसकी एकरूपता को बनाए रखना कठिन होता है। हिन्दी भाषा का क्षेत्र बहुत व्यापक है इसलिए इस पर बोलियों तथा उपभाषाओं का प्रभाव पड़ता रहता है। ऐसी स्थिति में वर्णों व शब्दों के एक से अधिक रूप प्रचलित हो जाते हैं। कौन-सा रूप शुद्ध तथा मानक है, यह जानने में कठिनाई का अनुभव होता है। इस कारण से जिस भाषा को भाषाविदों द्वारा प्रयुक्त व स्वीकृत किया जाता है, उसे मानक भाषा कहा जाता है। भाषा का मान्यता प्राप्त रूप ही मानक रूप कहलाता है।

लिपि

अपने विचारों को बोलते समय हम ध्वनि-संकेतों का प्रयोग करते हैं तथा लिखते समय आखरों या वर्णों का प्रयोग करते हैं। लिखित भाषा में प्रत्येक ध्वनि के लिए कोई-न-कोई चिह्न (आखर अथवा वर्ण) अवश्य होता है। ध्वनियों को अंकित करने के लिए निश्चित किए गए चिह्नों की व्यवस्था को लिपि कहते हैं।

विश्व भर में बोली जाने वाली कुछ भाषाओं की लिपि समान है और कुछ की लिपि एक-दूसरे से भिन्न है। कुछ भाषाएँ और उनकी लिपियों के नाम इस प्रकार हैं—

भाषा	लिपि	लिखने की विधि
हिन्दी, संस्कृत, मराठी, नेपाली	देवनागरी	बाईं से दाईं ओर लिखी जाती है।
उर्दू, अरबी, फ़ारसी	फ़ारसी	दाईं से बाईं ओर लिखी जाती है।
अंग्रेज़ी, फ्रेंच, जर्मन, स्पेनिश	रोमन	बाईं से दाईं ओर लिखी जाती है।
पंजाबी	गुरुमुखी	बाईं से दाईं ओर लिखी जाती है।
रूसी, बुल्गेरियन	सिरिलिक	बाईं से दाईं ओर लिखी जाती है।
चीनी	कांजी	बाईं से दाईं ओर लिखी जाती है।

हिन्दी देवनागरी लिपि में लिखी जाती है, जिसका विकास ब्राह्मी लिपि से हुआ है। इसमें वर्ण और मात्राएँ मिलाकर लिखी जाती हैं। इसी कारण देवनागरी लिपि एक-आक्षरिक लिपि है।

हिन्दी भाषा का परिचय

हिन्दी का उद्‌गम संस्कृत भाषा से हुआ है जो सभी आर्य भाषाओं की जननी है। संस्कृत से हिन्दी का विकास-क्रम इस प्रकार है—

वैदिक संस्कृत ● लौकिक संस्कृत ● पालि ● प्राकृत ● अपभ्रंश ● शौरसेनी और मगधी अपभ्रंश ● हिन्दी

हिन्दी का झुकाव हमेशा सरलता की ओर रहा है। अपनी इसी विशेषता के कारण इसे उदार-हृदय भाषा भी कहा जाता है। हिन्दी अन्य भाषाओं की विशेषताओं और शब्दों को बड़ी सरलता से अपना लेती है तथा अपनी जटिलताओं को छोड़ देती है। हिन्दी को पढ़ना-लिखना इसलिए भी सरल है क्योंकि इसे जैसे पढ़ा जाता है वैसे ही लिखा भी जाता है।

आज हिन्दी का जो रूप प्रचलित है उसे खड़ीबोली कहते हैं। खड़ीबोली अत्यन्त सहज और सरल होने के कारण शीघ्र ही जनसम्पर्क की भाषा बन गई। यही कारण है कि आज हिन्दी को भारत की राष्ट्रभाषा माना जाता है। संसार में बोली जाने वाली भाषाओं में चीनी और अंग्रेज़ी के बाद हिन्दी का तीसरा स्थान है।

साहित्य

साहित्य के अन्तर्गत समय-समय पर विद्वान तथा पण्डित अपने संचित ज्ञान के आधार पर नवीन विचारों को हमारे समक्ष रखते हैं। विद्वानों का मनन समाज के विकास का साधन होता है, यही साहित्य कहलाता है अर्थात् ज्ञान के संचित कोष को ही साहित्य कहते हैं। साहित्य की दो विधाएँ होती हैं—गद्य एवं पद्य।

गद्य—जब हम अपनी बात या विचार साधारण रूप में व्यक्त करते हैं तब वह गद्य कहलाता है। कहानी, उपन्यास, निबन्ध, रेखाचित्र, जीवनी आदि गद्य के उदाहरण हैं।

पद्य—जब हम अपनी बात या विचार काव्य के रूप में व्यक्त करते हैं तब वह पद्य कहलाता है। कविता, गीत, छन्द, सोरठा आदि पद्य के उदाहरण हैं।

2. व्याकरण

पहले भाषा प्रयोग में आती है। उसे शुद्ध रूप देने के लिए व्याकरण तैयार किया जाता है। व्याकरण के द्वारा भाषा के शुद्ध रूप का ज्ञान होता है। व्याकरण के नियमों से भाषा को शुद्ध रूप से बोलना और लिखना आ जाता है। व्याकरण के नियमों से अनुशासित भाषा ही मानक भाषा कहलाती है। अत: व्याकरण वह शास्त्र है, जो भाषा के शुद्ध रूप व प्रयोग का ज्ञान कराता है।

सामान्यतया व्याकरण में भाषा का अध्ययन तीन स्तरों पर किया जाता है—

1. वर्ण-विचार—इसमें वर्णों के रूपों का ज्ञान प्राप्त करके उनके उच्चारण और लिखने की विधि के विषय में विचार किया जाता है।

2. शब्द-विचार—इसमें शब्दों के भेद, उनकी उत्पत्ति, बनावट और परिवर्तन आदि के विषय में विचार किया जाता है। वाक्य में प्रयुक्त होने पर शब्द 'पद्य' का रूप ले लेता है।

3. वाक्य-विचार—इसमें वाक्यों की रचना, वाक्यों के भेद, वाक्यों का विग्रह और विराम-चिह्नों के प्रयोग पर विचार किया जाता है।

व्याकरण का ज्ञान भाषा का ठीक-ठीक और प्रभावशाली प्रयोग करना सिखाता है। एक भाषा को जानने वाला व्यक्ति उस भाषा का व्याकरण जानकर उसे शीघ्रता और शुद्धता से पढ़ना-लिखना सीख जाता है।

कुछ करके सीखें

1. सही उत्तर पर सही (✓) का चिह्न लगाइए—

(क) आजकल बोली जाने वाली हिन्दी भाषा का क्या नाम है?

(i) साहित्यिक हिन्दी ◯ (ii) सरकारी हिन्दी ◯ (iii) खड़ी बोली ◯ (iv) पूर्वी हिन्दी ◯

(ख) व्याकरण का ज्ञान आवश्यक है—

(i) भाषा की सुन्दरता बनाए रखने के लिए ◯ (ii) भाषा के शुद्ध ज्ञान के लिए ◯

(iii) भाषा को सरलता से बोलने के लिए ◯ (iv) भाषा के महत्त्व को जानने के लिए ◯

(ग) "मैं विद्यार्थी हूँ।"—इस वाक्य में किस चीज़ की कमी है?

(i) शब्दों की ◯ (ii) विचारों की ◯ (iii) व्याकरण की ◯ (iv) क्रम की ◯

2. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए—

(क) ..... विचार-विनिमय का साधन है।

(ख) भाषा के शुद्ध रूप तथा ..... का ज्ञान कराने वाला शास्त्र ..... कहलाता है।

(ग) भारतीय संविधान द्वारा ..... भाषाओं को ..... प्रदान की गई है।

(घ) ध्वनियों को अंकित करने के लिए निश्चित किए गए चिह्नों की व्यवस्था को ..... कहते हैं।

(ङ) हिन्दी का उद्‌गम ..... भाषा से हुआ है जो सभी आर्य भाषाओं की जननी है।

3. निम्नलिखित स्थितियों में भाषा के किस रूप का प्रयोग होता है?

(क) समाचार-वाचिका द्वारा समाचार-वाचन। .....

(ख) छात्र द्वारा प्रश्न-पत्र हल करना। .....

(ग) सड़क पर दो व्यक्तियों का झगड़ना। .....

(घ) पिता जी द्वारा कम्प्यूटर पर काम करना। .....

(ङ) माँ द्वारा बच्चे को समझाना। .....

(च) समाचार-पत्र के विज्ञापन। .....

4. निम्नलिखित भाषाओं को उनकी लिपियों से मिलाइए—

भाषा— हिन्दी उर्दू फ्रेंच मराठी पंजाबी बुल्गेरियन नेपाली अंग्रेज़ी

लिपियाँ— रोमन गुरुमुखी देवनागरी सिरिलिक फ़ारसी

5. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए—

(क) भाषा के कितने रूप हैं? प्रत्येक के उदाहरण भी दीजिए।

(ख) लिपि क्या है? इसकी आवश्यकता क्यों पड़ी?

(ग) देवनागरी लिपि की तीन विशेषताएँ लिखिए।

(घ) भाषा के मानक रूप से आप क्या समझते हो? इसकी आवश्यकता क्यों पड़ी?

(ङ) भारत की राजभाषा क्या है? इसे भारत की राजभाषा घोषित करने के क्या कारण थे?

(च) हिन्दी भाषा का वर्तमान समय में क्या महत्त्व है?

(छ) साहित्य की दो प्रमुख विधाओं के नाम लिखिए।

रचनात्मक गतिविधियाँ

- मान लीजिए आप किसी ऐसे देश में गए हैं जहाँ की भाषा आपको नहीं आती। ऐसे में निम्नलिखित स्थितियों को आप अन्य लोगों को कैसे समझाएँगे?

(क) आपको प्यास लगी है।

(ख) आप रास्ता भूल गए हैं।

(ग) आपकी तबियत खराब है और आप डॉक्टर के पास जाना चाहते हैं।

2 वर्ण-विचार
Phonology

मनुष्य ने मुख से उच्चरित ध्वनियों को भाषा का रूप दिया। ध्वनियों का लिखित रूप 'वर्ण' कहलाया। लिपि वर्णों को लिखने का ढंग होता है, जिसमें प्रत्येक वर्ण के लिए एक निश्चित चिह्न होता है; जैसे—अ, आ, क, ख आदि। ये भाषा की सबसे छोटी इकाई होते हैं, जिनके और खण्ड (टुकड़े) नहीं किए जा सकते। इस प्रकार, भाषा की सबसे छोटी इकाई जिसके और खण्ड नहीं हो सकते, वर्ण कहलाती है।

- ❖ वर्णों के मेल से शब्द बनते हैं; जैसे—स् + आ + ग् + अ + र् + अ = सागर।
- ❖ प्रत्येक भाषा में वर्णों के रूप, संख्या तथा उच्चारण अलग-अलग होते हैं।

वर्णमाला

किसी भाषा के सभी वर्णों के व्यवस्थित और क्रमबद्ध समूह को उसकी वर्णमाला कहते हैं।

उच्चारण और प्रयोग के आधार पर हिन्दी वर्णमाला के दो भेद किए गए हैं—स्वर तथा व्यंजन।

1. स्वर

ये वे वर्ण होते हैं जिनका उच्चारण करते समय मुख से वायु बिना किसी रुकावट के निकलती है। इनके उच्चारण में किसी अन्य वर्ण की सहायता नहीं लेनी पड़ती है। इनका उच्चारण स्वतन्त्र रूप से होता है। हिन्दी में कुल 11 स्वर हैं।

सभी स्वरों के उच्चारण में एक-जैसा समय नहीं लगता। किसी के उच्चारण में कम समय लगता है तो किसी के उच्चारण में अधिक। इस आधार पर स्वरों के दो मुख्य भेद हैं—

(क) ह्रस्व स्वर—इन स्वरों के उच्चारण में कम समय लगता है। ये चार हैं—अ, इ, उ तथा ऋ।

(ख) दीर्घ स्वर—इन स्वरों के उच्चारण में ह्रस्व स्वरों से दुगुना समय लगता है। दीर्घ स्वरों की संख्या सात है—आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ।

विशेष—उच्चारण में लगने वाले समय के आधार पर स्वरों का एक अलग भेद भी माना जाता है—प्लुत स्वर। प्लुत स्वर के उच्चारण में ह्रस्व स्वर से लगभग तिगुना समय लगता है; जैसे—ओ३म् (यहाँ 'ओ' प्लुत स्वर है। प्लुत स्वर के आगे '३' का अंक लिखने की परम्परा थी।) हिन्दी में प्लुत स्वरों का प्रयोग लगभग लुप्त हो गया है।

स्वरों की मात्राएँ

स्वरों को जब व्यंजनों के साथ मिलाकर लिखा जाता है तो उनका रूप बदल जाता है। स्वरों के इस बदले रूप को मात्रा कहते हैं। स्वरों की मात्राएँ नीचे दी गई हैं—

स्वर	मात्रा	मात्रा-प्रयोग	उदाहरण
अ	—	क् + अ + म् + अ + ल् + अ	= कमल
आ	ा	क् + आ + ल् + आ	= काला

इ	ि	च् + इ + ड् + इ + य् + आ	= चिड़िया
ई	ी	च् + ई + ल् + अ	= चील
उ	ु	ब् + उ + ल् + अ + ब् + उ + ल् + अ	= बुलबुल
ऊ	ू	ध् + ऊ + प् + अ	= धूप
ऋ	ृ	म् + ऋ + ग् + अ	= मृग
ए	े	क् + ए + ल् + आ	= केला
ऐ	ै	म् + ऐ + न् + आ	= मैना
ओ	ो	क् + ओ + य् + अ + ल् + अ	= कोयल
औ	ौ	ग् + औ + र् + ई	= गौरी

विशेष—'र' पर 'उ' तथा 'ऊ' की मात्रा उसके नीचे नहीं बल्कि सामने लगती है; जैसे—

र + उ = रु (रुपया); र + ऊ = रू (रूठना)

अ की मात्रा का कोई चिह्न नहीं होता है, परन्तु सभी व्यंजनों के साथ अ सम्मिलित रहता है। किसी भी व्यंजन का उच्चारण अ की सहायता से ही किया जा सकता है। अ रहित व्यंजनों को हलन्त (्) लगाकर लिखा जा सकता है; जैसे—क्, ख्, ग्, घ्, ङ्, च्, छ्, ज् आदि।

अं तथा अः को अयोगवाह कहा जाता है। ये न तो स्वर होते हैं और न ही व्यंजन होते हैं।

अनुस्वार—'अं' या इसका चिह्न (ं) अनुस्वार कहलाता है। जब इसका उच्चारण किया जाता है तो वायु नाक से निकलती है। इसका उच्चारण भी ज़ोर से होता है; जैसे—गंदा, फंदा, कंधा आदि।

अनुनासिक—'अँ' या इसका चिह्न (ँ) अनुस्वार कहलाता है। इसे चन्द्रबिन्दु भी कहते हैं। जब इसका उच्चारण किया जाता है तो वायु नाक व मुख दोनों से निकलती है; जैसे—हँस, सूँघना, भाँति आदि। शिरोरेखा पर प्रयुक्त मात्राओं के साथ इसका प्रयोग नहीं किया जाता है, इसलिए वहाँ इसके स्थान पर अनुस्वार का प्रयोग किया जाता है; जैसे—मैं, नहीं, में, चोंच आदि।

विसर्ग—'अः' या इसका चिह्न (:) विसर्ग कहलाता है। इसका उच्चारण ह के समान होता है; जैसे—नमः, प्रातः, अतः, दुःख आदि।

2. व्यंजन

जिन वर्णों का उच्चारण स्वरों की सहायता से किया जाता है तथा जिनका उच्चारण करते समय वायु को मुख में अलग-अलग स्थानों पर रोकना पड़ता है, उन्हें व्यंजन कहते हैं। व्यंजनों के स्पष्ट उच्चारण के लिए स्वरों की सहायता लेनी पड़ती है। स्वररहित व्यंजनों को केवल लिखा जा सकता है किन्तु उनका उच्चारण सम्भव नहीं है।

व्यंजनों के चार भेद किए गए हैं—स्पर्श व्यंजन, उत्क्षिप्त व्यंजन, अंतःस्थ व्यंजन तथा ऊष्म व्यंजन।

स्पर्श व्यंजन—स्पर्श व्यंजन वे व्यंजन होते हैं, जिनका उच्चारण करते समय श्वास-वायु उच्चारण-स्थान विशेष को स्पर्श करती हुई बाहर निकलती है। हिन्दी वर्णमाला में क् से लेकर म् तक के सभी 25 व्यंजन स्पर्श व्यंजन हैं।

उत्क्षिप्त व्यंजन—जिन व्यंजनों का उच्चारण करने में वायु जीभ से टकराकर वापस आती है और फिर बाहर निकलती है, उन्हें उत्क्षिप्त व्यंजन कहते हैं। इनका उच्चारण-स्थान मूर्धा है। 'ड़' और 'ढ़' उत्क्षिप्त व्यंजन कहलाते हैं।

अंतःस्थ व्यंजन—अंत:स्थ व्यंजन वे व्यंजन होते हैं, जिनका उच्चारण स्वरों व व्यंजनों के बीच का प्रतीत होता है। अंत:स्थ व्यंजन केवल चार हैं। इनका उच्चारण करते समय ये न तो स्वर के अन्तर्गत लगते हैं और न ही व्यंजनों के अन्तर्गत अपितु इन दोनों के मध्य में स्थित लगते हैं। इसीलिए इन्हें अंत:स्थ (अंत: = मध्य में, स्थ = स्थित होना) व्यंजन कहते हैं। य, र , ल , व अंत:स्थ व्यंजन हैं।

ऊष्म व्यंजन—ऊष्म व्यंजन वे व्यंजन होते हैं, जिनका उच्चारण करते समय रगड़ खाकर मुख से ऊष्मा निकलती है। ये भी चार हैं—श , ष , स , ह । ऊष्म व्यंजनों को संघर्षी व्यंजन भी कहते हैं।

संयुक्त व्यंजन और द्वित्व व्यंजन

संयुक्त व्यंजन—जब दो भिन्न व्यंजन परस्पर संयुक्त होते हैं तो उन्हें संयुक्त व्यंजन कहा जाता है। क्ष, त्र, ज्ञ, श्र संयुक्त व्यंजन हैं। इन चारों के अलावा भी संयुक्त व्यंजनों के अनेक उदाहरण मिलते हैं—

क् + त = क्त (भक्त, रक्त) | ह् + न = ह्न/ह्न (चिह्न, अपराह्न)
ड् + ढ = ड्ढ (बुड्ढा, गड्ढा) | ह् + म = ह्म/ह्म (ब्रह्म, ब्रह्मा)
द् + व = द्व/द्व (द्वार, विद्वान) | द् + ध = द्ध/द्ध (सिद्ध, बुद्धू)
ट् + ठ = ट्ठ (गट्ठर, मुट्ठा) | द् + य = द्य/द्य (विद्या, द्युति)

द्वित्व व्यंजन—जब कोई स्वररहित व्यंजन अपने ही स्वरसहित व्यंजन से संयुक्त होता है तो उसे द्वित्व व्यंजन कहा जाता है; जैसे—स्स, च्च, प्प, ज्ज आदि।

र के विभिन्न रूप—'र' व्यंजन को मात्रा के रूप में भी प्रयोग किया जाता है।

रेफ (र्)—'र' व्यंजन को स्वर रहित दिखाने के लिए इसका प्रयोग व्यंजन के शीर्ष पर रेफ (र्) के रूप में किया जाता है; जैसे— ध् + अ + र् + म् + अ = धर्म, ग् + अ + र् + व् + अ = गर्व आदि।

पदेन (्र/ ्र)

जिन व्यंजनों में / हलन्त पाई होती है, उन्हें स्वर रहित दिखाने के लिए 'र' का प्रयोग उनके पैरों में (्र)होता है; जैसे— क् + र् + अ + म् + अ = क्रम, प् + र् + अ + म् + आ + ण् + अ = प्रमाण आदि।

जिन व्यंजनों में पाई नहीं होती और नीचे से गोल होते हैं, उन्हें स्वर रहित दिखाने के लिए 'र' का प्रयोग (्र) के रूप में होता है; जैसे— ट् + र् + अ + क् + अ = ट्रक, ड् + र् + आ + म् + आ = ड्रामा आदि।

वर्णों का उच्चारण-स्थान

मुख के जिस भाग से जो वर्ण बोला जाता है, वह भाग उस वर्ण का उच्चारण-स्थान कहलाता है। इन उच्चारण-स्थानों के आधार पर व्यंजनों को निम्नलिखित दस वर्गों में रखा जाता है—

1. **कंठ्य** (गले से)—अ, आ, अ:, क, ख, ग, घ, ङ।
2. **तालव्य** (कठोर तालु से)—इ, ई, च, छ, ज, झ, ञ, य, श।
3. **मूर्धन्य** (कठोर तालु के अगले भाग से)—ऋ, ट, ठ, ड, ढ, ण, ड़, ढ़, र, ष।
4. **दंत्य** (दाँतों से)—त, थ, द, ध, न, ल, स।
5. **ओष्ठ्य** (दोनों होंठों से)—उ, ऊ, प, फ, ब, भ, म।

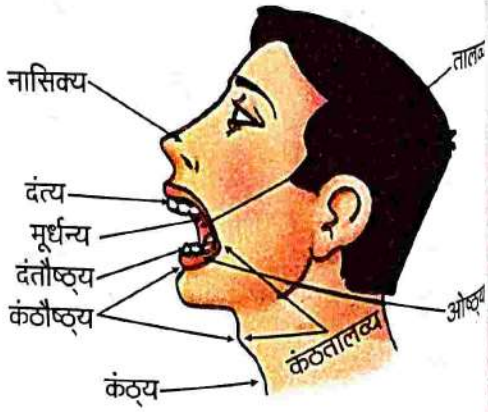

6. **दंतौष्ठ्य** (ऊपरी दाँत व निचले होंठ से)—व।
7. **स्वर-यन्त्र से**—ह, ऑ।
8. **नासिक्य**—अं, ङ, ञ, ण, न, म।
9. **कंठतालव्य** (कंठ और तालु से)—ए, ऐ।
10. **कंठौष्ठ्य** (गले तथा होंठ से)—ओ, औ।

वर्ण-विच्छेद

शब्द के वर्णों को अलग-अलग करना वर्ण-विच्छेद कहलाता है। इसके ज्ञान द्वारा वर्तनी व उच्चारण की अशुद्धियों से बचा जा सकता है; जैसे—

(अ) अमर = अ + म् + अ + र् + अ
(आ) आज़ाद = आ + ज़् + आ + द् + अ
(ऑ) ऑफ़िस = ऑ + फ़् + इ + स् + अ
(इ) दिवस = द् + इ + व् + अ + स् + अ
(ई) वीरता = व् + ई + र् + अ + त् + आ
(उ) कुमार = क् + उ + म् + आ + र् + अ
(ऊ) फूल = फ् + ऊ + ल् + अ
(ऋ) वृथा = व् + ऋ + थ् + आ
(ए) करेला = क् + अ + र् + ए + ल् + आ
(ऐ) मैदान = म् + ऐ + द् + आ + न् + अ
(ओ) खोज = ख् + ओ + ज् + अ
(औ) मौज = म् + औ + ज् + अ
(अं) संत = स् + अं + त् + अ
(अँ) चाँद = च् + आँ + द् + अ
(अः) अंतः = अं + त् + अ + त् + अः
(क्ष) रक्षक = र् + अ + क् + ष् + अ + क् + अ
(त्र) त्राण = त् + र् + आ + ण् + अ
(ज्ञ) ज्ञान = ज् + ञ् + आ + न् + अ
(श्र) श्रमिक = श् + र् + अ + म् + इ + क् + अ
(र्) पर्वत (') = प् + अ + र् + व् + अ + त् + अ
(र) प्राण (⌒) = प् + र् + आ + ण् + अ
(र) ट्रेन (⌒) = ट् + र् + ए + न् + अ
(च्छ) मच्छर = म् + अ + च् + छ् + अ + र् + अ
(न्न) अन्न = अ + न् + न् + अ

1. सही उत्तर पर सही (✓) का चिह्न लगाइए—

(क) वर्णमाला कहते हैं—
(i) ध्वनियों के चिह्नों को ( ) (ii) वर्णों के खण्डों को ( ) (iii) वर्णों के क्रमबद्ध समूह को ( )

(ख) वर्ण भाषा की कैसी इकाई है?
(i) सबसे छोटी ( ) (ii) सबसे बड़ी ( ) (iii) सबसे लम्बी ( )

(ग) हिन्दी में स्पर्श व्यंजनों की संख्या है—
(i) 27 ( ) (ii) 25 ( ) (iii) 4 ( )

(घ) अंतःस्थ व्यंजनों की संख्या है—
(i) 11 ( ) (ii) 4 ( ) (iii) 2 ( )

(ङ) ऊष्म व्यंजन हैं—
(i) य, र, ल, व ( ) (ii) क्ष, त्र, ज्ञ, श्र ( ) (iii) श, ष, स, ह ( )

2. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए—

(क) भाषा के सभी वर्णों के ..... को वर्णमाला कहते हैं।

(ख) वर्ण ध्वनियों के ..... रूप होते हैं।

(ग) जिन स्वरों के उच्चारण में ..... समय लगे ह्रस्व स्वर कहलाते हैं।

(घ) जिन वर्णों का उच्चारण नाक तथा मुख से होता है ..... कहलाते हैं।

(ङ) अं, अः ..... कहलाते हैं।

3. सही कथन के सामने सही (✓) का और गलत कथन के सामने गलत (✗) का चिह्न लगाइए—

(क) वर्ण के टुकड़े हो सकते हैं।

(ख) प्रत्येक भाषा में बहुत-से वर्णों का प्रयोग होता है।

(ग) 'अ' की मात्रा अलग से नहीं लगती।

(घ) उत्क्षिप्त वर्णों का उच्चारण-स्थान कंठ है।

(ङ) ऊष्म व्यंजनों को संघर्षी व्यंजन भी कहा जाता है।

4. निम्नलिखित के वर्ण-विच्छेद कीजिए—

(क) गृहस्थ = ...

(ख) युधिष्ठिर = ...

(ग) लक्ष्मण = ...

(घ) वैज्ञानिक = ...

(ङ) तात्पर्य = ...

5. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए—

(क) वर्ण किसे कहते हैं? इनके भेद उदाहरण सहित लिखिए।

(ख) वर्णमाला में कितने प्रकार के वर्ण हैं? उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।

(ग) स्पर्श व्यंजनों को वर्णमाला के क्रम में लिखिए।

(घ) वर्णमाला में कुल कितने वर्ण हैं? पंचम वर्ण किन्हें कहते हैं?

(ङ) मात्रा किसे कहते हैं? सभी स्वरों की मात्राओं के दो-दो उदाहरण लिखिए।

6. अन्तर स्पष्ट कीजिए—

(क) स्वर और व्यंजन। (ख) ह्रस्व स्वर और दीर्घ स्वर। (ग) अनुस्वार और अनुनासिक।

रचनात्मक गतिविधियाँ

निम्नलिखित वर्णों को मिलाकर लिखिए—

(क) व् + य् + आ + व् + अ + ह् + आ + र् + इ + क् + अ = ...

(ख) स् + आ + प् + त् + आ + ह् + इ + क् + अ = ...

(ग) स् + अ + म् + भ् + अ + व् + अ + त् + अः = ...

(घ) ह् + अँ + स् + अ + म् + उ + ख् + अ = ...

3

शब्द-विचार
Morphology

हम सभी अपने दैनिक जीवन में अपने भावों को बोलकर अथवा लिखकर प्रकट करते हैं। बोलते समय हमारे मुख से कुछ ध्वनियाँ निकलती हैं। इन ध्वनियों के मेल से जो सार्थक इकाई बनती है, उसके द्वारा ही हम अपनी बात दूसरों को समझा पाते हैं। यह सार्थक इकाई ही शब्द कहलाती है;

जैसे—र् + ए + ल् + अ + ग् + आ + ड़् + ई = रेलगाड़ी

प्रत्येक शब्द का अपना अर्थ होता है। व्याकरण में केवल सार्थक शब्दों का ही महत्त्व होता है। निरर्थक शब्दों या ध्वनियों के मेल द्वारा अपनी बात नहीं समझाई जा सकती। परन्तु कई बार सार्थक शब्द के साथ निरर्थक शब्द जुड़कर अर्थ में विशेषता ला देते हैं; जैसे—

कुछ चाय-वाय हो जाए। जरा रूमाल-शूमाल पकड़ा दो।

विशेष—

- वर्णों के मेल से शब्दों की रचना होती है।
- शब्द स्वतन्त्र इकाई होते हैं। इनका अपना अर्थ होता है।
- शब्दों के मेल से वाक्य और वाक्यों के मेल से भाषा बनती है।

शब्दों का वर्गीकरण

हिन्दी भाषा का शब्द-भण्डार विशाल सागर के समान है, जिसमें अन्य भाषाओं की शब्दरूपी नदियाँ आकर मिलती रहती हैं और इसे और समृद्ध बनाती रहती हैं। भाषा कुछ शब्द स्वयं बनाती है तो कुछ शब्द अन्य भाषाओं से ग्रहण करती है। इसी आधार पर शब्दों का वर्गीकरण पाँच भागों में किया गया है—

1. स्रोत/उत्पत्ति के आधार पर शब्द : स्रोत/उत्पत्ति के आधार पर शब्दों के पाँच भेद हैं—

(क) तत्सम शब्द (Sanskrit Words)—संस्कृत से हिन्दी में आए वे शब्द जो हिन्दी में ज्यों के त्यों प्रयुक्त होते हैं, तत्सम शब्द कहलाते हैं; जैसे—अग्नि, आम्र, ओष्ठ, कर्म, अश्रु, काष्ठ, कुम्भकार आदि।

(ख) तद्भव शब्द (Modified Words)—संस्कृत के वे शब्द जिनका हिन्दी तक आते-आते रूप परिवर्तित हो जाता है, तद्भव शब्द कहलाते हैं; जैसे—आग, आम, ओंठ, काम, आँसू, काठ, कुम्हार आदि।

कुछ तत्सम शब्दों के तद्भव रूप इस प्रकार हैं—

तत्सम	तद्भव
अगम्य	अगम
अट्टालिका	अटारी
आम्रचूर्ण	अमचूर
उज्ज्वल	उजला

तत्सम	तद्भव
अंधकार	अँधेरा
अक्षि	आँख
अर्ध	आधा
अंगुली	उँगली

तत्सम	तद्भव
आश्चर्य	अचरज
अंगुष्ठ	अँगूठा
उत्थान	उठान
उच्च	ऊँचा

तत्सम	तद्भव
कर्ण	कान
कुपुत्र	कपूत
कूप	कुआँ
क्षेत्र	खेत
चन्द्र	चाँद
चूर्ण	चून
जिह्वा	जीभ
तृण	तिनका
दन्त	दाँत
दुग्ध	दूध
पिपासा	प्यास

तत्सम	तद्भव
कटु	कड़वा
कार्य	काज
कोकिल	कोयल
ग्रन्थि	गाँठ
चन्द्रिका	चाँदनी
ज्येष्ठ	जेठ
दक्षिण	दक्खिन
दुर्बल	दुबला
नग्न	नंगा
पत्र	पत्ता
दधि	दही

तत्सम	तद्भव
कपाट	किवाड़
काक	कौआ
क्षीर	खीर
ग्राम	गाँव
गृह	घर
चर्म	चाम
छिद्र	छेद
योगी	जोगी
भगिनी	बहन
धूम्र	धुआँ
दण्ड	डण्डा

(ग) देशज शब्द (Native Words)—जो शब्द भारत की विभिन्न बोलियों से हिन्दी में आए हैं या आवश्यकता पड़ने पर गढ़ लिए गए हैं, उन्हें देशज शब्द कहते हैं; जैसे—

कपास	परवल	बाजरा	भिंडी	मिर्च	चिकना
चूड़ी	ताला	मुकुट	डोसा	इडली	साँभर
खचाखच	खटपट	चिड़चिड़ा	खलबली	चटपटा	चाट
चुटकी	छिछला	पटाखा	पापड़	भोंपू	घुड़की
खुरचन	कटकटाना	ठठेरा	झंकार	टंकार	धमक

(घ) विदेशी शब्द (Foreign Words)—विदेशी भाषाओं से हिन्दी में आए शब्द विदेशी शब्द कहलाते हैं; जैसे—

(i) अरबी शब्द—अमर, इरादा, इशारा, ईमान, किताब, एहसान, खत्म, ज़िला, तहसील, नकद, बुनियाद, मज़हब, मुसलमान, मुल्ला, साफ़, हकीम, हलवाई आदि।

(ii) फ़ारसी शब्द—अगर, आबरू, आराम, आफ़त, आमदनी, आवारा, आसमान, आईना, उस्ताद, कारीगर, कुरता, खुश, गन्दा, गवाह, चालाक, जुकाम, तेज़, दफ़्तर, दवा, दरवाज़ा, दीवार, दलाल, पाजामा, बुखार, बदहज़मी, बरामदा, बेकार, मकान, मेहनत, मज़दूर, मुश्किल, साल, समोसा आदि।

(iii) तुर्की शब्द—काबू, कैंची, खंजर, चाकू, चेचक, चिक, चम्मच, तोप, दारोगा, बारूद, बहादुर, लाश आदि।

(iv) अंग्रेज़ी शब्द—अपील, ऑफ़िसर, ऑपरेशन, इंजन, कोट, कोर्ट, जज, पैंट, पेंट, पेंसिल, वोट, नोट, पेन, कॉपी, पेपर, स्कूल, कॉलेज, डॉक्टर, नर्स, हॉस्पिटल, वार्ड, टैक्स, पेंशन, ब्लाउज, बिस्कुट, टॉफी, केक, टोस्ट, चॉकलेट, ट्रेन, बस, मोटर, बैटरी, पुलिस, टेलीफ़ोन, कैमरा, टाई, सीमेण्ट, टायर, आलपिन, कप, प्लेट, थर्मस, जूस, टिकट, कर्फ्यू, कॉलर, कूपन, बोर्ड, टैक्सी, कार, बटन, फ़ाइल, स्विच, प्लग, लैम्प, मशीन आदि।

(v) अन्य भाषाओं के शब्द—बम (डच); मिग, स्पूतनिक (रूसी); चाय, लीची (चीनी); रिक्शा (जापानी); अंग्रेज़, काजू, कारतूस (फ्रेंच); अलमारी, कमरा, कनस्तर, कप्तान, गमला, गोदाम, चाबी, तौलिया, बाल्टी, सन्तरा, साबुन (पुर्तगाली)।

विशेष—हिन्दी में दो भाषाओं से बने कुछ शब्दों का प्रयोग भी किया जा रहा है। ऐसे शब्दों को संकर शब्द कहते हैं।

(ङ) संकर शब्द (Mongrel Words)—दो भाषाओं के मेल से बने शब्द, संकर शब्द कहलाते हैं। जैसे—

फ़ारसी	+	हिन्दी	—	बे	+	डौल	=	बेडौल
हिन्दी	+	अंग्रेज़ी	—	लाठी	+	चार्ज	=	लाठीचार्ज
संस्कृत	+	हिन्दी	—	वर्ष	+	गाँठ	=	वर्षगाँठ
अंग्रेज़ी	+	हिन्दी	—	टिकट	+	घर	=	टिकटघर
अरबी	+	फ़ारसी	—	तहसील	+	दार	=	तहसीलदार
जापानी	+	हिन्दी	—	रिक्शा	+	चालक	=	रिक्शाचालक

2. रचना/बनावट के आधार पर शब्द : रचना/बनावट के आधार पर शब्द तीन प्रकार के होते हैं—

(क) रूढ़ शब्द (Original Words)—वे शब्द जिनके सार्थक खण्ड नहीं किए जा सकते, रूढ़ शब्द कहलाते हैं; जैसे—हाथी, घोड़ा, चाँद, मेज़, छत, द्वार, सेवा, फल आदि।

(ख) यौगिक शब्द (Compound Words)—जब रूढ़ शब्द में कोई अन्य सार्थक शब्द या शब्द-खण्ड जुड़ जाता है तो इस प्रकार बने शब्द को यौगिक शब्द कहते हैं; जैसे—

सह	+	पाठी	=	सहपाठी	राज	+	पुरुष	= राजपुरुष
कृपा	+	आलु	=	कृपालु	स्नान	+	गृह	= स्नानगृह

(ग) योगरूढ़ शब्द (Conventional Compound Words)—जो यौगिक शब्द किसी विशेष अर्थ में रूढ़ हो जाते हैं, उन्हें योगरूढ़ शब्द कहते हैं; जैसे—

योगरूढ़ शब्द	शाब्दिक अर्थ	विशेष अर्थ
जलज	जल में पैदा होने वाला	कमल
दिनकर	दिन करने वाला	सूरज

3. प्रयोग के आधार पर शब्द : भाषा में प्रयोग के आधार पर शब्दों को दो भागों में विभाजित किया गया है—

(क) सामान्य शब्द—वे शब्द जिनको हम सभी दैनिक जीवन में आम बोलचाल के लिए प्रयोग में लाते हैं, उन्हें सामान्य शब्द कहते हैं। इनका अर्थ कोई भी आसानी से समझ लेता है; जैसे—घर, कपड़ा, रोटी, किताब, खाना, पानी, कमरा, नदी आदि।

(ख) तकनीकी शब्द—वे शब्द जिनका सम्बन्ध विभिन्न विषयों, व्यवसायों, विज्ञान आदि से होता है, वे तकनीकी शब्द कहलाते हैं; जैसे—

विषय	प्रशासन	विज्ञान
संज्ञा, सर्वनाम	सचिव (Secretary)	रसायन (Chemical)
विशेषण, क्रिया	कनिष्ठ (Junior)	कोशिका (Cell)
लिंग, वचन	वरिष्ठ (Senior)	जीवाश्म (Fossil)
समुच्चयबोधक	निदेशालय (Directorate)	जीव-विज्ञान (Biology)
विराम-चिह्न	प्रभाग (Unit)	संश्लेषण (Synthesis)

4. अर्थ के आधार पर शब्द

अर्थ के आधार पर शब्दों के कई भेद होते हैं जिनमें से मुख्य इस प्रकार हैं—

(क) पर्यायवाची शब्द
(ख) विलोम शब्द
(ग) अनेकार्थक शब्द
(घ) श्रुतिसम (समरूप) भिन्नार्थक शब्द
(ङ) वाक्यांश के लिए एक शब्द

5. व्याकरणिक प्रकार्य के आधार पर शब्द

व्याकरण की दृष्टि से भाषा में प्रयोग किए जाने वाले शब्दों को दो भागों में बाँटा गया है—

(क) विकारी शब्द—विकार या परिवर्तन। जो शब्द वाक्य में प्रयोग किए जाने पर लिंग, वचन, कारक, काल के कारण अपना रूप बदल लेते हैं, वे विकारी शब्द कहलाते हैं।

इनके चार भेद हैं—

(i) संज्ञा
(ii) सर्वनाम
(iii) विशेषण
(iv) क्रिया

(ख) अविकारी शब्द—अ + विकार यानी जिसमें परिवर्तन न हो। जिन शब्दों के रूप में लिंग, वचन, कारक, काल आदि के कारण कोई परिवर्तन नहीं होता, वे अविकारी शब्द कहलाते हैं। ये मूल रूप में ही प्रयोग किए जाते हैं।

इनके भी चार भेद होते हैं—

(i) क्रियाविशेषण
(ii) सम्बन्धबोधक
(iii) समुच्चयबोधक
(iv) विस्मयादिबोधक

नोट—अर्थ तथा व्याकरणिक प्रकार्य के आधार पर शब्द भेदों के विषय में अगले अध्यायों में विस्तार से चर्चा की गई है।

कुछ करके सीखें

1. सही उत्तर पर सही (✓) का चिह्न लगाइए—

(क) दो या दो से अधिक शब्दों या शब्दांशों से बनने वाले शब्द, जो सामान्य अर्थ प्रकट करें, क्या कहलाते हैं?
(i) रूढ़ (ii) यौगिक (iii) योगरूढ़

(ख) हिन्दी भाषा में प्रयोग होने वाले वे शब्द जो संस्कृत शब्दों से बने हैं, क्या कहलाते हैं?
(i) तत्सम (ii) देशज (iii) तद्भव

(ग) व्याकरणिक प्रकार्य के आधार पर शब्द के भेदों के लिए सही विकल्प है—
(i) सामान्य, तकनीकी (ii) विकारी, अविकारी (iii) पर्यायवाची, विलोम

2. निम्नलिखित शब्दों में तत्सम, तद्भव, देशज और विदेशी शब्द छाँटकर उनकी अलग-अलग सूची बनाइए—

सन्तरा	झंकार	कोयल	अश्रु	चाट	खीर	दन्त	छिद्र	ग्रन्थि
आम्र	खेत	ठठेरा	चम्मच	मज़दूर	इडली	दूध	क्षेत्र	अगम्य
मिर्च	किताब	आग	ताला	दफ्तर	पेंसिल	चूड़ी	टिकट	

तत्सम शब्द — .....

तद्भव शब्द — .....

देशज शब्द — .....

विदेशी शब्द — .....

3. निम्नलिखित शब्दों में से रूढ़, यौगिक तथा योगरूढ़ शब्द छाँटकर उचित स्थान पर लिखिए—

लम्बोदर दीपावली पाठशाला दशानन सहपाठी घर कमल फल चतुर्भुज मुख विद्यार्थी निशाचर

रूढ़	यौगिक	योगरूढ़
.....	.....	.....
.....	.....	.....
.....	.....	.....
.....	.....	.....

4. रिक्त स्थानों की पूर्ति उचित शब्दों से कीजिए—

(क) जो यौगिक शब्द विशेष अर्थ का बोध कराते हैं, उन्हें ..... कहते हैं। *(रूढ़, योगरूढ़)*

(ख) विद्यालय ..... शब्द है। *(यौगिक, रूढ़)*

(ग) विकारी शब्दों का रूप ..... है। *(बदलता, नहीं बदलता)*

(घ) संस्कृत के वे शब्द, जिनका प्रयोग हिन्दी में होता है, ... शब्द कहलाते हैं। *(तद्भव, तत्सम)*

5. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए—

(क) शब्दों का वर्गीकरण किन आधारों पर किया जाता है?

(ख) देशज शब्द किन्हें कहते हैं?

(ग) यौगिक और योगरूढ़ शब्दों में क्या अन्तर है?

(घ) विकारी और अविकारी शब्दों में क्या अन्तर है?

रचनात्मक गतिविधियाँ

1. अन्तिम वर्णों से नया शब्द बनाकर शब्द-लड़ी पूरी कीजिए—

बालक ....

2. दिए गए वर्णों में उचित मात्रा लगाकर कुछ ऐसी चीज़ों के नाम लिखिए जो आपके घर में हों—

ड़	क	प	ख	स	फ	म	ज	ट	व	ल	न	ज

.....

.....

प्रत्येक भाषा में प्रयुक्त होने वाले समस्त शब्दों के समूह को उस भाषा का शब्द-भण्डार कहते हैं। जिस भाषा का शब्द-भण्डार जितना विस्तृत होगा, वह भाषा उतनी ही समृद्ध होगी। हिन्दी भाषा का अपना अपार शब्द-भण्डार है। नए-नए आविष्कार होने से हिन्दी भाषा में भी जहाँ एक ओर नए शब्द आ गए हैं; जैसे—रेडियो, फ्रिज, मोबाइल, कम्प्यूटर आदि; वहीं दूसरी ओर कुछ शब्द प्रयोग से बाहर हो गए हैं; जैसे—छटाँक, सेर, धड़ी, मन, माशा, तोला, गज, फर्लांग, मील आदि।

अब नीचे विभिन्न शब्दों की सूची दी जा रही है। इन्हें पढ़िए, समझिए और अपने शब्द-ज्ञान का विस्तार कीजिए—

1. पर्यायवाची शब्द
2. विलोम शब्द
3. अनेकार्थक शब्द
4. श्रुतिसम (समरूप) भिन्नार्थक शब्द
5. वाक्यांश के लिए एक शब्द

1. पर्यायवाची शब्द

जो शब्द एक-दूसरे से मिलता-जुलता अर्थ प्रदान करते हैं, वे पर्यायवाची या समानार्थी कहे जाते हैं।

नीचे कुछ शब्द और उनके पर्याय दिए गए हैं। इन्हें पढ़िए और समझिए—

अमृत	अमिय, सुधा, सोम, सोमरस, पीयूष।
अग्नि	अनल, आग, पावक, ज्वाला, हुताशन।
आँख	नेत्र, नयन,चक्षु, दृग, लोचन।
ईश्वर	ईश, प्रभु, जगदीश, परमेश्वर, परमात्मा, भगवान।
कपड़ा	वस्त्र, वसन, पट, चीर, अम्बर।
कमल	सरोज, सरसिज, नीरज, जलज, अम्बुज, पंकज, अरविन्द, राजीव।
कृष्ण	गोपाल, गिरिधर, केशव, श्याम, वासुदेव, माधव, मुरलीधर, मोहन।
कोयल	कोकिला, काकपाली, श्यामा, वसन्तदूत, पिक।
खग	पक्षी, पखेरू, चिड़िया, नभचर, विहंग, द्विज।
गंगा	देवनदी, भागीरथी, मन्दाकिनी, सुरसरि, जाह्नवी, विष्णुपदी, नदीश्वर।
घर	गृह, निवास, निकेतन, आलय, आवास, आगार, भवन, सदन, धाम, शाला।
चन्द्र	राकेश, रजनीश, सुधाकर, सोम, शशि, चन्द्रमा, मयंक, हिमांशु, इन्दु।
धरती	धरा, धरिणी, वसुधा, पृथ्वी, भूमि, अचला, अवनि, वसुन्धरा।
नदी	सरित, सरिता, तटिनी, तरंगिणी, आपगा, सलिला, पयस्विनी, निर्झरिणी।
पवन	वायु, वात, बयार, अनिल, समीर, हवा, मारुत।

पेड़	वृक्ष, विटप, तरु, द्रुम, पादप।
बन्दर	कपि, वानर, मर्कट, हरि, शाखामृग।
बादल	जलद, मेघ, नीरद, घन, अम्बुद, वारिद, पयोद।
माता	माँ, अम्मा, मैया, जननी, जन्मदात्री।
मित्र	साथी, सखा, सहचर, सुहृद, स्वजन, मीत।
सरस्वती	शारदा, वागीश्वरी, वीणावादिनी, वीणापाणि, भारती, हंसवाहिनी, ब्राह्मी।
समुद्र	सागर, सिन्धु, नीरनिधि, रत्नाकर, उदधि, वारिधि।

2. विलोम शब्द

एक-दूसरे शब्दों के विपरीत अर्थ का बोध कराने वाले शब्द विलोम शब्द कहे जाते हैं।

यहाँ कुछ शब्द और उनके विलोम दिए गए हैं—

शब्द	विलोम शब्द
अन्त	आदि/आरम्भ
अर्थ	अनर्थ
आकाश	पाताल
उन्नति	अवनति
कृतज्ञ	कृतघ्न
गुण	अवगुण
निरक्षर	साक्षर
निर्गुण	सगुण
प्रत्यक्ष	परोक्ष
पाप	पुण्य
जीवन	मरण
मितव्यय	अपव्यय
सजीव	निर्जीव
सूक्ष्म	स्थूल
सार्थक	निरर्थक
विजय	पराजय
रक्षक	भक्षक

शब्द	विलोम शब्द
अन्धकार	प्रकाश
आदान	प्रदान
उत्तीर्ण	अनुत्तीर्ण
उद्यम	आलस्य
कुसंग	सत्संग
गुरु	शिष्य, लघु
निर्बल	सबल
नवीन	प्राचीन
शोक	हर्ष
वरदान	शाप
प्रशंसा	निन्दा
परतन्त्र	स्वतन्त्र
सौभाग्य	दुर्भाग्य
स्वार्थ	परमार्थ
धनी	निर्धन
लाभ	हानि
आदर	निरादर

3. अनेकार्थक शब्द

'अनेकार्थक' शब्द का अभिप्राय ऐसे शब्द से है जिसके एक-से-अधिक अर्थ होते हैं।

अनेकार्थक शब्द के कुछ उदाहरण नीचे दिए गए हैं—

अंक	—	संख्या, गोद, भाग्य, चिह्न, नाटक का एक भाग।
अर्थ	—	धन, आकाश, प्रयोजन, व्याख्या, ऐश्वर्य।
अर्क	—	काढ़ा, सूर्य, आक का पौधा।
अक्षर	—	कभी नष्ट न होने वाला, ध्वनि, वर्ण, ब्रह्मा, विष्णु, परमात्मा, धर्म, तप।
आम	—	एक फल का नाम, साधारण।
और	—	तथा, अन्य, अधिक सम्बन्धबोधक शब्द।
उत्तर	—	बाद का, जवाब, उत्तर दिशा।
कल	—	आने वाला दिन, बीता हुआ दिन, मशीन।
कर	—	ओला, लम्बाई की एक माप, हाथ, टैक्स, किरण, हाथी की सूँड़।
कनक	—	सोना, धतूरा, गेहूँ।
कुल	—	सब, समस्त, वंश।
गति	—	चाल, दशा (हालत), मोक्ष।
गुरु	—	ज्ञान देने वाला, शिक्षक, दो मात्राओं वाला अक्षर, भारी।
घट	—	शरीर, घड़ा, हृदय, कम होना।
जड़	—	मूर्ख, अचेतन, मूल।
दल	—	समूह, सेना, पत्ता, पक्ष।
दण्ड	—	सज़ा, डण्डा, एक व्यायाम।
नग	—	नगीना, रत्न, वृक्ष, पर्वत, सूर्य।
नाक	—	नासिका (चेहरे का एक अंग), स्वर्ग, सम्मान।
पद	—	स्थान, पदवी, पैर, छन्द का एक चरण, भाग।
पत्र	—	पत्ता, चिट्ठी, किसी धातु का एक पतरा, पंख।
पानी	—	जल, लाज, धार, आब, बल।
वर्ण	—	अक्षर, रंग, हिन्दू धर्म में कार्य के आधार पर किया गया समाज का एक वर्गीकरण।
हरि	—	सूर्य, कृष्ण, इन्द्र, सिंह, सर्प, विष्णु, बन्दर।
हार	—	माला, एक आभूषण का नाम (गले में पहनने हेतु), पराजय।

4. श्रुतिसम (समरूप) भिन्नार्थक शब्द

वर्तनी में भिन्नता रहते हुए भी कुछ शब्दों में उच्चारण का इतना कम अन्तर होता है कि वे समान सुनाई देते हैं, परन्तु उनके अर्थ सर्वथा भिन्न होते हैं, ऐसे शब्द श्रुतिसम (समरूप) भिन्नार्थक शब्द कहलाते हैं।

	शब्द	अर्थ		शब्द	अर्थ
1.	कूल	किनारा	2.	आचार	व्यवहार
	कुल	वंश		अचार	खाने की वस्तु
3.	अवधि	समय	4.	अनल	अग्नि
	अवधी	एक भाषा का नाम		अनिल	वायु

	शब्द	अर्थ		शब्द	अर्थ
5.	कर्म	काम	6.	ग्रह	नक्षत्र
	क्रम	सिलसिला		गृह	घर
7.	तरणि	सूर्य	8.	चीर	वस्त्र
	तरणी	नौका		चिर	बहुत
9.	जलज	कमल	10.	तरंग	लहर
	जलद	बादल		तुरंग	घोड़ा
11.	दिन	दिवस	12.	बैर	शत्रु
	दीन	निर्धन		बेर	एक फल
13.	भवन	घर	14.	नीर	जल
	भुवन	संसार		नीड़	घोंसला
15.	परिणाम	नतीजा	16.	वात	वायु
	परिमाण	नाप-तौल		बात	वार्ता
17.	वसन	वस्त्र	18.	सूत	सारथि
	व्यसन	बुरी आदत		सुत	पुत्र

5. वाक्यांश के लिए एक शब्द

कई शब्द ऐसे होते हैं जो किसी वाक्यांश (अनेक शब्दों) के स्थान पर आते हैं। इनके ज्ञान से हमें अपनी बात को कम-से-कम शब्दों में कहने की क्षमता प्राप्त होती है।

वाक्यांश के लिए एक शब्द के कुछ उदाहरण नीचे दिए गए हैं—

1. जो व्यर्थ खर्च करता हो	अपव्ययी
2. जिसके माता-पिता की मृत्यु हो गई हो	अनाथ
3. जो सबसे आगे (पहले) गिने जाने योग्य हो	अग्रगण्य
4. जो कम जानता हो	अल्पज्ञ
5. जिसका कोई मूल्य न हो	अमूल्य
6. जिसे जीता न जा सके	अजेय
7. जिस पर विश्वास न किया जा सके	अविश्वसनीय
8. जिसके आने की तिथि निश्चित न हो	अतिथि
9. जो अनुकरण के योग्य हो	अनुकरणीय
10. जो बीत गया हो	अतीत
11. इतिहास से सम्बन्धित	ऐतिहासिक
12. जो किसी के उपकार को न माने	कृतघ्न

13. जो योग्यता व उत्साहपूर्वक कर्म करता हो — कर्मठ
14. वर्षा के चार माह — चौमासा
15. जानकारी प्राप्त करने की इच्छा — जिज्ञासा
16. जिसकी इन्द्रियाँ वश में हों — जितेन्द्रिय
17. दूर तक की सोचने वाला — दूरदर्शी
18. पति और पत्नी — दम्पती
19. जिसका कोई आधार न हो — निराधार
20. जो ईश्वर को न माने — नास्तिक
21. जो आकाश में विचरण करे — नभचर
22. पन्द्रह दिन में एक बार होने वाला — पाक्षिक
23. एक माह से सम्बन्धित — मासिक
24. कम बातें करने वाला — मितभाषी
25. जो विश्वास के योग्य है — विश्वसनीय
26. अधिक बोलने वाला — वाचाल
27. अपने ही स्वार्थ का ध्यान रखने वाला — स्वार्थी
28. जो पढ़ना-लिखना जानता हो — साक्षर
29. जो सब जगह हो — सर्वव्यापी
30. स्मरण करने योग्य — स्मरणीय
31. जो शाक-सब्जी खाए — शाकाहारी

1. **सही उत्तर पर सही (✓) का चिह्न लगाइए—**

(क) 'कमल' शब्द के पर्यायवाची शब्द हैं—

(i) तीर, शर, विशिख (ii) मेघ, बादल, जल

(iii) पंकज, नीरज, सरोज, जलज

(ख) शशि, मयंक, राकेश, हिमांशु पर्यायवाची शब्द हैं—

(i) पर्वत के (ii) चन्द्रमा के (iii) आकाश के

(ग) 'कर' शब्द का सही अनेकार्थी रूप है—

(i) हाथ, काम, रुपया (ii) टैक्स, काम, हाथ (iii) हाथ, किरण, टैक्स

(घ) जो शाक-सब्जी खाए—

(i) मांसाहारी (ii) शाकाहारी (iii) अल्पाहारी

2. रिक्त स्थानों में कोष्ठक में दिए गए शब्द का उपयुक्त पर्यायवाची शब्द भरिए—

(क) कीचड़ में ..... खिलता है। *(पंकज)*

(ख) ..... आकाश में विचरण करते हैं। *(पखेरू)*

(ग) कौरवों ने द्रौपदी का भरी सभा में ..... हरण करने का प्रयास किया। *(वस्त्र)*

(घ) विवाह के अन्तर्गत वर-वधू पवित्र ..... के फेरे लेते हैं। *(आग)*

3. निम्नलिखित वाक्यों में प्रयुक्त विलोम शब्दों को रेखांकित कीजिए—

(क) गाँव में अधिकतर लोग निरक्षर होते हैं और शहरों में साक्षर, ऐसा सोचना गलत है।

(ख) सभा में कुछ लोग मेरे परिचित थे, किन्तु अपनी बातों से मैंने अपरिचित लोगों को भी परिचित बना लिया।

(ग) सत्य की हमेशा जय होती है और असत्य की पराजय।

(घ) समुद्र में जब ज्वार-भाटा आता है तब सभी सजीव और निर्जीव वस्तुएँ अपनी जगह से हिल जाती हैं।

4. निम्नलिखित वाक्यों में रंगीन शब्दों के विलोम शब्द लिखकर रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए—

(क) आज देश के रक्षक ही ..... बन गए हैं।

(ख) व्यापार में कभी लाभ होता है तो कभी ..... ।

(ग) हमें बड़ों का हमेशा ..... करना चाहिए न कि निरादर।

(घ) सज्जन की सभी ..... करते हैं, जबकि दुर्जन की निन्दा।

(ङ) हमारी कक्षा में पचास बच्चे उत्तीर्ण हुए और दो ..... ।

5. निम्नलिखित वाक्यों में प्रयुक्त रंगीन शब्दों के अर्थ, वाक्यों के सामने दिए गए रिक्त स्थानों में लिखिए—

(क) उसका वजन घट गया। .....

स्त्रियाँ कुएँ से घट भरकर लाईं। .....

(ख) उसके पिता जी उच्च पद पर कार्यरत हैं। .....

व्याकरण में पद विचार पर भी ध्यान दिया जाता है। .....

(ग) राम और श्याम दोनों सगे भाई हैं। .....

मुझे और हलवा खाना है। .....

(घ) यह रास्ता आम लोगों के लिए नहीं है। .....

आम के दाम अचानक बढ़ गए। .....

6. निम्नलिखित शब्द-समूहों या वाक्यांशों के लिए दिए गए एक शब्द तक रेखा खींचकर जोड़े बनाइए—

(क)	जिसे पढ़ा न गया हो	(i)	सर्वव्यापी
(ख)	जिसमें जानने की इच्छा हो	(ii)	निराकार
(ग)	जो बीत गया हो	(iii)	जिज्ञासु
(घ)	जो सब जगह हो	(iv)	अतीत
(ङ)	जिसका आकार न हो	(v)	अपठित

5

संज्ञा
Noun

इस संसार में सभी का कोई-न-कोई नाम होता है। जिस शब्द से किसी वस्तु, प्राणी, स्थान या भाव के नाम का बोध होता है, उसे **संज्ञा** कहा जाता है। उदाहरणार्थ—

(i) सर्वपल्ली राधाकृष्णन् भारत के राष्ट्रपति थे।

(ii) दिल्ली हमारे देश की राजधानी है।

(iii) ताजमहल अपनी बनावट और सुन्दरता के लिए संसार के आश्चर्यों में गिना जाता है।

(iv) हमने बाज़ार से कुछ पुस्तकें, कॉपियाँ और पेंसिलें खरीदीं।

ऊपर के वाक्यों में रंगीन शब्दों पर ध्यान दीजिए—

- सर्वपल्ली राधाकृष्णन, राष्ट्रपति —व्यक्तियों के नाम हैं।
- भारत, दिल्ली, देश, राजधानी, ताजमहल, संसार, बाज़ार —स्थानों के नाम हैं।
- पुस्तकें, कापियाँ, पेंसिलें —वस्तुओं के नाम हैं।
- बनावट, सुन्दरता, आश्चर्यों —भावों के नाम हैं।

अत: ये सभी शब्द संज्ञा हैं।

संज्ञा के भेद

संज्ञा के निम्नलिखित तीन प्रमुख भेद हैं—

1. व्यक्तिवाचक संज्ञा

ऐसे शब्द जो किसी विशेष प्राणी, स्थान या वस्तु का बोध कराते हैं, व्यक्तिवाचक संज्ञा कहलाते हैं।

उदाहरणार्थ—

(i) दिल्ली में स्थित बहाई कमल मन्दिर दर्शनीय है।

(ii) गंगा हिमालय से निकलती है।

(iii) मुरारी बापू ने श्रीरामचरितमानस की चौपाइयाँ पढ़कर सुनाईं।

उपर्युक्त वाक्यों में प्रयुक्त 'दिल्ली', 'बहाई कमल मन्दिर', 'हिमालय', 'गंगा', 'मुरारी बापू', 'श्रीरामचरितमानस' सभी संज्ञा शब्द किसी विशेष व्यक्ति, स्थान या वस्तु का बोध करा रहे हैं। ये सभी व्यक्तिवाचक संज्ञा हैं।

2. जातिवाचक संज्ञा

ऐसे शब्द जो एक ही प्रकार के या एक-जैसे प्राणियों, वस्तुओं, स्थानों आदि का बोध कराते हैं, जातिवाचक संज्ञा कहलाते हैं। उदाहरणार्थ—

(i) कुछ बच्चे पार्क में खेल रहे हैं।

(ii) अध्यापिका छात्राओं को पढ़ा रही हैं।

(iii) स्टेशन पर पहुँचने से पहले ही गाड़ी छूट चुकी थी।

उपर्युक्त वाक्यों में प्रयुक्त 'बच्चे', 'पार्क', 'अध्यापिका', 'छात्राओं', 'स्टेशन', 'गाड़ी' सभी संज्ञा शब्द किसी एक ही प्रकार या एक-जैसे व्यक्तियों, वस्तुओं या स्थानों का बोध करा रहे हैं। ये विशेष व्यक्ति, वस्तु या स्थान के नाम का बोध नहीं कराते। ये सभी जातिवाचक संज्ञा हैं।

3. भाववाचक संज्ञा

जिन संज्ञा शब्दों से किसी व्यक्ति/वस्तु के गुण-दोष, भाव-दशा, अवस्था-स्वभाव आदि का बोध होता है, उन्हें **भाववाचक संज्ञा** कहा जाता है। उदाहरणार्थ—

(i) इस पर्वत की ऊँचाई बहुत है। (ii) भारतीय सैनिक वीरता से लड़े और उन्होंने विजय पाई।

(iii) तरबूज में बहुत मिठास है।

उपर्युक्त वाक्यों में प्रयुक्त 'ऊँचाई', 'वीरता', 'विजय', 'मिठास' ऐसे संज्ञा शब्द हैं जो व्यक्ति, वस्तु आदि के गुण, अवस्था आदि का बोध करा रहे हैं। ये सभी भाववाचक संज्ञा हैं।

कुछ विद्वान अंग्रेजी व्याकरण के अनुसार संज्ञा के दो भेद और मानते हैं—

(क) द्रव्यवाचक संज्ञा

कुछ धातुओं तथा द्रव्यों से तरह-तरह की चीज़ें बनाई जा सकती हैं। ऐसी संज्ञाएँ जो किसी धातु या द्रव्य का बोध कराती हैं, **द्रव्यवाचक संज्ञा** मानी जाती हैं। उदाहरणार्थ—

(i) रमन ने कंचन के लिए सोने का हार खरीदा। (ii) मैं रोज़ एक गिलास दूध पीता हूँ।

उपर्युक्त वाक्यों में प्रयुक्त 'सोने का हार' व 'दूध' ऐसे संज्ञा शब्द हैं जो किसी धातु अथवा द्रव्य का बोध कराते हैं। ये द्रव्यवाचक संज्ञा हैं।

(ख) समूहवाचक संज्ञा

ऐसे शब्द जो किसी समूह या समुदाय के लिए प्रयुक्त किए जाते हैं, **समूहवाचक संज्ञा** के नाम से जाने जाते हैं। उदाहरणार्थ—

(i) अब मैदान में हमारी टीम फुटबॉल खेल रही है। (ii) नौचन्दी मैदान में लगे मेले में बहुत भीड़ थी।

उपर्युक्त वाक्यों में प्रयुक्त 'टीम' व 'भीड़' ऐसे संज्ञा शब्द हैं जो क्रमश: खिलाड़ियों और लोगों के समूह का बोध कराते हैं। ये समूहवाचक संज्ञा हैं।

संज्ञाओं के रूप में परिवर्तन

प्रयोग के अनुसार कुछ संज्ञाओं के रूप में परिवर्तन आ जाता है।

1. व्यक्तिवाचक संज्ञा का जातिवाचक संज्ञा के रूप में प्रयोग

कभी-कभी विशेष सन्दर्भ में व्यक्तिवाचक संज्ञा का प्रयोग किसी विशेष व्यक्ति के लिए नहीं किया जाता, बल्कि उस व्यक्ति के गुण, दोष, स्वभाव, कार्य आदि का बोध कराने के लिए किया जाता है तो वह व्यक्तिवाचक संज्ञा के स्थान पर **जातिवाचक संज्ञा** बन जाती है; जैसे—

व्यक्तिवाचक संज्ञा शब्द	जातिवाचक संज्ञा के रूप में प्रयोग
दधीचि	आज देश को दधीचियों की जरूरत है।
जयचन्द	जयचन्दों के कारण देश गुलाम हुआ।

पहले वाक्य में दधीचियों का प्रयोग 'दूसरों के हित में प्राण त्यागने वालों' के लिए हुआ है, दूसरे वाक्य में जयचन्दों का प्रयोग 'देशद्रोहियों' के लिए हुआ है।

2. जातिवाचक संज्ञा का व्यक्तिवाचक संज्ञा के रूप में प्रयोग

जातिवाचक संज्ञा एक ही प्रकार के सभी प्राणियों, वस्तुओं आदि का बोध कराती है; किन्तु जब कभी जातिवाचक संज्ञा किसी व्यक्ति विशेष का बोध कराने के लिए प्रयोग की जाती है तो वह व्यक्तिवाचक संज्ञा कहलाती है; जैसे—

जातिवाचक संज्ञा	व्यक्तिवाचक संज्ञा के रूप में प्रयोग
चाचा	बच्चों के प्यारे चाचा भारत के प्रथम प्रधानमन्त्री थे।
नेताजी	नेताजी ने कहा था, "तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आज़ादी दूँगा।"

उपर्युक्त वाक्यों में प्रयुक्त 'चाचा' और 'नेताजी' विशेष व्यक्तियों की ओर इंगित करते हैं; जैसे—चाचा (नेहरू जी) तथा नेताजी (सुभाषचन्द्र बोस)। इसलिए इन वाक्यों में ये सभी शब्द व्यक्तिवाचक संज्ञाओं के रूप में प्रयोग किए गए हैं।

3. भाववाचक संज्ञा का जातिवाचक संज्ञा के रूप में प्रयोग

भाववाचक संज्ञाएँ सदा एकवचन में प्रयोग की जाती हैं; जब कभी ये संज्ञाएँ बहुवचन के रूप में प्रयुक्त होती हैं, तो फिर ये भाववाचक संज्ञा नहीं रहतीं, जातिवाचक संज्ञाएँ बन जाती हैं; जैसे—

भाववाचक शब्द	जातिवाचक संज्ञा के रूप में प्रयोग
बुराई	हमें बुराइयों से बचना चाहिए।
प्रार्थना	प्रार्थनाएँ कभी बेकार नहीं जातीं।

उपर्युक्त वाक्यों में प्रयुक्त 'बुराइयों' और 'प्रार्थनाएँ' क्रमशः 'बुराई' और 'प्रार्थना' भाववाचक संज्ञाओं के बदले हुए (बहुवचन) रूप हैं। अतः ये शब्द जातिवाचक संज्ञा के रूप में प्रयुक्त किए गए हैं।

भाववाचक संज्ञाओं की रचना

भाववाचक संज्ञाओं को दो वर्गों में विभक्त किया जा सकता है—

1. ऐसी संज्ञाएँ जो मूल रूप में ही भाववाचक संज्ञाएँ हैं; जैसे—दया, क्रोध, हानि, लाभ, दुःख, लज्जा आदि।

(क) जातिवाचक/व्यक्तिवाचक संज्ञाओं से भाववाचक संज्ञाएँ बनाना

जातिवाचक	भाववाचक	जातिवाचक	भाववाचक
मित्र	मित्रता	शत्रु	शत्रुता
मनुष्य	मनुष्यत्व	शिशु	शैशव
बच्चा	बचपन	नेता	नेतृत्व
पुरुष	पौरुष/पुरुषत्व	बूढ़ा	बुढ़ापा
लड़का	लड़कपन	डाकू	डकैती
दोस्त	दोस्ती	मार्क्स	मार्क्सवाद
मज़दूर	मज़दूरी	इंसान	इंसानियत

(ख) सर्वनामों से भाववाचक संज्ञाएँ बनाना

सर्वनाम	भाववाचक
अपना	अपनापन, अपनत्व
निज	निजत्व, निजता
अहं	अहंकार

सर्वनाम	भाववाचक
पराया	परायापन
स्व	स्वत्व
मम	ममत्व

(ग) विशेषणों से भाववाचक संज्ञाएँ बनाना

विशेषण	भाववाचक
स्वस्थ	स्वास्थ्य
अच्छा	अच्छाई
वीर	वीरता
ऊँचा	ऊँचाई
गर्म	गर्मी
उचित	औचित्य

विशेषण	भाववाचक
बुरा	बुराई
कमज़ोर	कमज़ोरी
कायर	कायरता
ठण्डा	ठण्डक
मधुर	मधुरता, माधुर्य
लघु	लघुता

(घ) क्रियाओं से भाववाचक संज्ञाएँ बनाना

क्रिया	भाववाचक
चढ़ना	चढ़ाई
सजना	सजावट
आना	आगमन
बहना	बहाव
जागना	जागरण
मुस्कराना	मुस्कराहट
धमकाना	धमकी

क्रिया	भाववाचक
गिरना	गिरावट
पढ़ना	पढ़ाई
हँसना	हँसी
दौड़ना	दौड़
मिलाना	मिलन, मिलावट
फिसलना	फिसलन
खोजना	खोज

(ङ) अव्ययों से भाववाचक संज्ञाएँ बनाना

अव्यय	भाववाचक
जल्द	जल्दबाज़ी
दूर	दूरी
समीप	समीपता, सामीप्य
नीचे	निचाई

अव्यय	भाववाचक
मन्द	मन्दी
शीघ्र	शीघ्रता
धिक्	धिक्कार
वाह	वाहवाही

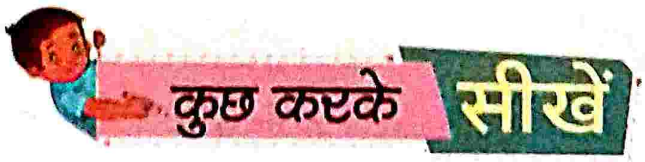

1. सही उत्तर पर सही (✓) का चिह्न लगाइए—

(क) वे संज्ञा शब्द जो किसी समूह अथवा समुदाय का बोध कराते हैं, कहलाते हैं—

(i) भाववाचक संज्ञा ( ) (ii) द्रव्यवाचक संज्ञा ( ) (iii) समूहवाचक संज्ञा ( )

(ख) वे संज्ञा शब्द जो किसी गुण, दशा अथवा भाव का बोध कराते हैं, कहलाते हैं—
(i) व्यक्तिवाचक संज्ञा (ii) भाववाचक संज्ञा (iii) जातिवाचक संज्ञा

(ग) वे संज्ञा शब्द जिनसे किसी द्रव्य, पदार्थ अथवा धातु का बोध होता है, कहलाते हैं—
(i) द्रव्यवाचक संज्ञा (ii) व्यक्तिवाचक संज्ञा (iii) भाववाचक संज्ञा

(घ) भाववाचक संज्ञा का उदाहरण है—
(i) बचपन (ii) महल (iii) रामायण

2. निम्नलिखित संज्ञा शब्दों को उनके उचित कॉलम में पहुँचाइए—

महाभारत	*गिलहरी*	*बचपन*	*भीड़*	*पेट्रोल*	*ध्यानचन्द*	*फूल*
एकता	*इंसान*	*वीरता*	*पर्वत*	*जयपुर*	*बुढ़ापा*	*कक्षा*
दूध	*सेना*	*चाँदी*	*गणेश*	*टीम*	*उत्साह*	*सोना*

व्यक्तिवाचक	जातिवाचक	भाववाचक	समूहवाचक	द्रव्यवाचक
.....	.....	.....	.....	.....
.....	.....	.....	.....	.....
.....	.....	.....	.....	.....

3. सही कथन के सामने सही (✓) का और गलत कथन के सामने गलत (✗) का चिह्न लगाइए—

(क) भाववाचक संज्ञाओं की रचना केवल संज्ञा, सर्वनाम शब्दों से होती है।

(ख) 'मधुर' विशेषण शब्द से 'माधुर्य' भाववाचक संज्ञा बनी है।

(ग) प्रयोग के अनुसार कुछ संज्ञाओं के रूप में परिवर्तन आ जाता है।

(घ) 'ईमानदारी', 'बुढ़ापा' शब्द व्यक्तिवाचक संज्ञाएँ हैं।

(ङ) यदि विशेषण जाति या वर्ग का बोध कराने लगें तो वे जातिवाचक संज्ञा कहलाते हैं।

4. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए—

(क) संज्ञा से आप क्या समझते हैं? उदाहरण देकर स्पष्ट कीजिए।

(ख) संज्ञा के कितने भेद होते हैं? प्रत्येक के दो-दो उदाहरण दीजिए।

(ग) व्यक्तिवाचक व जातिवाचक संज्ञा में अन्तर लिखिए।

(घ) द्रव्यवाचक व समूहवाचक संज्ञाएँ हमें किन बातों का बोध कराती हैं?

(ङ) भाववाचक संज्ञा का निर्माण कितने प्रकार के शब्दों से किया जा सकता है?

रचनात्मक गतिविधियाँ

- ऐसे दो-दो उदाहरण दीजिए, जब—

(क) व्यक्तिवाचक संज्ञा का प्रयोग जातिवाचक संज्ञा के रूप में हुआ हो।

(ख) जातिवाचक संज्ञा का प्रयोग व्यक्तिवाचक संज्ञा के रूप में हुआ हो।

(ग) भाववाचक संज्ञा का प्रयोग जातिवाचक संज्ञा के रूप में हुआ हो।

6 संज्ञा के विकार : लिंग, वचन और कारक

Declension of Noun : Gender, Number and Case

संज्ञा एक विकारी शब्द है। संज्ञा शब्दों का प्रयोग करते समय इनके रूपों में अनेक कारणों से विकार या परिवर्तन होता है। लिंग, वचन और कारक संज्ञा के विकारक तत्त्व हैं।

1. लिंग (Gender)

लिंग शब्द का शाब्दिक अर्थ है—'चिह्न' या 'पहचान' का साधन। इस प्रकार, लिंग शब्द का प्रयोग पुरुष जाति या स्त्री जाति की पहचान के लिए किया जाता है। अत: शब्दों का वह रूप जिससे पुरुष अथवा स्त्री जाति के होने का बोध होता है, लिंग कहलाता है।

लिंग के भेद

हिन्दी भाषा में लिंग के दो भेद होते हैं—1. पुल्लिग और 2. स्त्रीलिंग।

1. पुल्लिग

शब्द के जिस रूप से पुरुष जाति का बोध होता है, उसे पुल्लिग कहते हैं; जैसे—छात्र, बन्दर, मुर्गा, पिता, अध्यापक, चाचा, पहिया, यौवन, हवन आदि।

2. स्त्रीलिंग

शब्द के जिस रूप से स्त्री जाति का बोध होता है, उसे स्त्रीलिंग कहते हैं; जैसे—छात्रा, बन्दरिया, मुर्गी, माता, अध्यापिका, चाची, तस्वीर, दौलत, चिंगारी आदि।

लिंग की पहचान

संज्ञा शब्दों के दो वर्ग बनाए जा सकते हैं—(क) प्राणिवाचक संज्ञा शब्द, (ख) अप्राणिवाचक संज्ञा शब्द।

(क) प्राणिवाचक संज्ञाओं के लिंग की पहचान—

- प्राणिवाचक संज्ञाओं में लिंग की पहचान शारीरिक संरचना से हो जाती है। लड़का, आदमी, शेर, चीता, कौआ, घोड़ा, गधा आदि की शारीरिक संरचना से इनके पुल्लिग होने का पता चलता है। चिड़िया, गाय, स्त्री, लड़की, घोड़ी, गधी, मछली आदि की शारीरिक संरचना से इनके स्त्रीलिंग होने का पता चलता है।
- सदा पुल्लिग रहने वाले शब्द हैं—कौआ, गीदड़, उल्लू, बगुला, जिराफ़, गैंडा, मच्छर, लंगूर, खरगोश आदि।
- सदा स्त्रीलिंग रहने वाले शब्द हैं—कोयल, गिलहरी, भेड़, चमगादड़, मक्खी, मैना, मछली आदि।
- पदनाम सदैव पुल्लिग होते हैं, भले ही उन पदों पर स्त्री आसीन हो; जैसे—राजदूत, मुख्यमंत्री, प्रधानमंत्री, राष्ट्रपति, इंजीनियर, डॉक्टर, प्रोफेसर, सचिव, सभापति आदि।
- इनमें लिंग का निर्धारण क्रिया द्वारा होता है—

  कुलपति समारोह का उद्घाटन करेंगे। *(पुल्लिग)* कुलपति समारोह का उद्घाटन करेंगी। *(स्त्रीलिंग)*

(ख) अप्राणिवाचक संज्ञाओं के लिंग की पहचान—

सदा पुल्लिंग रहने वाले कुछ शब्द देखिए—

- दिनों के नाम — सोमवार, मंगलवार, बुधवार, बृहस्पतिवार, शुक्रवार, शनिवार, रविवार
- महीनों के नाम — चैत्र, वैशाख, ज्येष्ठ, श्रावण, भाद्रपद आदि।
- फलों के नाम — संतरा, केला, आम, तरबूज, जामुन आदि।
- वृक्षों के नाम — अशोक, आम, अमरूद, जामुन आदि।
- देशों के नाम — नेपाल, ईरान, वियतनाम, मलेशिया आदि।
- पर्वतों के नाम — हिमालय, शिवालिक, अरावली, विंध्याचल आदि।
- ग्रहों के नाम — मंगल, राहु, बुध, केतु, शनि आदि।
- बहुमूल्य रत्नों के नाम — हीरा, मोती, पन्ना तथा नीलम आदि।
- धातुओं के नाम — सोना, लोहा, ताँबा (अपवाद-चाँदी)।
- अनाजों के नाम — गेहूँ, चावल, बाजरा, मक्का, चना आदि।
- शरीर के अंगों के नाम — सिर, माथा, नाक, कान, गला, मुँह, हाथ, पैर, पेट आदि।
- द्रव्य पदार्थों के नाम — घी, तेल, दूध, मक्खन, शर्बत आदि।
- महाद्वीपों के नाम — एशिया, ऑस्ट्रेलिया, यूरोप आदि।

अंत में अ आने वाले शब्द प्राय: पुल्लिंग होते हैं; जैसे—कमल, नयन, फूल, जन्म, बचपन आदि।

सदा स्त्रीलिंग रहने वाले कुछ शब्द देखिए—

- भाषाओं के नाम — हिन्दी, संस्कृत, मराठी, पंजाबी, अंग्रेज़ी आदि।
- झीलों के नाम — नैनी, डल, मानसरोवर आदि।
- नदियों के नाम — रावी, व्यास, गंगा, यमुना, गोदावरी, सतलुज आदि।
- लिपियों के नाम — देवनागरी, गुरुमुखी, रोमन आदि।
- बोलियों के नाम — भोजपुरी, हरियाणवी, पहाड़ी आदि।
- नक्षत्रों के नाम — रोहिणी, अश्विनी आदि।
- तिथियों के नाम — पूर्णिमा, एकादशी, प्रथमा, सप्तमी आदि।
- किराने की वस्तुएँ — चीनी, इलायची, अरहर, मूँग, सौंफ, मिर्च आदि।
- बर्तनों के नाम — थाली, कटोरी, प्लेट, चम्मच, कड़ाही आदि।
- महीनों के नाम — जनवरी, फरवरी, मई, जुलाई आदि।
- आभूषणों के नाम — माला, अँगूठी, चूड़ी, बाली आदि।
- शरीर के अंगों के नाम — आँख, नाक, गर्दन, छाती, बाँह, अंगुली आदि।

अंत में अ, ई, ऊ, ख, त आने वाली संज्ञाएँ; जैसे—बात, रात, घात, चमक, जीवन, ईख, राख, बाल, लू आदि।

लिंग-परिवर्तन

पुल्लिग से स्त्रीलिंग में परिवर्तन के कुछ नियम इस प्रकार हैं—

(क) पुल्लिग शब्दों के अन्त में 'आ' जोड़कर

पुल्लिग	स्त्रीलिंग	पुल्लिग	स्त्रीलिंग	पुल्लिग	स्त्रीलिंग
छात्र	छात्रा	प्रिय	प्रिया	शिष्य	शिष्या
भवदीय	भवदीया	वृद्ध	वृद्धा	आचार्य	आचार्या

(ख) पुल्लिग शब्दों के अन्त में 'नी' जोड़कर

मोर	मोरनी	जाट	जाटनी	सरदार	सरदारनी
शेर	शेरनी	ऊँट	ऊँटनी	राजपूत	राजपूतनी

(ग) पुल्लिग शब्दों के अन्त में 'आनी' जोड़कर

देवर	देवरानी	चौधरी	चौधरानी	जेठ	जेठानी
क्षत्रिय	क्षत्रियाणी	सेठ	सेठानी	नौकर	नौकरानी

(घ) पुल्लिग शब्दों के अन्त में 'आइन' जोड़कर

पंडित	पंडिताइन	ठाकुर	ठकुराइन	लाला	ललाइन
गुरु	गुरुआइन	हलवाई	हलवाइन	बाबू	बबुआइन

(ङ) पुल्लिग शब्दों के अन्त में 'ई' जोड़कर

बकरा	बकरी	बेटा	बेटी	दास	दासी
देव	देवी	ब्राह्मण	ब्राह्मणी	घोड़ा	घोड़ी

(च) पुल्लिग शब्दों के अन्त में 'इया' जोड़कर

कुत्ता	कुतिया	गुड्डा	गुड़िया	बन्दर	बन्दरिया
लोटा	लुटिया	डिब्बा	डिबिया	चिड़ा	चिड़िया

(छ) पुल्लिग शब्दों के अन्त में 'इन' जोड़कर

पड़ोसी	पड़ोसिन	माली	मालिन	साँप	साँपिन
ग्वाला	ग्वालिन	नाग	नागिन	लुहार	लुहारिन

(ज) पुल्लिग शब्दों के अन्त में 'इनी' जोड़कर

स्वामी	स्वामिनी	हाथी	हथिनी	प्रार्थी	प्रार्थिनी
तपस्वी	तपस्विनी	आज्ञाकारी	आज्ञाकारिणी	हितकारी	हितकारिणी

(झ) पुल्लिग शब्दों के अन्त में 'इका' जोड़कर

नायक	नायिका	अध्यापक	अध्यापिका	सेवक	सेविका
गायक	गायिका	शिक्षक	शिक्षिका	लेखक	लेखिका

(ञ) पुल्लिंग शब्दों के अन्त में 'मती' या 'वती' जोड़कर

बुद्धिमान	बुद्धिमती	पुत्रवान	पुत्रवती	बलवान	बलवती
श्रीमान	श्रीमती	धनवान	धनवती	भाग्यवान	भाग्यवती

(ट) शब्द के पूर्व में 'नर' या 'मादा' जोड़कर

नर खरगोश	मादा खरगोश	नर भालू	मादा भालू	नर मक्खी	मादा मक्खी

अन्य

बहन	बहनोई	कवि	कवयित्री	विधुर	विधवा
सम्राट	सम्राज्ञी	साला	सलहज	वीर	वीरांगना
साधु	साध्वी	दाता	दात्री	विद्वान	विदुषी

2. वचन (Number)

'व्याकरण' में 'वचन' शब्द का प्रयोग शब्दों की गिनती के लिए किया जाता है अर्थात् शब्द का वह रूप जिससे उसके एक या एक से अधिक होने का बोध हो, वचन कहलाता है। उदाहरणार्थ—

(i) लड़की नाच रही है। (ii) खिलाड़ियों ने शानदार प्रदर्शन किया।

इन वाक्यों के 'लड़की' और 'खिलाड़ियों' शब्दों से एक या एक से अधिक होने का पता चलता है।

वचन के भेद

हिन्दी में वचन दो प्रकार के होते हैं—1. एकवचन और 2. बहुवचन।

1. एकवचन—शब्द के जिस रूप से उसके संख्या में एक होने का बोध होता है, एकवचन कहा जाता है; जैसे—घोड़ा, सन्तरा, तितली, बोतल, ऋतु आदि।

2. बहुवचन—शब्द के जिस रूप से उसके संख्या में एक से अधिक होने का बोध होता है, बहुवचन कहलाता है; जैसे—घोड़े, सन्तरे, तितलियाँ, बोतलें, ऋतुएँ आदि।

ध्यान रखिए—बहुवचन शब्द एक से अधिक का बोध कराते हैं, फिर चाहे उनकी संख्या दो हो या बहुत अधिक।

वचन की पहचान

वचन की पहचान मुख्यत: दो प्रकार से होती है—

1. संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण शब्दों के द्वारा—जब संज्ञा या सर्वनाम शब्द एक अथवा अनेक का बोध कराते हैं; तो उनके आधार पर वचन को पहचाना जाता है; जैसे—

- अध्यापक ने पाठ पढ़ाया।
- हम कल खूब खेले।
- वे शिमला जा रहे हैं।
- यह पेड़ ऊँचा है।

उपर्युक्त वाक्यों में वचन का ज्ञान संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण शब्दों के द्वारा हो रहा है।

2. क्रिया के रूप द्वारा—जब कुछ संज्ञा शब्दों का रूप एकवचन तथा बहुवचन दोनों में एक-सा रहता है तब उनका वचन जानने के लिए उन वाक्यों की क्रियाओं के रूप को देखा जाता है और उनके आधार पर वचन पहचाना जाता है; जैसे—

- ❖ छात्र पढ़ रहे हैं।
- ❖ बच्चे को रोता देख मेरे आँसू निकल आए।
- ❖ फूल खिल रहे हैं।
- ❖ बन्दर पेड़ पर लटक रहा है।

उपर्युक्त वाक्यों में छात्र, फूल, बच्चे, आँसू, बन्दर के वचन का ज्ञान क्रियापदों से हो रहा है।

एकवचन शब्दों का बहुवचन के रूप में प्रयोग

बच्चो, अनेक बार एकवचन शब्दों का प्रयोग बहुवचन के रूप में भी किया जाता है; जैसे—

1. आदर व्यक्त करने के लिए एक व्यक्ति के लिए भी प्राय: एकवचन के स्थान पर बहुवचन का प्रयोग किया जाता है; जैसे—
   - ❖ आप तो बड़े आदमी हैं।
   - ❖ पिताजी काम पर जा रहे हैं।
2. अभिमान या बड़प्पन जताने के लिए भी प्राय: एकवचन (मैं) के स्थान पर बहुवचन (हम) का प्रयोग किया जाता है; जैसे—
   - ❖ हम कभी झूठ नहीं बोलते।
   - ❖ हम अभी आ रहे हैं।
3. आजकल एकवचन (तू) के स्थान पर शिष्टतावश बहुवचन (तुम) शब्द का प्रयोग करते हैं; जैसे—
   - ❖ बेटा, तुम अब पढ़ लो।
   - ❖ अरे, दिव्या! तुम कब आईं।

बहुवचन के स्थान पर एकवचन का प्रयोग

1. भाववाचक संज्ञाएँ सदा एकवचन में प्रयुक्त होती हैं; जैसे—
   - ❖ इस चीनी में मिठास कम है।
   - ❖ गांधी जी हमेशा सत्य बोलते थे।
   - ❖ सुमन को भिखारी पर दया आ गई।
   - ❖ चुटकुला सुनकर हँसी आ गई।
2. जब समूहवाचक संज्ञाओं में संज्ञा शब्दों के साथ दल, वर्ग, गण, जन, जाति, समूह जोड़ दिया जाता है, तो इनका योग भी प्राय: एकवचन में होता है; जैसे—
   - ❖ भीड़ तितर-बितर हो गई।
   - ❖ टिड्डी दल आकाश में उड़ रहा है।
   - ❖ मज़दूर वर्ग बहुत परिश्रम करता है।
   - ❖ पक्षियों का समूह दाना चुग रहा है।
3. धातुओं तथा पदार्थों का बोध कराने वाली द्रव्यवाचक संज्ञाओं का प्रयोग एकवचन में ही होता है; जैसे—
   - ❖ सोना बहुत महँगा है।
   - ❖ सारा दूध बिखर गया।
   - ❖ हीरा बहुमूल्य रत्न होता है।
   - ❖ अब तो चाँदी भी महँगी है।

वचन परिवर्तन—एकवचन से बहुवचन बनाने के नियम

(क) 'आ' अन्त वाले पुल्लिंग शब्दों में 'आ' को 'ए' करके

एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
तोता	तोते	कपड़ा	कपड़े	पंखा	पंखे
गमला	गमले	कमरा	कमरे	कौआ	कौए

(ख) 'अ' अन्त वाले स्त्रीलिंग शब्दों के 'अन्त' में 'एँ' जोड़कर

एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
आँख	आँखें	मेज़	मेज़ें	नहर	नहरें
तस्वीर	तस्वीरें	कमीज़	कमीज़ें	पुस्तक	पुस्तकें

(ग) 'आ' अन्त वाले स्त्रीलिंग शब्दों में 'आ' के साथ 'एँ' जोड़कर

माला	मालाएँ	कथा	कथाएँ	महिला	महिलाएँ
कन्या	कन्याएँ	अध्यापिका	अध्यापिकाएँ	मात्रा	मात्राएँ

(घ) 'इ' अन्त वाले स्त्रीलिंग शब्दों में 'इ' के साथ 'याँ' जोड़कर

नीति	नीतियाँ	पंक्ति	पंक्तियाँ	विधि	विधियाँ
रीति	रीतियाँ	लिपि	लिपियाँ	प्रति	प्रतियाँ

(ङ) 'ई' अन्त वाले स्त्रीलिंग शब्दों में 'ई' को 'इ' करके तथा 'याँ' जोड़कर

नदी	नदियाँ	साड़ी	साड़ियाँ	बेटी	बेटियाँ
पुत्री	पुत्रियाँ	खिड़की	खिड़कियाँ	दवाई	दवाइयाँ

(च) 'या' अन्त वाले स्त्रीलिंग शब्दों में 'या' को 'याँ' करके

चिड़िया	चिड़ियाँ	गुड़िया	गुड़ियाँ	पुड़िया	पुड़ियाँ
डिबिया	डिबियाँ	बुढ़िया	बुढ़ियाँ	कुटिया	कुटियाँ

(छ) 'उ', 'ऊ' तथा 'औ' अन्त वाले शब्दों में 'एँ' जोड़कर ('ऊ' अन्त वाले शब्दों के 'ऊ' को 'उ' में बदल दिया जाता है

वस्तु	वस्तुएँ	धेनु	धेनुएँ	ऋतु	ऋतुएँ
वधू	वधुएँ	बहू	बहुएँ	जूँ	जुएँ

(ज) अन्य कुछ शब्दों के अन्त में लोग, गण, जन, वृन्द आदि जोड़कर

आप	आप लोग	अध्यापक	अध्यापक वृन्द	गुरु	गुरुजन
छात्र	छात्रगण	मज़दूर	मज़दूर वर्ग	टिड्डी	टिड्डी दल

(झ) युग्म शब्दों के बहुवचन बनाने के लिए उसके अन्तिम शब्द में ही परिवर्तन किया जाता है, दोनों में नहीं; जैसे—

भेड़-बकरी — भेड़ें-बकरियाँ घास चर रही हैं। *(अशुद्ध*
— भेड़-बकरियाँ घास चर रही हैं। *(शुद्ध*

गाय-भैंस — आजकल गायें-भैंसें कम दूध देती हैं। *(अशुद्ध*
— आजकल गाय-भैंसें कम दूध देती हैं। *(शुद्ध*

(ञ) जब संज्ञा शब्दों के साथ कारक-चिह्नों—ने, में, को, से, के लिए आदि का प्रयोग किया जाता है, तो शब्दों बहुवचन बनाने के लिए नियमों से अलग ओं, यों जोड़े जाते हैं; जैसे—

- वह घोड़े पर सवार था।
- बच्चा खाना खाता है।
- कई नेता आए।
- उसका मामा आया।
- कवि ने कविता लिखी।

- वे घोड़ों पर सवार थे।
- बच्चों ने खाना नहीं खाया।
- नेताओं ने भाषण दिए।
- रवि के सभी मामाओं को बुलाओ।
- कवियों ने कविताएँ लिखीं।

सम्बोधन करते समय

- 'अ', 'आ' से अन्त होने वाले शब्दों में 'ओ' का प्रयोग किया जाता है; जैसे—
  बहनो!, लोगो!, बच्चो!, छात्राओ!, छात्रो! आदि।
- 'इ', 'ई' से अन्त होने वाले शब्दों में 'यो' का प्रयोग किया जाता है; जैसे—
  भाइयो!, देवियो!, मुनियो!, सिपाहियो! आदि।

विशेष—

- कुछ शब्दों का प्रयोग हमेशा बहुवचन में होता है; जैसे—आँसू, प्राण, समाचार, हस्ताक्षर, लोग, दर्शन, बाल आदि।
- कुछ शब्दों का प्रयोग हमेशा एकवचन में होता है; जैसे—जनता, वर्षा, पानी, दूध, सत्य, झूठ, क्रोध, प्रजा, अमरूद, धरती, आकाश, सूर्य, चन्द्रमा आदि।
- कुछ पुल्लिग शब्द दोनों वचनों में प्राय: समान रहते हैं; जैसे—मकान, भवन, मुनि, गुरु, साधु, डाकू आदि।

3. कारक (Case)

संज्ञा या सर्वनाम का वह रूप, जिससे उसका सम्बन्ध क्रिया तथा दूसरे शब्दों के साथ पता चलता है, कारक कहलाता है। संज्ञा या सर्वनाम शब्दों का अन्य शब्दों के साथ सम्बन्ध दर्शाने के लिए कुछ शब्द प्रयुक्त होते हैं जिन्हें कारक-चिह्न कहते हैं। कारकों के ये चिह्न ही वाक्य के संज्ञा या सर्वनाम शब्दों का वाक्य की क्रिया या अन्य शब्दों के साथ सम्बन्ध तथा वाक्य के अर्थ स्पष्ट करते हैं। निम्नलिखित वाक्यों को पढ़िए और समझिए—

1. रमेश ने खाना खाया।
2. गौरव गीता को पुस्तक देता है।
3. वह कलम से लिखता है।

कभी-कभी कुछ वाक्यों में कुछ शब्दों के साथ परसर्गों का प्रयोग नहीं होता है; जैसे—बच्चे क्रिकेट खेल रहे हैं। इसमें 'बच्चे' और 'क्रिकेट' के साथ परसर्ग का प्रयोग नहीं हुआ है।

कारक के भेद

कारक के आठ भेद होते हैं। क्रिया से प्रश्न विशेष करने पर इनकी पहचान सरलता से हो जाती है। भेद के अनुसार उनके कारक-चिह्न (विभक्तियाँ) निश्चित हैं—

कारक	विभक्तियाँ	क्रिया से प्रश्न विशेष	उदाहरण
1. कर्ता कारक	ने	कौन?, किसने?	विभू खाना खाता है। शिवानी ने पत्र लिखा।
2. कर्म कारक	को	क्या? किसको?	माता जी खाना बनाती हैं। अध्यापक ने बच्चों को पढ़ाया।
3. करण कारक	से, के द्वारा	किससे?, किसके द्वारा?	निक्की कलम से लिखती है। उसे पत्र के द्वारा सूचित किया गया।
4. सम्प्रदान कारक	को, के लिए	किसे, किसके लिए?	रजनी ने मुझे पुस्तक दी। मैं पिता जी के लिए छतरी लाया।
5. अपादान कारक	से	कहाँ से? (अलग होने का भाव)	पेड़ से पत्ता गिरा। गंगा हिमालय से निकलती है।

6. सम्बन्ध कारक	का, की, के रा, री, रे ना, नी, ने	किसका? किसकी? किसके?	ईशान का भाई आया है। मेरी दादी जी बीमार हैं। वह अपना काम कर रहा है।
7. अधिकरण कारक	में, पर	किसमें?, किस पर?	कमीज़ अलमारी में रखी है। बन्दर पेड़ पर बैठा है।
8. सम्बोधन कारक	हे, अरे	—	हे प्रभु! मुझे सद्‌बुद्धि दो। अरे लड़के! यहाँ मत खेल।

1. कर्ता कारक—कर्ता का अर्थ है—किसी काम का करने वाला। किसी वाक्य में जिस शब्द से किसी काम के करने वाले का बोध होता है, वह कर्ता कारक होता है; जैसे—

❖ विमल व्यायाम कर रहा है।

❖ ईशान ने छाता खरीदा।

2. कर्म कारक—वाक्य में 'कर्म' शब्द का वह रूप है जिस पर क्रिया का फल पड़ता है। कर्म के साथ 'को' विभक्ति का प्रयोग किया जाता है, पर सदैव नहीं। 'को' विभक्ति का प्रयोग केवल प्राणिवाचक कर्म के साथ होता है; जैसे—

❖ तोता मिर्च खाता है। 'मिर्च' इस वाक्य का कर्म है, जो अप्राणिवाचक है।

❖ अध्यापक ने शिल्पी को पढ़ाया।

इस वाक्य में 'शिल्पी' प्राणिवाचक कर्म है जिसके साथ 'को' विभक्ति का प्रयोग हुआ है।

3. करण कारक—जिस संज्ञा या सर्वनाम के सहयोग से क्रिया सम्पन्न हो, उसे करण कारक कहते हैं; जैसे—

❖ मैंने यह मूर्ति अपने हाथों से बनाई है।

❖ उसे पत्र के द्वारा सूचना भिजवाई गई।

इन वाक्यों में क्रियाएँ 'हाथों से' तथा 'पत्र के द्वारा' सम्पन्न हुई हैं। अत: 'हाथों से' तथा 'पत्र के द्वारा' करण कारक हैं।

4. सम्प्रदान कारक—वाक्य में जिसे कोई वस्तु प्रदान की जाए अथवा जिस संज्ञा या सर्वनाम के लिए क्रिया का होना या करना समझा जाए, उसे सम्प्रदान कारक कहा जाता है; जैसे—

❖ राष्ट्रपति ने वीर सैनिकों को पुरस्कार दिए।

❖ वह रामलीला के लिए धन इकट्ठा कर रहा है।

इन वाक्यों में 'वीर सैनिकों को' तथा 'रामलीला के लिए' सम्प्रदान कारक हैं।

5. अपादान कारक—जिस पद से अलग होने का भाव प्रकट होता है, वह अपादान कारक कहलाता है; जैसे—

❖ पेड़ से पत्ते गिर रहे हैं।

❖ बच्चे विद्यालय से लौट रहे हैं।

इन वाक्यों में 'पत्ते' और 'बच्चे' का क्रमश: पेड़ और विद्यालय से अलग होने का भाव प्रकट किया गया है; अत: 'पेड़ से' और 'विद्यालय से' अपादान कारक हैं।

6. सम्बन्ध कारक—जब संज्ञा या सर्वनाम से किसी अन्य संज्ञा या सर्वनाम का सम्बन्ध दिखाया जाए, वहाँ सम्बन्ध कारक होता है; जैसे—

❖ हैदर का भाई बीमार है।

❖ वह अपने घर पर है।

इन वाक्यों में 'हैदर' का सम्बन्ध भाई से, 'अपने' का सम्बन्ध घर से, अत: इन पदों में सम्बन्ध कारक है।

7. अधिकरण कारक—क्रिया जिस स्थान पर या जिस समय पर घटित होती है, वह स्थान या समय सम्बन्धी आधार अधिकरण कारक कहलाता है; जैसे—

- उसने परीक्षा में प्रथम स्थान प्राप्त किया। *(किसमें प्रथम स्थान प्राप्त किया? —परीक्षा में)*
- मैंने पुस्तकें मेज़ पर रख दीं। *(पुस्तकें किस पर रख दीं? —मेज़ पर)*
- तुम्हें वार्षिकोत्सव पर पुरस्कार दिया जाएगा। *(कब पुरस्कार दिया जाएगा? —वार्षिकोत्सव पर)*

8. सम्बोधन कारक—जब किसी संज्ञा को सम्बोधित करके, बुलाने या उसका ध्यान आकर्षित करने का बोध हो, तो वहाँ सम्बोधन कारक होता है; जैसे—

- हे भगवान! अब मैं क्या करूँ।
- अरे, श्याम! कहाँ चले गए?

ध्यान रहे—सम्बोधन कारक में संज्ञा शब्दों के बाद सम्बोधन चिह्न (!) लगाया जाता है।

कर्म कारक और सम्प्रदान कारक में अन्तर

इन दोनों कारकों में 'को' विभक्ति का प्रयोग किया जाता है, पर दोनों के प्रयोग एवं अर्थ में अन्तर है। कर्म कारक का 'को' उस शब्द के साथ प्रयोग किया जाता है जिस पर क्रिया के व्यापार का फल पड़ता है; जबकि सम्प्रदान कारक का 'को' उस संज्ञा के साथ प्रयोग किया जाता है जिसे कुछ दिया जाए या जिसके लिए कुछ किया जाए; जैसे—

- पुलिस ने चोर को पकड़ा। *(कर्म कारक)*
- ईशान ने अपने मित्रों को उपहार दिए। *(देने का भाव—सम्प्रदान कारक)*

करण कारक और अपादान कारक में अन्तर

इन दोनों कारकों में 'से' विभक्ति का प्रयोग किया जाता है, परन्तु दोनों के अर्थ में अन्तर होता है। करण कारक का 'से' क्रिया के साधन के रूप में प्रयुक्त होता है; जबकि अपादान कारक का 'से' अलग होने के अर्थ में; जैसे—

- प्रिया ने चाकू से फल काटा। *(करण कारक)*
- गंगा हिमालय से निकलती है। *(अपादान कारक)*

1. सही उत्तर पर सही (✓) का चिह्न लगाइए—

(क) पुल्लिंग कहते हैं—

(i) शब्द के जिस रूप से स्त्री जाति का बोध हो।

(ii) वे शब्द जो अप्राणिवाचक अथवा निर्जीव हैं।

(iii) वे शब्द जो पुरुष जाति का बोध कराते हों।

(ख) 'वधुएँ' शब्द का एकवचन है—

(i) वधू (ii) वधु (iii) वधुए

(ग) कौन-सा शब्द सदा एकवचन में प्रयोग किया जाता है?

(i) दाल (ii) दूध (iii) मिठाई

(घ) वाक्य में शब्दों के साथ जो कारक-चिह्न जोड़े जाते हैं, वे क्या कहलाते हैं?

(i) सन्धि (ii) विभक्ति/परसर्ग (iii) समास

(ङ) 'अध्यापक ने रमन को समझाया।'—इस वाक्य में रेखांकित शब्द में है—

(i) कर्ता कारक (ii) कर्म कारक (iii) सम्बोधन कारक

2. निम्नलिखित शब्दों में से पुल्लिग और स्त्रीलिंग शब्द छाँटिए—

हिमालय	*यमुना*	*संस्कृत*	*बरगद*	*गेहूँ*	*पृथ्वी*	*हीरा*	*पूर्णिमा*
मज़दूरी	*घबराहट*	*बचपन*	*जहाज़*	*वायु*	*दवाखाना*	*फूलदान*	*बुनाई*

पुल्लिग शब्द — .....

स्त्रीलिंग शब्द— .....

3. निम्नलिखित स्त्रीलिंग शब्दों के पुल्लिग शब्द बनाइए—

साध्वी .....

नेत्री .....

अग्रजा .....

रूपवती .....

जाटनी .....

डिबिया .....

4. कोष्ठक में दिए गए शब्दों के बहुवचन-रूप से रिक्त स्थान भरिए—

(क) रंग-बिरंगे ..... पर ..... मँडरा रही हैं। *(फूल, तितली)*

(ख) अतिथि की सभी ..... को ..... ने ध्यान से सुना। *(बात, विद्यार्थी)*

(ग) सभी ..... की सभी ..... पूरी नहीं हो सकतीं। *(व्यक्ति, इच्छा)*

(घ) भारत में अनेक ..... के लोग रहते हैं जो अलग-अलग ..... बोलते हैं। *(धर्म, भाषा)*

5. निम्नलिखित वाक्यों में वचन-प्रयोग सम्बन्धी अशुद्धियाँ हो गई हैं। अशुद्धियों को दूर करके वाक्यों को पुन: लिखिए—

(क) यह खिलौना दस रुपया का है। .....

(ख) आजकल गायें-भैंसें दूध कम देने लगी हैं। .....

(ग) आज का क्या समाचार है? .....

(घ) मैंने कागज़ पर हस्ताक्षर कर दिया है। .....

(ङ) "भाइयों! आप शान्त हो जाइए।" नेता जी बोले। .....

6. निम्नलिखित वाक्यों में अशुद्ध कारक-चिह्नों को शुद्ध कीजिए—

(क) यह दोहा कबीर से लिखा है। .....

(ख) इस प्रश्न के उत्तर अध्यापक जी को पूछो। .....

(ग) बढ़ई ने लकड़ी की मेज़ बनाई। .....

(घ) गंगा भारत में पवित्र नदी है। .....

(ङ) वह छत पर से गिर गया। .....

7. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए—

(क) लिंग से आप क्या समझते हैं?

(ख) हिन्दी में लिंग के कितने भेद होते हैं?

(ग) वचन किसे कहते हैं? इसके कितने भेद हैं? उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।

(घ) एकवचन से बहुवचन बनाने के कुछ प्रमुख नियमों का उल्लेख कीजिए।

(ङ) कारक से क्या अभिप्राय है? उदाहरण सहित लिखिए।

रचनात्मक गतिविधियाँ

- निम्नलिखित अनुच्छेद को पढ़िए तथा उसमें उपयुक्त स्थान पर विभक्ति जोड़कर पुन: लिखिए ताकि उसका अर्थ पूरी तरह स्पष्ट हो सके—

"संसार सभी धर्म मानव धर्म और अच्छाई राह चलने प्रेरणा देते हैं। फिर भी कुछ संकीर्ण विचारधारा लोगों अपने स्वार्थ धर्म परिभाषा गलत प्रयोग किया। ऐसे लोगों धर्म नाम लोगों गुमराह किया और घृणा तथा शत्रुता भावनाएँ फैलाईं। हमारा कर्तव्य है कि हम सभी धर्मों सम्मान करें।"

.....

.....

.....

7

सर्वनाम
Pronoun

'सर्वनाम' शब्द दो शब्दों 'सर्व' और 'नाम' से मिलकर बना है जिसका अर्थ हुआ 'सबका नाम'। अत: जो शब्द सबके नामों अर्थात् संज्ञा के स्थान पर प्रयुक्त हो सके, उसे सर्वनाम कहते हैं।

निम्नलिखित अवतरण को पढ़िए—

कबूतरों का एक झुण्ड आकाश में उड़ रहा था। वे भूखे थे। उन्हें जंगल में अनाज के दाने दिखाई दिए। उन्होंने नीचे उतरकर दाना चुगने की सोची। उनके सरदार ने उन्हें रोकना चाहा, पर वे नहीं माने और शिकारी के जाल में फँस गए। वह बोला, "अगर तुम मेरी बात मान लेते, तो तुम पर यह विपत्ति न आती। कोई बात नहीं, मेरी बात ध्यान से सुनो—सब एक-साथ जोर लगाओ और जाल लेकर उड़ चलो। जंगल में मेरा मित्र चूहा रहता है। वह अपने पैने दाँतों से जाल काट देगा।"

उपर्युक्त रंगीन शब्द—वे, उन्हें, उन्होंने, उनके, वह, तुम, मेरी, मेरा, अपने 'सर्वनाम' हैं।

यहाँ ध्यान देने योग्य बात यह है कि सर्वनाम शब्दों का अर्थ सन्दर्भ से प्राप्त होता है। ऊपर लिखे गए वाक्य में हमने सबसे पहले यदि 'कबूतरों' (संज्ञा शब्द) का प्रयोग न किया होता तो 'वे', 'उन्हें', 'उनके' आदि का अर्थ स्पष्ट न होता।

सर्वनाम के भेद

सर्वनाम के निम्नलिखित छ: भेद होते हैं—

1. पुरुषवाचक सर्वनाम

कुछ सर्वनाम शब्दों का प्रयोग वक्ता (बोलने वाला) अपने लिए, कुछ का प्रयोग श्रोता (सुनने वाला) के लिए तथा कुछ सर्वनाम शब्दों का प्रयोग किसी ऐसे व्यक्ति के लिए किया जाता है, जो बातचीत करते समय वहाँ उपस्थित नहीं हैं। ये सभी शब्द पुरुषवाचक सर्वनाम कहे जाते हैं; जैसे—

ललित बोला, "मैंने तुम्हें पाँच सौ रुपये उसे देने के लिए कहा था।"

इस वाक्य में तीन सर्वनाम शब्दों—मैंने, तुम्हें तथा उसे का प्रयोग किया गया है। 'मैंने' सर्वनाम का प्रयोग बोलने वाले के लिए, 'तुम्हें' का प्रयोग सुनने वाले के लिए तथा 'उसे' सर्वनाम का प्रयोग अन्य पुरुष के लिए किया गया है। इन सर्वनाम शब्दों को पुरुषवाचक सर्वनाम कहते हैं।

पुरुषवाचक सर्वनाम तीन प्रकार के होते हैं—

(क) उत्तम पुरुषवाचक सर्वनाम—बात कहने वाला अपने लिए जिन सर्वनामों का प्रयोग करता है, उन्हें **उत्तम पुरुषवाचक सर्वनाम** कहते हैं;

जैसे—
- मैं स्कूल जा रहा हूँ।
- मुझे घर जाने दो।
- अब हमें चलना होगा।
- हम खेल रहे थे।

(ख) मध्यम पुरुषवाचक सर्वनाम—बात सुनने वाले के लिए जिन सर्वनामों का प्रयोग किया जाता है, उन्हें मध्यम पुरुषवाचक कहते हैं;

जैसे—
- ❖ तुम अब घर जाओ।
- ❖ आप उनकी बात मान लीजिए।
- ❖ तू ऐसे नहीं बताएगा।
- ❖ तुम्हें ऐसा नहीं बोलना चाहिए।

(ग) अन्य पुरुषवाचक सर्वनाम—जिसके बारे में बात हो रही है उसके लिए प्रयोग होने वाले सर्वनामों को अन्य पुरुषवाचक कहते हैं;

जैसे—
- ❖ वह तुम्हारी बात नहीं मानेगा।
- ❖ वे हमेशा सच बोलते हैं।
- ❖ तुम उसे पढ़ने दो।
- ❖ उन्होंने मैच जीत लिया है।

2. निश्चयवाचक सर्वनाम

जो सर्वनाम शब्द पास या दूर की वस्तुओं और व्यक्तियों का बोध कराते हैं, उन्हें निश्चयवाचक सर्वनाम कहते हैं; जैसे—

- ❖ निक्की ने अंजलि से कहा, "मेरा घर यह है। तुम्हारा कौन-सा है?"
- ❖ अंजलि ने बताया, "मेरा घर वह है।"

उपर्युक्त वाक्य में प्रयुक्त सर्वनाम शब्द 'यह' पास की वस्तु की ओर संकेत करता है तथा 'वह' शब्द दूर की वस्तु की ओर। ये दोनों निश्चयवाचक सर्वनाम हैं। ये सर्वनाम शब्द किसी वस्तु या व्यक्ति की ओर निश्चयपूर्वक संकेत करते हैं, इसीलिए इन्हें संकेतवाचक सर्वनाम भी कहते हैं।

3. अनिश्चयवाचक सर्वनाम

जो सर्वनाम शब्द किसी निश्चित व्यक्ति या वस्तु का बोध नहीं करवाते, उन्हें अनिश्चयवाचक सर्वनाम कहते हैं; जैसे—

- ❖ माँ—"बेटा देखो, किसी ने दरवाज़ा खटखटाया है।"
- ❖ बेटा—"हाँ माँ, बाहर कोई पापा से मिलने आया है।"

ऊपर के वाक्यों में 'किसी ने' तथा 'कोई' सर्वनाम शब्दों का प्रयोग हुआ है। ये सर्वनाम शब्द निश्चयपूर्वक किसी वस्तु या व्यक्ति की ओर संकेत नहीं करते, इसलिए ये दोनों शब्द अनिश्चयवाचक सर्वनाम हैं।

4. प्रश्नवाचक सर्वनाम

जिन सर्वनाम शब्दों का प्रयोग किसी संज्ञा या सर्वनाम के विषय में प्रश्न पूछने के लिए किया जाता है, उन्हें प्रश्नवाचक सर्वनाम कहते हैं; जैसे—

- ❖ माँ—"बेटा, बाहर जाकर देखो, फेरीवाला क्या बेच रहा है?"

ऊपर के वाक्य में 'क्या' ऐसा शब्द है जो संज्ञा या सर्वनाम में प्रश्न पूछने के लिए प्रयुक्त किया गया है। अत: 'क्या' शब्द प्रश्नवाचक सर्वनाम है।

5. सम्बन्धवाचक सर्वनाम

जो सर्वनाम शब्द वाक्य के किसी दूसरे सर्वनाम या संज्ञा से सम्बन्ध बताते हैं, वे सम्बन्धवाचक सर्वनाम कहलाते हैं; जैसे—

❖ अध्यापक जी बोले, "बच्चो! जो परिश्रम करता है, वह सदा सफल होता है।"

उपर्युक्त वाक्य में 'जो-वह' ऐसे सर्वनाम शब्द हैं, जो वाक्य के दूसरे भाग में आए सर्वनाम/संज्ञा से सम्बन्ध दर्शा रहे हैं। ये सम्बन्धवाचक सर्वनाम हैं।

6. निजवाचक सर्वनाम

जिन सर्वनाम शब्दों का प्रयोग वाक्य के कर्ता के साथ अपनापन बतलाने के लिए किया जाता है, उन्हें निजवाचक सर्वनाम कहते हैं; जैसे—

❖ ईशान स्कूल से मिला गृहकार्य स्वयं करता है।

ऊपर के वाक्य में 'स्वयं' या 'अपने आप' ऐसा सर्वनाम शब्द है जिसका प्रयोग कर्ता का अपनापन बतलाने के लिए किया गया है। अत: यह निजवाचक सर्वनाम है।

विशेष— 'आप' शब्द का प्रयोग मध्यम पुरुषवाचक सर्वनाम तथा अन्य पुरुषवाचक सर्वनाम के साथ आदर दिखाने के लिए भी किया जाता है तथा निजवाचक सर्वनाम के रूप में भी; जैसे—

- आप इधर आइए। *(मध्यम पुरुषवाचक सर्वनाम)*
- आप सुधांशु की मम्मी हैं। *(अन्य पुरुषवाचक सर्वनाम)*
- मैं इसका उत्तर आप ही दूँगा। *(निजवाचक सर्वनाम)*

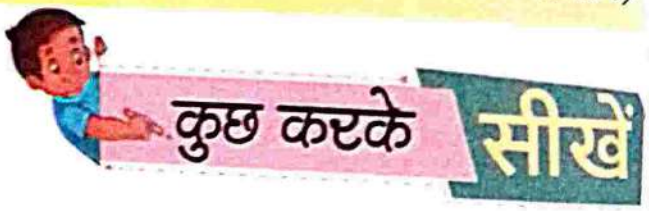

1. सही उत्तर पर सही (✓) का चिह्न लगाइए—

(क) जिन सर्वनाम शब्दों का प्रयोग बोलने वाला या लिखने वाला अपने लिए करता है, वे क्या कहलाते हैं?

(i) मध्यम पुरुषवाचक सर्वनाम ◯

(ii) अन्य पुरुषवाचक सर्वनाम ◯

(iii) उत्तम पुरुषवाचक सर्वनाम ◯

(ख) बातचीत के क्रम में सुनने वाले के लिए कौन-सा सर्वनाम शब्द आता है?

(i) वे ◯ (ii) तुम ◯ (iii) हम ◯

(ग) "दरवाज़े पर कौन खड़ा है?"—इस वाक्य में कौन-सा सर्वनाम है?

(i) सम्बन्धवाचक ◯ (ii) निजवाचक ◯ (iii) प्रश्नवाचक ◯

(घ) "शायद दूध में कुछ पड़ा है।"—इस वाक्य में कौन-सा सर्वनाम है?

(i) अनिश्चयवाचक ◯ (ii) निश्चयवाचक ◯ (iii) अन्य पुरुषवाचक ◯

(ङ) "हमें अपना काम स्वयं करना चाहिए।"—इस वाक्य में कौन-सा सर्वनाम है?

(i) मध्यम पुरुषवाचक (ii) निजवाचक (iii) प्रश्नवाचक

2. नीचे कुछ सर्वनाम शब्द और उनके प्रकार दिए गए हैं, उन्हें रेखा खींचकर मिलाइए—

मैं	प्रश्नवाचक	
कौन	मध्यम पुरुष एकवचन	आप
वे	अनिश्चयवाचक	किसे
कोई	उत्तम पुरुष एकवचन	स्वयं
	अन्य पुरुष बहुवचन	कुछ
	निजवाचक	

3. निम्नलिखित वाक्यों में से सर्वनाम शब्द छाँटकर उनके भेद लिखिए—

	वाक्य	सर्वनाम शब्द	भेद
(क)	आप जो कहेंगे, वही होगा।	.....	.....
(ख)	वे कहाँ जा रहे हैं?	.....	.....
(ग)	शिवानी ने स्वयं पत्र लिखा।	.....	.....
(घ)	कमी किसमें नहीं होती।	.....	.....
(ङ)	तुम्हारी घड़ी यहाँ रखी है।	.....	.....

4. सामने दिए गए सर्वनामों शब्दों से रिक्त स्थान भरिए—

(क) क्या तुमने ..... बुलाया है?

(ख) दर्द के मारे ..... चला नहीं जा रहा है।

(ग) ..... दरवाज़ा खटखटा रहा है।

(घ) बुखार होने के कारण ..... आज स्कूल नहीं जाएगी।

(ङ) ..... उत्सव में भाग लेना है, वह हाथ उठाए।

(च) ..... देर से आएगा ..... दण्ड दिया जाएगा।

उससे कोई
वह जिसे
जो उसे
मुझे

5. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए—

(क) सर्वनाम किसे कहते हैं? इसके कितने भेद होते हैं? उदाहरण भी दीजिए।

(ख) पुरुषवाचक सर्वनाम के कौन-कौन से भेद होते हैं?

(ग) सम्बन्धवाचक सर्वनाम किसे कहते हैं?

(घ) निश्चयवाचक सर्वनाम से क्या तात्पर्य है?

रचनात्मक गतिविधियाँ

आप सर्वनाम के किसी भेद का प्रयोग करते हुए दो वाक्य बोलें। आपका सहपाठी पहचानकर यह बताए कि वह सर्वनाम का कौन-सा भेद है। फिर दो वाक्य आपका सहपाठी बोले। सहपाठी द्वारा बोले गए वाक्यों में आप सर्वनाम के भेद पहचानें।

जो शब्द किसी संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बताते हैं, उन्हें विशेषण कहा जाता है। उदाहरणार्थ—

हमारे शहर में मेला लगा है। मेले में अनेक दुकानें हैं। उन पर तरह-तरह का सामान मिलता है। झूलों पर बहुत-से बच्चे झूल रहे हैं। मेले में बड़ा सरकस भी लगा है। सरकस का जोकर रंग-बिरंगी पोशाक पहनकर सबको हँसाता है।

ऊपर के वाक्यों में रंगीन शब्द अपने साथ आए संज्ञा शब्दों की विशेषता बता रहे हैं। ये सभी विशेषण हैं।

विशेष्य—विशेषण द्वारा जिस शब्द की विशेषता बताई जाती है, उसे विशेष्य कहा जाता है।

उपर्युक्त अनुच्छेद में विशेषण और विशेष्य

विशेषण	विशेष्य	विशेषण	विशेष्य	विशेषण	विशेष्य
अनेक	दुकानें	तरह-तरह का	सामान	बहुत-से	बच्चे
बड़ा	सरकस	रंग-बिरंगी	पोशाक		

विशेषण के भेद

विशेषण शब्द अपने साथ आए संज्ञा या सर्वनाम शब्दों की चार प्रकार की विशेषता बताते हैं। इसी आधार पर विशेषणों के चार भेद किए गए हैं—

1. गुणवाचक विशेषण

जो विशेषण शब्द अपने विशेष्य के गुण-दोष आदि से सम्बन्धित विशेषताओं का बोध कराता है, उसे गुणवाचक विशेषण कहा जाता है; जैसे— ❖ मेरा स्वेटर काला है। ❖ उसका मित्र बुद्धिमान है।

उपर्युक्त वाक्यों में 'काला' और 'बुद्धिमान' शब्द क्रमशः स्वेटर व मित्र के गुण-दोष बताने के कारण गुणवाचक विशेषण हैं।

गुणवाचक विशेषण संज्ञा या सर्वनाम शब्दों की निम्नलिखित प्रकार की विशेषताओं का बोध कराता है—

गुण-दोष — आलसी, मेहनती, ईमानदार, बेईमान, चतुर, मूर्ख, सुन्दर, भद्दा, योग्य, अयोग्य आदि।
रंग-रूप — सफ़ेद, काला, पीला, नीला, चमकीला, साँवला आदि।
आकार-प्रकार — गोल, चपटा, तिकोना, लम्बा, छोटा, वर्गाकार आदि।
स्पर्श — चिकना, खुरदरा, मुलायम, कठोर आदि।
स्वाद-गन्ध — मीठा, खट्टा, नमकीन, कड़वा, फीका, बदबूदार, सुगन्धित आदि।
दिशा — पूर्वी, पश्चिमी, उत्तरी, दक्षिणी आदि।
स्थान, देश-काल — प्राचीन, भारतीय, ग्रामीण, बाहरी, पंजाबी, गुजराती आदि।
दशा-अवस्था — दुर्बल, स्वस्थ, युवा, जवान, बूढ़ा, कमज़ोर आदि।

2. संख्यावाचक विशेषण

जो विशेषण शब्द अपने विशेष्य की संख्या या गिनती का बोध कराता है, उसे **संख्यावाचक विशेषण** कहा जाता है; जैसे— ❖ बस में बीस यात्री हैं। ❖ स्टेडियम में बहुत दर्शक हैं।

इन वाक्यों में 'बीस' तथा 'बहुत' शब्द संख्यावाचक विशेषण हैं जो अपने विशेष्यों (यात्री और दर्शक) की संख्या का बोध करा रहे हैं।

संख्यावाचक विशेषण दो प्रकार के हो सकते हैं—

(क) निश्चित संख्यावाचक विशेषण—जो शब्द संज्ञा या सर्वनाम की निश्चित संख्या का बोध कराते हैं, वे निश्चित संख्यावाचक विशेषण कहलाते हैं; जैसे—मैंने पुस्तक मेले से पाँच पुस्तकें खरीदीं।

(ख) अनिश्चित संख्यावाचक विशेषण—जो शब्द संज्ञा या सर्वनाम की अनिश्चित संख्या का बोध कराते हैं, उन्हें अनिश्चित संख्यावाचक विशेषण कहते हैं; जैसे—मेरी माता जी ने बाजार से बहुत-सी साड़ियाँ खरीदीं।

3. परिमाणवाचक विशेषण

जो विशेषण अपने विशेष्य के परिमाण या मात्रा का बोध कराएँ, उन्हें **परिमाणवाचक विशेषण** कहा जाता है; जैसे—

❖ वह बाज़ार से एक किलो आलू लेकर आया।

❖ मैंने दो मीटर कपड़ा खरीदा।

उपर्युक्त वाक्यों में प्रयुक्त 'एक किलो' और 'दो मीटर'—परिमाणवाचक विशेषण हैं।

परिमाणवाचक विशेषण भी दो प्रकार के होते हैं—

(क) निश्चित परिमाणवाचक विशेषण—जो विशेषण अपने विशेष्य की निश्चित मात्रा का बोध कराए, उसे निश्चित परिमाणवाचक विशेषण कहा जाता है; जैसे—माता जी ने बाज़ार से एक लीटर घी, पाँच किलो आटा और सौ ग्राम जीरा मँगवाया।

(ख) अनिश्चित परिमाणवाचक विशेषण—जो विशेषण विशेष्यों की निश्चित मात्रा का बोध न कराए, उसे अनिश्चित परिमाणवाचक विशेषण कहा जाता है; जैसे—मैं बाज़ार से कुछ सब्ज़ियाँ, थोड़े फल और थोड़ा पनीर लेकर आया।

4. सार्वनामिक या संकेतवाचक विशेषण

जो सर्वनाम शब्द वाक्य में किसी संज्ञा शब्द के साथ आकर उनकी ओर संकेत करने का कार्य करते हैं, उन्हें सार्वनामिक या संकेतवाचक विशेषण कहा जाता है; जैसे—'वे लड़के मैदान में क्रिकेट खेल रहे हैं।'

सार्वनामिक विशेषण की पहचान चार प्रकार से की जा सकती है—

❖ बात की निश्चितता से; जैसे—यह घड़ी गरिमा की है।

❖ बात की अनिश्चितता से; जैसे—कोई बच्चा चिल्ला रहा है।

❖ प्रश्नसूचक पद के माध्यम से; जैसे—आप किस आदमी से बात कर रहे थे?

❖ सम्बन्धसूचक पद के माध्यम से; जैसे—यह साइकिल मेरी है, वह (साइकिल) तुम्हारी है।

प्रविशेषण

विशेषण शब्दों की विशेषता बताने वाले शब्दों को प्रविशेषण कहते हैं; जैसे—

- आठवीं कक्षा का बहुत अच्छा परिणाम निकला।
- घोर परिश्रमी व्यक्ति सदैव सफल होता है।
- मुझे बहुत बड़ा घर पसन्द है।
- उसे बहुत अधिक प्यास लगी है।

इन सभी वाक्यों में 'बहुत, घोर' शब्द 'अच्छा, बड़ा, परिश्रमी तथा अधिक' विशेषणों की विशेषता को और अधिक बढ़ा रहे हैं, अत: ये प्रविशेषण हैं।

विशेषणों की तुलना और उनकी अवस्थाएँ

विभिन्न व्यक्तियों व वस्तुओं के गुण-दोषों की अकसर तुलना की जाती है। तुलना में विशेषण की तीन अवस्थाएँ मानी जाती हैं—

1. **मूलावस्था**—इसमें विशेषण विशेष्य की सामान्य अवस्था बताता है; जैसे—
   - निकिता सुन्दर लड़की है।
   - ईशान अच्छा बालक है।

2. **उत्तरावस्था**—जब दो विशेषणों की तुलना की जाती है तब उनमें से किसी एक को अच्छा या बुरा बताया जाता है। इसके लिए विशेषण के पहले 'से अधिक', 'से कम', 'से ज्यादा', 'की अपेक्षा' आदि का प्रयोग किया जाता है; जैसे—
   - चीता शेर से तीव्र दौड़ता है।
   - महिमा शिवानी से लम्बी है।

3. **उत्तमावस्था**—जब किसी व्यक्ति या वस्तु या स्थान को सबसे अच्छा या बुरा बताया जाता है तब विशेषण से पहले 'सबसे अधिक', 'सबसे ज्यादा', 'सबसे कम' आदि जोड़ा जाता है; जैसे—
   - ब्रह्मपुत्र सबसे बड़ी नदी है।
   - माउण्ट एवरेस्ट सबसे ऊँची चोटी है।

तत्सम विशेषणों की मूलावस्था में उत्तरावस्था के लिए—तर तथा उत्तमावस्था के लिए—तम प्रत्यय लगाया जाता है; जैसे—

मूलावस्था	उत्तरावस्था	उत्तमावस्था
दीर्घ	दीर्घतर	दीर्घतम
मधुर	मधुरतर	मधुरतम
श्रेष्ठ	श्रेष्ठतर	श्रेष्ठतम
कोमल	कोमलतर	कोमलतम
उच्च	उच्चतर	उच्चतम
निम्न	निम्नतर	निम्नतम
प्रिय	प्रियतर	प्रियतम
सरल	सरलतर	सरलतम

विशेषण शब्दों की रचना

प्रत्येक भाषा में मूल रूप में कुछ विशेषण शब्द होते हैं, हिन्दी में भी ऐसा ही है; जैसे—अच्छा, बुरा, पीला, निम्न, उच्च, चतुर, श्रेष्ठ, सुन्दर आदि। कुछ विशेषण शब्दों की रचना अन्य शब्द-रूपों से की जाती है; जैसे—

1. संज्ञा से विशेषण की रचना

संज्ञा से विशेषण बनाने के लिए विभिन्न प्रत्ययों का प्रयोग किया जाता है; जैसे—

प्रत्यय	संज्ञा	विशेषण	संज्ञा	विशेषण
-इक	प्रकृति	प्राकृतिक	पुराण	पौराणिक
-इत	चर्चा	चर्चित	नियम	नियमित
-ईय	शास्त्र	शास्त्रीय	स्मरण	स्मरणीय
-ईला	पत्थर	पथरीला	बर्फ़	बर्फ़ीला
-वाला	घड़ी	घड़ीवाला	कुलफ़ी	कुलफ़ीवाला
-एरा	फूफा	फुफेरा	चाचा	चचेरा
-शाली	गौरव	गौरवशाली	ऐश्वर्य	ऐश्वर्यशाली
-मान	विद्य	विद्यमान	बुद्धि	बुद्धिमान
-वान	कान्ति	कान्तिवान	नाश	नाशवान
-वती/मती	रूप, श्री	रूपवती, श्रीमती	गुण	गुणवती

2. सर्वनाम से विशेषण की रचना

प्रत्यय	सर्वनाम	विशेषण	सर्वनाम	विशेषण
-सा	यह	ऐसा	किस	कैसा
-एरा	तू	तेरा	मैं	मेरा

3. क्रिया से विशेषण की रचना

प्रत्यय	क्रिया	विशेषण	क्रिया	विशेषण
-आऊ	बिक	बिकाऊ	टिक	टिकाऊ
-इत	उदय	उदित	पठन	पठित
-वाला	बोलना	बोलनेवाला	गाना	गानेवाला

4. अव्यय से विशेषण की रचना

प्रत्यय	अव्यय	विशेषण	अव्यय	विशेषण
-ई	बाहर	बाहरी	भीतर	भीतरी
-ला	नीचे	निचला	आगे	अगला
-ऊनी	अन्दर	अन्दरूनी	ऊपर	ऊपरी

विशेषण का रूप-परिवर्तन

❖ आकारान्त विशेषणों में विशेष्य के लिंग, वचन और कारक के अनुसार विकार होता है; जैसे—

आधा	आधे	आधी
पीला	पीले	पीली

❖ अकारान्त, ईकारान्त और उकारान्त विशेषणों में लिंग, वचन और कारक के अनुसार कोई परिवर्तन नहीं होगा; जैसे—

सुन्दर लड़का	सुन्दर लोग	सुन्दर महिला
प्रभावशाली व्यक्ति	प्रभावशाली लोग	प्रभावशाली महिला
श्रद्धालु व्यक्ति	श्रद्धालु लोग	श्रद्धालु महिला

❖ सार्वनामिक विशेषणों में विकार सर्वनामों की तरह होता है; जैसे—

वह लड़का	उसका लड़का

❖ कभी-कभी विशेषण संज्ञा की तरह प्रयुक्त होते हैं; जैसे—

अच्छों को सभी चाहते हैं। कइयों ने कोशिश की, किन्तु असफल रहे।

1. सही उत्तर पर सही (✓) का चिह्न लगाइए—

(क) किसी संज्ञा या सर्वनाम के गुण, दोष, दशा, स्वाद आदि की विशेषता बताने वाला विशेषण है—

(i) परिमाणवाचक ( ) (ii) संकेतवाचक ( ) (iii) गुणवाचक ( )

(ख) विशेषण की विशेषता बताने वाले शब्द क्या कहलाते हैं?

(i) क्रियाविशेषण ( ) (ii) प्रविशेषण ( ) (iii) विशेष्य ( )

(ग) विशेषण की तरह प्रयोग किए जाने वाले सर्वनाम क्या कहलाते हैं?

(i) गुणवाचक विशेषण ( ) (ii) सार्वनामिक विशेषण ( ) (iii) संख्यावाचक विशेषण ( )

(घ) 'भारत' शब्द से बना विशेषण शब्द है—

(i) भारतवर्ष ( ) (ii) भारतीय ( ) (iii) भारतमाता ( )

(ङ) 'पाँच लीटर दूध' में कौन-सा विशेषण है?

(i) संख्यावाचक ( ) (ii) परिमाणवाचक ( ) (iii) संकेतवाचक ( )

2. निम्नलिखित वाक्यों में से विशेषण शब्द छाँटकर उनके भेद लिखिए—

	वाक्य	विशेषण शब्द	भेद
(क)	सफ़ेद चादर खरीद लाओ।	सफ़ेद	गुणवाचक
(ख)	मृदुला भली लड़की है।	.....	.....
(ग)	तुम कब तेरह वर्ष के हो जाओगे?	.....	.....
(घ)	सड़क पर काफ़ी कूड़ा फैला हुआ था।	.....	.....
(ङ)	कुत्ते को मीठा दूध नहीं देना चाहिए।	.....	.....

3. प्रत्येक वर्ग से उपयुक्त शब्द चुनकर विशेषण-विशेष्य के जोड़े बनाइए—

	विशेषण	विशेष्य
	काले, अँधेरी, सुन्दर, ऊँचे, चार, राष्ट्रीय	पेड़, ध्वज, गुफा, गुड़िया, बादल, किताबें
(क)	काले	बादल
(ख)	.....	.....
(ग)	.....	.....
(घ)	.....	.....
(ङ)	.....	.....
(च)	.....	.....

4. नीचे दिए गए शब्दों से विशेषण बनाइए—

(क) प्रकृति ..... (ख) भीतर .....

(ग) बुद्धि ..... (घ) पुराण .....

(ङ) चाचा ..... (च) उदय .....

5. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए—

(क) विशेषण से आप क्या समझते हैं? इसके कितने भेद होते हैं? नाम लिखिए।

(ख) परिमाणवाचक और संख्यावाचक विशेषण में अन्तर बताइए।

(ग) प्रविशेषण किसे कहते हैं? उदाहरण सहित बताइए।

(घ) विशेषण की कितनी अवस्थाएँ होती हैं?

(ङ) सार्वनामिक विशेषण को दूसरे किस नाम से पुकारा जाता है?

रचनात्मक गतिविधियाँ

- कोष्ठक में दिए गए निर्देशानुसार रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए—

(क) महेश ..... माँ से बहुत प्यार करता है। *(सार्वनामिक विशेषण)*

(ख) इतिहास पढ़कर ..... घटनाओं का ज्ञान हो जाता है। *(रेखांकित शब्द के विशेषण से)*

(ग) पापा ..... सेब लाए। *(निश्चित परिमाणवाचक विशेषण)*

(घ) कवि सम्मेलन में ..... श्रोतागण उपस्थित थे। *(अनिश्चित संख्यावाचक विशेषण)*

(ङ) हमारे परिवार में ..... सदस्य हैं। *(निश्चित संख्यात्मक विशेषण)*

(च) विदेशों में ..... बच्चे अपने माता-पिता से अलग रहते हैं। *('अधिक' की उत्तरावस्था)*

(छ) आरुषि गुरु जी का ..... शिष्य था। *('प्रिय' की उत्तमावस्था)*

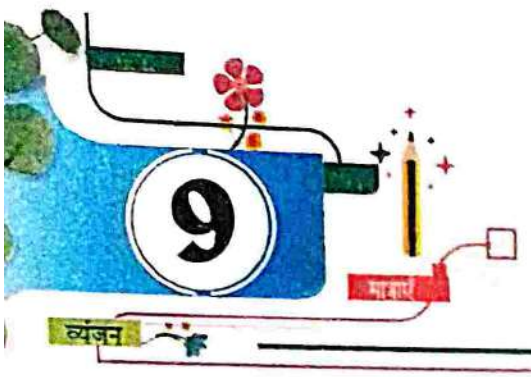

9 क्रिया और काल
Verb and Tense

1. क्रिया (Verb)

जिन शब्दों से किसी कार्य को करने या होने, किसी घटना के घटने या किसी व्यक्ति या वस्तु की स्थिति या अवस्था का बोध हो, उन्हें **क्रिया** कहते हैं। इस प्रकार क्रिया से आशय है—

- किसी व्यक्ति द्वारा किसी कार्य का किया जाना।
- किसी घटना या कार्य का घटित होना।
- किसी वस्तु या व्यक्ति की अवस्था या स्थिति।

उदाहरणार्थ—

(i) बच्चे कक्षा में पढ़ रहे हैं।
(ii) ये लड़के मैच जीत गए।
(iii) रोहित कई दिनों से बीमार है।
(iv) पुस्तक अलमारी में है।

इन वाक्यों में 'पढ़ रहे हैं', 'जीत गए', 'बीमार है' और 'अलमारी में है' शब्दों से काम करने, घटना के घटने, व्यक्ति/वस्तु की अवस्था या स्थिति का बोध हो रहा है, अत: ये क्रिया पद हैं।

वाक्य में क्रिया का स्थान सबसे महत्त्वपूर्ण होता है। क्रिया के बिना वाक्य की रचना नहीं हो सकती। हिन्दी वाक्यों में क्रिया वाक्य के अन्त में आती है।

धातु—क्रिया के मूल रूप को धातु (Root) कहते हैं; जैसे—पढ़, लिख, तैर, खेल, सो, जा, आ। इनमें 'ना' जोड़ने से क्रिया का सामान्य रूप बनता है—

धातु	क्रिया	धातु	क्रिया	धातु	क्रिया
पढ़	पढ़ना	लिख	लिखना	पकड़	पकड़ना
देख	देखना	चल	चलना	सुन	सुनना
उड़	उड़ना	चढ़	चढ़ना	उग	उगना
रूठ	रूठना	उतर	उतरना	तड़प	तड़पना
सोच	सोचना	दौड़	दौड़ना	धो	धोना

क्रिया के भेद

क्रिया के भेद दो आधारों पर किए जा सकते हैं—

1. कर्म के आधार पर क्रिया के भेद

कर्म के आधार पर क्रिया के दो भेद हैं—

(क) अकर्मक क्रिया

अकर्मक का अर्थ है—अ + कर्मक; अर्थात् 'कर्म के बिना'। जिस क्रिया को कर्म की अपेक्षा नहीं होती, उसे अकर्मक क्रिया कहते हैं; जैसे— ❖ वह दौड़ रहा है। ❖ तुम चल रहे हो। ❖ मोर नाच रहा है।

हँसना, रोना, आना, जाना, उड़ना, उठना, बैठना, चलना, भागना, तैरना, सोना आदि अकर्मक क्रियाएँ हैं।

(ख) सकर्मक क्रिया

सकर्मक का अर्थ है—स + कर्मक; अर्थात् कर्म के साथ।

जिस क्रिया के साथ कर्म का प्रयोग किया जाता है या जिनमें कर्म के प्रयोग की अपेक्षा रहती है, उसे **सकर्मक क्रिया** कहते हैं; जैसे—

❖ रोहन फल खाता है। ❖ मुदित ने कविता पढ़ी। ❖ उसने दूध पिया।

इन वाक्यों में क्रमशः 'फल', 'कविता' और 'दूध' कर्म का प्रयोग हुआ है; इसलिए वाक्यों की क्रियाएँ—'खाता है', 'पढ़ी' और 'पिया'—सकर्मक क्रियाएँ हैं।

सकर्मक क्रिया भी निम्नलिखित दो प्रकार की होती है—

(i) **एककर्मक क्रिया**—जिस क्रिया के साथ एक कर्म का प्रयोग होता है, उसे **एककर्मक क्रिया** कहते हैं; जैसे—

❖ बच्चे ने फूल तोड़ लिया। *(कर्म—फूल)* ❖ वह निबन्ध लिख रहा है। *(कर्म—निबन्ध)*

(ii) **द्विकर्मक क्रिया**—जिस क्रिया के साथ दो कर्मों का प्रयोग होता है, उसे **द्विकर्मक क्रिया** कहते हैं; जैसे—

❖ माताजी ने भिखारी को रोटी दी। *(कर्म—भिखारी, रोटी)*

❖ बाजीगर लोगों को तमाशा दिखाता है। *(कर्म—लोगों, तमाशा)*

2. रचना या प्रयोग के आधार पर क्रिया के भेद

रचना या प्रयोग के आधार पर क्रिया के निम्नलिखित भेद होते हैं—

(क) सामान्य क्रिया

जब वाक्य में एक ही क्रिया का प्रयोग हुआ हो तो उसे **सामान्य क्रिया** कहते हैं; जैसे—

❖ विभु स्कूल गया। ❖ कंचन ने मुझे मेले में देखा। ❖ बच्चा सोएगा।

—इन वाक्यों में 'गया', 'देखा' और 'सोएगा' सामान्य क्रियाएँ हैं।

(ख) संयुक्त क्रिया

जो क्रियापद दो या दो से अधिक क्रियाओं के योग (मूल क्रिया + सहायक क्रिया) से बनता है, उसे संयुक्त क्रिया कहते हैं; जैसे—

❖ वह मुझे मॉल में दिखाई दिया था। ❖ उसका व्यापार अब चल निकलेगा।

(ग) प्रेरणार्थक क्रिया

जब कर्ता स्वयं काम न करके किसी दूसरे से करवाता है तो उस क्रिया को प्रेरणार्थक क्रिया कहते हैं; जैसे—

❖ उसने अपनी दुकान इसी साल बनवाई है। ❖ मैंने बच्चे को घर पहुँचवा दिया है।

(घ) नामधातु क्रिया

जो क्रियाएँ संज्ञा, सर्वनाम और विशेषण शब्दों से बनाई जाती हैं, उन्हें नामधातु क्रियाएँ कहते हैं; जैसे—

❖ इन्तज़ार करते-करते मेरी आँखें पथरा गई हैं। ❖ तुम क्या बतिया रहे हो?

❖ कोई दरवाज़ा खटखटा रहा है। ❖ हमें दूसरों की अच्छी बातों को अपनाना चाहिए।

इन वाक्यों की क्रियाएँ 'पथरा गई हैं', 'बतिया रहे हो', 'खटखटा रहा है' और 'अपनाना चाहिए' क्रमश: पत्थर (संज्ञा), बात (संज्ञा), खटखट (ध्वन्यात्मक शब्द) और अपना (सर्वनाम) शब्दों से बनी हैं, अत: ये नामधातु क्रियाएँ हैं।

नामधातु क्रियाओं की रचना

❖ संज्ञा से बनी नामधातु क्रियाएँ—

झूठ — झुठलाना	फिल्म —फिल्माना	हाथ —हथियाना
बात — बतियाना	चक्कर — चकराना	शर्म — शर्माना

❖ सर्वनाम से बनी नामधातु क्रिया— आप — अपनाना

❖ विशेषण से बनी नामधातु क्रियाएँ—

गरम — गरमाना	दोहरा — दोहराना	साठ —सठियाना

❖ ध्वन्यात्मक शब्दों से बनी नामधातु क्रियाएँ—

थर-थर —थरथराना	खट-खट — खटखटाना	टिम-टिम — टिमटिमाना
हिन-हिन —हिनहिनाना	भिन-भिन—भिनभिनाना	बड़-बड़ — बड़बड़ाना

(ङ) पूर्वकालिक क्रिया

वाक्य में जब एक क्रिया पूरी हो चुकने के बाद दूसरी क्रिया आरम्भ होती है तो पहले समाप्त हो चुकी क्रिया को पूर्वकालिक क्रिया कहते हैं; जैसे—❖ मुझे देखकर वह रुक गया। ❖ वह बैठकर सोचने लगा।

2. काल (Tense)

क्रिया के जिस रूप से उसके घटित होने के समय का बोध होता है, उसे काल कहते हैं। कुछ क्रियाएँ बीते समय में हो चुकी होती हैं, कुछ चल रहे समय यानी वर्तमान में हो रही होती हैं, तो कुछ आने वाले समय में घटित होती हैं।

निम्नलिखित वाक्यों में रंगीन छपे पदों को ध्यानपूर्वक पढ़िए और समझिए—

(i) दशहरा हिन्दुओं का प्रमुख त्योहार है। (ii) श्रीराम ने रावण का वध किया था।

(iii) कल हम दशहरे का मेला देखने जाएँगे।

उपर्युक्त वाक्यों में रंगीन छपे शब्द 'क्रियाएँ' हैं। इन क्रियाओं द्वारा सम्पन्न हुए कार्य एक ही समय में नहीं हो रहे हैं। कोई कार्य बीते हुए समय में हो रहा है, तो कोई अब चल रहे समय में, तो कोई आने वाले समय में।

काल के भेद

क्रिया के घटित होने के आधार पर काल के तीन प्रमुख भेद होते हैं—

1. भूतकाल, 2. वर्तमान काल, 3. भविष्यत्काल।

1. भूतकाल

क्रिया के जिस रूप से क्रिया के बीते समय में होने का पता चले, उसे भूतकाल कहते हैं; जैसे—

❖ वे कल मुम्बई चले गए थे। ❖ मैंने पाठ याद कर लिया।

भूतकाल के निम्नलिखित छः भेद होते हैं—

(क) सामान्य भूतकाल—इस काल के वाक्यों से क्रिया की सामान्य स्थिति का बोध होता है, लेकिन क्रिया कब पूर्ण हुई, इस बात का पता नहीं चलता; जैसे—❖ शोभित कल आया था। ❖ बच्चा सो गया।

(ख) आसन्न भूतकाल—जब क्रिया थोड़ी देर पहले ही पूर्ण हुई हो, उसे आसन्न भूतकाल कहते हैं; जैसे—

❖ मेहमान यहाँ आ चुके हैं। ❖ राजस्थान रॉयल्स ने मैच जीत लिया है।

इस काल के वाक्यों की मुख्य क्रिया सामान्य भूतकाल में और सहायक क्रिया है/हैं/हो/हूँ होती है।

(ग) अपूर्ण भूतकाल—इस काल के वाक्यों से क्रिया के भूतकाल में चलते रहने का तो बोध होता है लेकिन कार्य की समाप्ति का संकेत नहीं होता; जैसे—❖ निकिता बाज़ार जा रही थी। ❖ कुछ लड़के सड़क पर दौड़ रहे थे।

(घ) पूर्ण भूतकाल—जब क्रिया से यह पता चले कि कार्य बहुत पहले समाप्त हो चुका तो उसे पूर्ण भूतकाल कहते हैं; जैसे—❖ हमारे पहुँचने से पहले ही रेलगाड़ी छूट चुकी थी। ❖ वे अपने कपड़े पहले ही धो चुके थे।

(ङ) हेतु-हेतुमद् भूतकाल—इस काल के वाक्यों में एक काम का होना दूसरे कार्य पर निर्भर दिखाया जाता है; जैसे— ❖ यदि तुम मेहनत करते तो परीक्षा में पास हो जाते। ❖ बिजली आ जाती तो अब तक कपड़े धुल जाते।

(च) सन्दिग्ध भूतकाल—इस काल के वाक्यों में कार्य के होने का उल्लेख सन्देह या अनिश्चय के साथ किया जाता है; जैसे—❖ ईशान घर आ चुका होगा। ❖ उसने गृहकार्य पूरा कर लिया होगा।

2. वर्तमानकाल

क्रिया के जिस रूप से क्रिया के अभी या सामान्यतया होने का पता चले, उसे वर्तमानकाल कहते हैं; जैसे—

❖ अर्चित कक्षा आठ में पढ़ता है। ❖ आज वर्षा हो रही है।

वर्तमानकाल के निम्नलिखित तीन भेद होते हैं—

(क) सामान्य वर्तमानकाल—इस काल के वाक्यों में कर्ता के द्वारा किए गए कार्य का सामान्य वर्णन किया जाता है; जैसे—❖ पक्षी आकाश में उड़ते हैं। ❖ सूरज पूरब में निकलता है।

(ख) सन्दिग्ध वर्तमानकाल—इस काल के वाक्यों में कार्य के होने के बारे में सन्देह या अनिश्चय बना रहता है; जैसे— ❖ ऋतु आज हैदराबाद पहुँची होगी। ❖ बच्चे इस समय पढ़ रहे होंगे।

(ग) अपूर्ण वर्तमानकाल—इस काल के वाक्यों में कार्य के चलते रहने का बोध होता है, लेकिन कार्य अपूर्ण रहता है; जैसे—❖ मैं कविता लिख रहा हूँ। ❖ वह आपकी प्रतीक्षा में यहाँ खड़ा है।

3. भविष्यत्काल

क्रिया के जिस रूप से आने वाले समय में क्रिया के होने का पता चले, उसे भविष्यत्काल कहते हैं; जैसे—

❖ नेहा गीत गाएगी। ❖ थोड़ी देर में माताजी पूजा करेंगी।

भविष्यत्काल के निम्नलिखित तीन भेद होते हैं—

(क) सामान्य भविष्यत्काल—जिस काल के वाक्यों में क्रिया के भविष्यत्काल में सामान्य रूप से होने का बोध हो, उसे सामान्य भविष्यत्काल कहते हैं; जैसे—

❖ राहुल अब आराम करेगा। ❖ मैं पहले गृहकार्य पूरा करूँगा।

(ख) सम्भाव्य भविष्यत्काल—जिस काल के वाक्यों में क्रिया के भविष्य में होने की सम्भावना प्रकट की जाती, किन्तु क्रिया के सम्पन्न होने का निश्चय नहीं रहता, उसे सम्भाव्य भविष्यत्काल कहते हैं; जैसे—

- ❖ शायद पिताजी दिल्ली से आज आएँ।
- ❖ भगवान करे कि गाड़ी स्टेशन पर मिल जाए।

(ग) हेतु-हेतुमद् भविष्यत्काल—जिस काल के वाक्यों में भविष्य में होने वाली क्रिया का होना किसी दूसरी क्रिया पर निर्भर होता है, वहाँ हेतु-हेतुमद् भविष्यत्काल होता है; जैसे—

- ❖ अगर तुम पढ़ाई में मेहनत नहीं करोगे तो पछताओगे।
- ❖ यदि वह समय पर न पहुँचा तो क्या होगा?

1. सही उत्तर पर सही (✓) का चिह्न लगाइए—

(क) संज्ञा, सर्वनाम और विशेषण शब्दों से बनी क्रियाएँ क्या कहलाती हैं?
(i) प्रेरणार्थक (ii) नामधातु (iii) संयुक्त

(ख) क्रिया के मूल रूप में कर लगाने से क्रिया बनती है—
(i) पूर्वकालिक (ii) संयुक्त (iii) अकर्मक

(ग) चल रहे समय का बोध कराने वाले क्रिया-रूप को क्या कहते हैं?
(i) भूतकाल (ii) वर्तमानकाल (iii) भविष्यत्काल

(घ) भविष्यत्काल के कितने भेद होते हैं?
(i) दो (ii) तीन (iii) छ:

2. निम्नलिखित वाक्यों में क्रिया किस प्रकार की है? लिखिए—

(क) वह देर से स्कूल पहुँची। ....
(ख) माँ मथुरा से लौट आई है। ....
(ग) माँ ने धोबी से कपड़े धुलवाए। ....
(घ) मैं पढ़ाई करके खेलने जाऊँगा। ....
(ङ) रवीना ने एक अनाथ लड़की को अपना लिया। ....

3. निम्नलिखित शब्दों से नामधातु क्रिया शब्द बनाइए—

(क) अपना ....*अपनाना*........ (ख) थपथप ....
(ग) बात .... (घ) शर्म ....
(ङ) दोहरा .... (च) हाथ ....

4. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए—

(क) .... क्रियाओं के दो कर्म होते हैं।
(ख) मूल क्रिया व .... क्रिया के योग से संयुक्त क्रिया बनती है।
(ग) अकर्मक क्रिया में क्रिया का प्रभाव .... पर पड़ता है।
(घ) जिस वाक्य में एक ही क्रियापद हो, उसे .... क्रिया कहते हैं।
(ङ) क्रिया का मूल रूप .... कहलाता है।

5. निम्नलिखित वाक्यों में क्रियापदों को रेखांकित करके उनके काल का नाम लिखिए—

(क) बच्चे बाहर खेल रहे थे। ..... *भूतकाल* .....

(ख) माताजी बाज़ार गई हैं। .....

(ग) हम अगले हफ़्ते श्रीनगर जाएँगे। .....

(घ) आप बैठिए, मैं अभी आया। .....

(ङ) निकिता घर चली गई होगी। .....

6. निम्नलिखित वाक्यों को कोष्ठक में दिए गए संकेत के अनुसार बदलिए—

(क) सुषमा लखनऊ गई थी। *(वर्तमानकाल)* .....

(ख) नमन कहानी लिखता है। *(भविष्यत्काल)* .....

(ग) आशा संस्कृत पढ़ती है। *(भूतकाल)* .....

(घ) हम कल आने वाले थे। *(भविष्यत्काल)* .....

(ङ) माधुरी कविता सुनाएगी। *(वर्तमानकाल)* .....

(च) मामाजी छत पर हैं। *(भूतकाल)* .....

7. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए—

(क) क्रिया की परिभाषा उदाहरण सहित लिखिए।

(ख) सकर्मक तथा अकर्मक क्रिया में अन्तर स्पष्ट कीजिए।

(ग) द्विकर्मक क्रिया से आप क्या समझते हैं?

(घ) काल किसे कहते हैं?

(ङ) भूतकाल की पहचान कैसे होती है?

रचनात्मक गतिविधियाँ

1. जब कर्ता स्वयं कार्य न करके किसी दूसरे को करने की प्रेरणा देता है तो वहाँ प्रेरणार्थक क्रियाएँ होती हैं; जैसे—उठना से उठवाना, चलना से चलवाना।

आप भी इसी प्रकार की क्रियाओं और उनके प्रेरणार्थक रूप की तालिका का एक चार्ट बनाइए।

2. कुछ वाक्य ऐसे होते हैं जो सदैव वर्तमान काल में होते हैं; जैसे—

(क) सूर्य पूरब में उगता है।

(ख) मनुष्य मरणशील है।

(ग) ईमानदारी सर्वोत्तम नीति है।

(घ) चाँदनी शीतलता प्रदान करती है।

ये वाक्य चिरंतन सत्य होते हैं। आप भी इस प्रकार के पाँच वाक्य लिखिए।

अव्यय / अविकारी
Indeclinable

अव्यय अविकारी शब्द होते हैं। अविकारी (अ + विकारी) का शाब्दिक अर्थ है—जिनमें कोई विकार या परिवर्तन न हो। इस प्रकार, अव्यय वे शब्द होते हैं, जिनमें लिंग, वचन, काल, पुरुष आदि के कारण कोई परिवर्तन नहीं होता। ये शब्द सदा एक-जैसे ही रहते हैं; जैसे—

❖ हिरन तेज़ दौड़ रहा है। पिंजरे के अन्दर तोता है। ❖ मैं और नमन स्कूल जा रहे हैं। ❖ वाह! खुशी दौड़ में प्रथम रही।

उपर्युक्त वाक्यों के रंगीन शब्दों पर काल, लिंग व वचन का कोई प्रभाव नहीं पड़ता। काल, लिंग व वचन के बदलने पर भी इन शब्दों के रूप में कोई परिवर्तन नहीं होता, ये हमेशा एक-से ही रहते हैं, इसीलिए इन्हें अव्यय या अविकारी शब्द कहा जाता है।

1. क्रियाविशेषण (Adverb)

क्रियाविशेषण दो शब्दों के मेल से बना है—क्रिया + विशेषण, जिनका अर्थ है—क्रिया की विशेषता बताने वाला। इस प्रकार, जो शब्द क्रिया के होने की रीति, समय, स्थान, दिशा, परिमाण आदि के बारे में बताते हैं, वे क्रियाविशेषण कहलाते हैं।

निम्नलिखित वाक्यों में रंगीन शब्दों को ध्यानपूर्वक पढ़िए—

❖ इस बार रहाणे बहुत अच्छा खेला। ❖ मम्मी, मैं थोड़ा आराम कर लूँ।

इन वाक्यों में 'अच्छा' और 'थोड़ा' शब्द क्रिया (खेला, आराम) की विशेषता बता रहे हैं। ऐसे शब्द क्रियाविशेषण कहलाते हैं।

क्रियाविशेषण के भेद

क्रियाविशेषण के चार भेद होते हैं—

1. रीतिवाचक क्रियाविशेषण

जो क्रियाविशेषण शब्द क्रिया के घटित होने की विधि, रीति या ढंग से सम्बन्धित विशेषता का बोध कराता है, वह **रीतिवाचक क्रियाविशेषण** कहलाता है; जैसे—

❖ तुम्हें पार्टी में अवश्य जाना चाहिए। ❖ घोड़ा तेज़ दौड़ता है।

❖ हाँ, सब कुछ ठीक है। ❖ तुम सचमुच दिल्ली गये थे।

रीतिवाचक क्रियाविशेषण क्रिया की निम्नलिखित विशेषताओं को भी बताते हैं—

- निश्चयबोधक — सचमुच, हाँ, निःसंदेह, ज़रूर, बेशक, यथार्थ आदि।
- अनिश्चयबोधक — शायद, प्रायः, यथासंभव, अक्सर आदि।
- निषेधबोधक — नहीं, मत, कभी नहीं आदि
- हेतुबोधक — क्यों, किसलिए, अतः, क्योंकि आदि।
- स्वीकृतिबोधक — ठीक, सच, जी, बिलकुल ठीक आदि।

2. स्थानवाचक क्रियाविशेषण

जो क्रियाविशेषण शब्द क्रिया के होने के स्थान या दिशा के बारे में सूचना दें, वे स्थानवाचक क्रियाविशेषण कहलाते हैं; जैसे—

- चोर इधर-उधर ही छिपा होगा। (दिशादर्शक)
- ईशान आस-पास ही होगा। (स्थितिदर्शक)

यहाँ, वहाँ, आगे, पीछे, ऊपर, नीचे, दाहिने, सामने, आर-पार, चारों ओर, बाहर, भीतर आदि स्थानसूचक क्रियाविशेषण हैं।

3. परिमाणवाचक क्रियाविशेषण

जिन क्रियाविशेषण शब्दों से क्रिया के परिमाण या मात्रा से सम्बन्धित विशेषता का बोध हो, उन्हें परिमाणवाचक क्रियाविशेषण कहते हैं; जैसे—

- आकाश बड़ों के सामने कम बोलता है। (अधिकतादर्शक)
- बच्चे बहुत शोर कर रहे हैं। (परिमाणदर्शक)

परिमाणवाचक क्रियाविशेषण निम्नलिखित प्रकार के होते हैं—

- अधिकताबोधक — अधिक, बहुत, प्रचुर, खूब, काफ़ी, पर्याप्त आदि।
- न्यूनताबोधक — थोड़ा, कुछ, न्यून, अल्प, लगभग आदि।
- तुलनाबोधक — इतना, उतना, कम, ज़्यादा, अपेक्षा आदि।
- श्रेणीबोधक — कुछ-कुछ, थोड़ा-थोड़ा, एक-एक करके आदि।
- पर्याप्तबोधक — ठीक, बस, बराबर, काफ़ी आदि।

4. कालवाचक क्रियाविशेषण

क्रिया के होने के समय को सूचित करने वाले क्रियाविशेषण शब्द कालवाचक क्रियाविशेषण कहलाते हैं; जैसे—

- हम परसों हैदराबाद जाएँगे। (समयदर्शक)
- दो दिन से लगातार वर्षा हो रही है। (अवधिदर्शक)

प्रातःकाल, सायंकाल, दोपहर, दिन भर, हमेशा, नित्य, सदैव, प्रतिदिन आदि कालवाचक क्रियाविशेषण हैं।

विशेष—हिन्दी में कुछ शब्दों का प्रयोग विशेषण तथा क्रियाविशेषण दोनों रूपों में किया जाता है। इनके प्रयोग को देखकर ही यह निश्चित हो पाता है कि ये विशेषण के रूप में प्रयुक्त हुए हैं अथवा क्रियाविशेषण के रूप में; जैसे—

शब्द	विशेषण के रूप में	क्रियाविशेषण के रूप में
थोड़ा	चाय में थोड़ा दूध डाल दो।	आजकल वह थोड़ा टहलता है।
अधिक	उसके पास अधिक धन नहीं है।	अधिक बोलना ठीक नहीं होता।
तेज़	चाकू की धार तेज़ है।	कार तेज़ मत चलाओ।

2. सम्बन्धबोधक (Preposition)

जो अव्यय शब्द संज्ञा या सर्वनाम के साथ जुड़कर उनका सम्बन्ध वाक्य के दूसरे शब्दों से बताते हैं, उन्हें सम्बन्धबोधक कहा जाता है; जैसे—

एक शेर पेड़ के नीचे सो रहा था। एक चूहा अपने बिल से बाहर निकला। उसने शेर की तरफ देखा। वह शेर के ऊपर चढ़कर उछल-कूद करने लगा। शेर की आँख खुल गई। उसने चूहे को अपने पंजे में दबा लिया। चूहा डर के मारे काँपने लगा।

उपर्युक्त वाक्यों में रंगीन शब्दों को देखने से पता चलता है कि ये सभी शब्द संज्ञा के बाद आए हैं और उनका सम्बन्ध वाक्य के दूसरे संज्ञा, सर्वनाम शब्दों से प्रकट कर रहे हैं। ये सभी शब्द सम्बन्धबोधक हैं।

सम्बन्धबोधक के भेद

सम्बन्धबोधक के दो भेद होते हैं—1. प्रयोग की दृष्टि से तथा 2. अर्थ की दृष्टि से।

1. प्रयोग की दृष्टि से सम्बन्धबोधकों के दो वर्ग बनाए जा सकते हैं—

(क) विभक्ति के साथ आने वाले; जैसे—के + पास = के पास, से + पहले = से पहले आदि।

(i) वह डर के मारे काँप रहा था। (ii) सुनयना चाँद के समान दिख रही थी।

(iii) राम, दिनेश के साथ विद्यालय गया था। (iv) उसके घर के सामने पार्क है।

(ख) विभक्ति के बिना आने वाले; जैसे—तक, पहले, पीछे, सहित, जैसी, बिना आदि।

(i) विपुल मित्रों सहित खेलने गया है। (ii) सच बोले बिना कोई तरीका नहीं है।

2. अर्थ की दृष्टि से सम्बन्धबोधकों का प्रयोग अनेक प्रकार से किया जाता है; जैसे—

(क) स्थानवाचक	—	सामने, पीछे, समीप आदि।
(ख) कालवाचक	—	पहले, बाद, पश्चात् आदि।
(ग) तुलनावाचक	—	समान, बराबर, अपेक्षा आदि।
(घ) दिशासूचक	—	तरफ, ओर, चारों ओर आदि।
(ङ) उद्देश्यवाचक	—	खातिर, निमित्त आदि।
(च) सहचरवाचक	—	साथ, संग आदि।
(छ) विरोधवाचक	—	उलटा, खिलाफ आदि।
(ज) अभाववाचक	—	बिना, बगैर, अलावा, सिवाय आदि।
(झ) विनिमयवाचक	—	बदले, जगह आदि।
(ञ) कारणवाचक	—	कारण, मारे आदि।
(ट) साधनवाचक	—	द्वारा, जरिए आदि।

इन सम्बन्धबोधक अव्ययों का प्रयोग प्राय: 'के' विभक्ति के साथ होता है।

क्रियाविशेषण तथा सम्बन्धबोधक में अन्तर

जब ये शब्द संज्ञा या सर्वनाम के बाद आते हैं तब ये सम्बन्धबोधक कहलाते हैं, लेकिन क्रिया के साथ लगकर उसकी विशेषता बताने पर ये 'क्रियाविशेषण' बन जाते हैं; जैसे—

क्रियाविशेषण	सम्बन्धबोधक
1. गुरमीत कब चला गया?	वह तुम्हें कब से पुकार रहा है?
2. निकिता अच्छा गाती है।	निकिता अंजलि से अच्छा गाती है।
3. अन्दर आइए।	सब घर के अन्दर आ गए।

3. समुच्चयबोधक (Conjunction)

जो शब्द वाक्य के पदों, वाक्यांशों या वाक्यों को जोड़ते हैं, वे समुच्चयबोधक शब्द कहलाते हैं; जैसे—

- नमन ने खाना खाया और सो गया।
- मैं दौड़ नहीं सकता क्योंकि मेरे पैर में चोट लगी है।
- उसने बहुत विनती की किन्तु किसी ने उसकी बात नहीं सुनी।

ऊपर के वाक्यों में रंगीन शब्द 'और', 'क्योंकि', 'किन्तु' समुच्चयबोधक या योजक शब्द हैं।

समुच्चयबोधक के भेद

समुच्चयबोधक अव्यय दो प्रकार के होते हैं—

1. समानाधिकरण समुच्चयबोधक

जो समुच्चयबोधक समान स्तर के दो या दो से अधिक शब्दों, वाक्यांशों अथवा उपवाक्यों को जोड़ने का काम करते हैं, समानाधिकरण समुच्चयबोधक कहलाते हैं। समानाधिकरण समुच्चयबोधक के चार भेद हैं—

(क) संयोजक—ऐसे शब्द जो दो या दो से अधिक शब्दों, वाक्यांशों या उपवाक्यों को जोड़ने का काम करते हैं, उन्हें संयोजक कहा जाता है; जैसे—

- राम और श्याम एक ही कक्षा में पढ़ते हैं।
- राम के पिता वकील हैं तथा श्याम के पिता डॉक्टर।

(ख) विकल्पक—ऐसे शब्द जो दो या दो से अधिक शब्दों, वाक्यांशों या उपवाक्यों में विकल्प दिखाते हैं, उन्हें विकल्पक कहा जाता है; जैसे—

- आप चाय पिएँगे या कुछ ठण्डा लाऊँ?
- तुम्हें अपने जन्मदिन पर घड़ी चाहिए अथवा मोबाइल फोन?

(ग) विरोधवाचक—ऐसे शब्द जो दो उपवाक्यों में एक के अर्थ का विरोध करते हैं, उन्हें विरोधवाचक कहा जाता है; जैसे—

- हमारी टीम ने बहुत अच्छे खेल का प्रदर्शन किया परन्तु जीत नहीं पाई।
- वह झगड़ालू ही नहीं बल्कि जिद्दी भी है।

(घ) परिणामवाचक—जो समुच्चयबोधक दो उपवाक्यों में से एक उपवाक्य के परिणाम की ओर संकेत करता है, उसे परिणामवाचक कहा जाता है; जैसे—

- चुपचाप बैठो वरना यहाँ से बाहर चले जाओ।
- वह देर से आया इसलिए अध्यापक ने उसे डाँटा।

2. व्यधिकरण समुच्चयबोधक

व्यधिकरण समुच्चयबोधक दो ऐसे उपवाक्यों को जोड़ने का काम करते हैं, जिनमें एक प्रधान या मुख्य उपवाक्य होता है तथा दूसरा आश्रित उपवाक्य। व्यधिकरण समुच्चयबोधक भी चार प्रकार के होते हैं—

(क) हेतुबोधक—जिन शब्दों द्वारा वाक्य में कार्य-कारण का बोध हो, उन्हें हेतुबोधक कहा जाता है; जैसे—

- मुझे अपने मामा जी के यहाँ जाना है इसलिए मैं तुम्हारे जन्मदिन पर न आ सकूँगा।
- आज विद्यालय बन्द है क्योंकि सुबह से ही तेज वर्षा हो रही थी।

(ख) संकेतबोधक—जहाँ दो उपवाक्यों के प्रारम्भ में अगले योजक की ओर संकेत किया गया हो, उ संकेतबोधक कहते हैं; जैसे—

- यदि तुम आते तो मैं भी मेले में चलता।
- यद्यपि वह धनी है तथापि बहुत कंजूस है।

(ग) स्वरूपबोधक—जिस समुच्चयबोधक को पूर्व प्रयुक्त शब्द या वाक्यांश के स्पष्टीकरण के लिए प्रयोग कि जाता है, उसे स्वरूपबोधक कहते हैं; जैसे—

- सभी जानते हैं कि चुगली नेहा ने ही की है।
- हँसते हुए बच्चे ऐसे लग रहे हैं मानो फूल खिल गए हों।

(घ) उद्देश्यबोधक—जो समुच्चयबोधक कार्य करने के उद्देश्य का बोध कराते हैं, उन्हें उद्देश्यबोधक कहा जाता है जैसे—

- तेज़ी से चलो जिससे गाड़ी मिल सके।
- वह दिन-रात पढ़ रहा है ताकि परीक्षा में अच्छे अंक आ सकें

4. विस्मयादिबोधक (Interjection)

जो अव्यय शब्द आश्चर्य, खुशी, घृणा, शोक, चेतावनी आदि भावों को व्यक्त करते हैं, वे विस्मयादिबोधक कहला हैं; जैसे—

- ओफ! बेचारा चलती गाड़ी से गिर गया।
- शाबाश! बहुत अच्छी कविता लिखी है।
- छि:! कितनी गन्दगी है।
- बाप रे! कितना बड़ा साँप है।

उपर्युक्त वाक्यों के प्रारम्भ में प्रयुक्त रंगीन शब्द मन के भावों (क्रमश: शोक, आश्चर्य, प्रशंसा, घृणा, भय) व व्यक्त कर रहे हैं। ये सभी शब्द 'विस्मयादिबोधक' कहे जाते हैं।

विभिन्न मनोभावों पर आधारित विस्मयादिबोधक शब्दों के प्रकार और उनमें प्रयुक्त अव्यय

(क) विस्मयबोधक	—	हैं! क्या! एँ! अरे! आह! बाप रे!
(ख) प्रशंसाबोधक	—	शाबाश! खूब! धन्य! सुन्दर! बहुत! खूब!
(ग) घृणाबोधक	—	छि:! धत् ! धिक्कार! धिक् !
(घ) हर्षबोधक	—	वाह! आहा! खूब! बहुत अच्छा!
(ङ) शोक (पीड़ा) बोधक	—	हाय! उफ़! हाय राम! ओह!
(च) चेतावनीबोधक	—	खबरदार! हटो! बचो! सावधान!

(छ) स्वीकृतिबोधक — जी! अच्छा! ठीक! बहुत अच्छा!

(ज) तिरस्कारबोधक — दूर! हट!

(झ) आशीर्वादबोधक — जीते रहो! दीर्घायु हो!

(ञ) क्रोधबोधक — चुप! ठहर!

(ट) सम्बोधनबोधक — अरे! ओ! हे!

5. निपात (Particle)

वे अव्यय जो किसी पद (शब्द) के बाद लगकर उसके अर्थ में विशेष बल या भाव पैदा कर देते हैं, उन्हें **निपात** कहा जाता है। बल देने के कारण इन्हें अवधारणामूलक शब्द भी कहा जाता है; जैसे—

- मेरी मदद आपको ही करनी पड़ेगी।
- मैं तो चल रहा हूँ।
- थोड़ी देर रुको, हम भी तुम्हारे साथ चलेंगे।
- मैं उसे जानता भर हूँ।

विशेष—किसी वाक्य में निपात शब्द का स्थान बदल जाने मात्र से उसके अर्थ में परिवर्तन आ जाता है—

- विमल ने मुझे भी बुलाया है।
- विमल ने भी मुझे बुलाया है।
- विमल ने मुझे बुलाया भी है।

निपातों के भेद

शब्दों, शब्दबन्धों या वाक्यों को निपात जो अर्थ प्रदान करते हैं, उनके अनुसार इनके निम्नलिखित भेद होते हैं—

1. **स्वीकारार्थक निपात**—हाँ, जी, जी हाँ, हूँ।
   हाँ, मैं पहुँचते ही खबर दूँगा।
2. **नकारार्थक निपात**—नहीं, जी नहीं, न, ना ही।
   मुझे उसका इस तरह बात करना अच्छा नहीं लगा।
3. **निषेधात्मक निपात**—मत।
   मुझे डाँटो मत, मैंने कोई गलती नहीं की है।
4. **प्रश्नार्थक निपात**—क्या, क्यों न (ना)।
   क्या तुम हमारे साथ चलोगे?
5. **विस्मयादिबोधक निपात**—क्या, काश।
   क्या बढ़िया भोजन है!
6. **बलप्रदायक या सीमाबोधक निपात**—तो, ही, भी, तक, जो, न (ना) सिर्फ, केवल।
   मुझे छोड़ो तो सही, तुम्हारा काम करवा दूँगा।
7. **ध्यानाकर्षक निपात**—भर, केवल, मात्र, सिर्फ।
   आपको भले ही यह बात न मालूम हो, इसको शहर भर जानता है।

8. **तुलनार्थक-बलप्रदायक निपात**—सा, सी।

कैसी पागलों की सी बातें करते हो तुम?

9. **आदरसूचक निपात**—जी।

बाबू जी ! मैं वह गीत सुनाऊँगा कि आप झूमते रह जाएँगे।

10. **अवधारणाबोधक निपात**—ठीक, लगभग, करीब, तरकीब।

कल लगभग इसी समय वह यहाँ आया था।

11. **निर्देशार्थक निपात**—ले, लो, कीजिए।

लो , खाना तैयार है।

1. सही उत्तर पर सही (✓) का चिह्न लगाइए—

(क) अव्यय कहलाते हैं—

(i) जो शब्द सदैव परिवर्तित रहते हैं।

(ii) जो शब्द विकारी होते हैं।

(iii) वे शब्द जो प्रत्येक काल, लिंग, वचन व कारक में सदा अपरिवर्तित रहते हैं।

(ख) बाहर बारिश हो रही है। रेखांकित क्रियाविशेषण शब्द किस श्रेणी में आता है?

(i) कालवाचक (ii) परिमाणवाचक (iii) स्थानवाचक

(ग) मेरा विद्यालय डाकखाने ..... है।

(i) के सामने (ii) की भाँति (iii) के यहाँ

(घ) दो वाक्यों को जोड़ने वाले अव्यय को क्या कहते हैं।

(i) सम्बन्धबोधक (ii) क्रियाविशेषण (iii) समुच्चयबोधक

(ङ) विस्मयादिबोधक शब्दों का प्रयोग ..... में करते हैं।

(i) अन्त (ii) प्रारम्भ (iii) मध्य

(च) बलप्रदायक निपात का उदाहरण है—

(i) तो (ii) काश (iii) करीब

2. निम्नलिखित वाक्यों में से विशेषण और क्रियाविशेषण शब्द छाँटकर लिखिए—

वाक्य	विशेषण शब्द	क्रियाविशेषण शब्द
(क) थोड़े अतिथि आए थे। सबने थोड़ा-थोड़ा ही खाया।	.....	.....
(ख) चाकू तेज़ है। इसे तेज़ी से मत चलाओ।	.....	.....
(ग) उसके पास बहुत रुपये हैं, इसलिए वह बहुत खर्च करता है।	.....	.....
(घ) कॉफी में चीनी ज़्यादा थी। मैं ज़्यादा नहीं पी पाया।	.....	.....
(ङ) अर्चित अधिक अंक लाना चाहता है इसलिए अधिक पढ़ रहा है।	.....	.....

3. निम्नलिखित वाक्यों में उपयुक्त सम्बन्धबोधक भरिए—

(क) अच्छे चरित्र ..... जीवन बेकार है।

(ख) आजकल कोई भी देश अमेरिका ..... बोलने का साहस नहीं कर सकता।

(ग) देशभक्तों ने देश ..... अपना सर्वस्व अर्पित कर दिया।

(घ) आजकल मैं अपने चाचा जी ..... रह रहा हूँ।

4. कॉलम 'क' का कॉलम 'ख' से मिलान कीजिए—

क	ख
कालवाचक	के सामने
दिशासूचक	के समान
उद्देश्यवाचक	के पहले
स्थानवाचक	के बिना
अभाववाचक	की ओर
तुलनावाचक	के निमित्त

5. निम्नलिखित वाक्यों में समुच्चयबोधक अव्ययों को रेखांकित कर उनके भेद लिखिए—

(क) वह व्यक्ति घर से बाहर निकला और अपने मित्र से मिला। .....

(ख) आप मनुष्य नहीं बल्कि देवता हैं। .....

(ग) खूब मन लगाकर पढ़ो ताकि परीक्षा में अच्छे नम्बर ला सको। .....

(घ) अंजलि को कल बुखार था इसलिए वह स्कूल नहीं आई। .....

(ङ) विराट ने खाना नहीं खाया क्योंकि वह बीमार है। .....

6. उपयुक्त विस्मयादिबोधक अव्यय चुनकर रिक्त स्थान भरिए—

शाबाश! हे राम! अहा! क्या! देखो! हाय! वाह!

(क) ..... कल मामा जी और मामी जी भी आ रहे हैं?

(ख) ..... रेलगाड़ी छूट गई।

(ग) ..... कितना अच्छा मौसम है!

(घ) ..... ऐसा कैसे हो गया!

(ङ) ..... कितनी बढ़िया बात की है तुमने।

7. दिए गए वाक्यों के रिक्त स्थानों की पूर्ति उपयुक्त निपात द्वारा कीजिए—

तक भी ही तो

(क) तुमने वहाँ जाकर फोन ..... नहीं किया।

(ख) वैसे तो मैं चाय ..... पी लेता हूँ, पर आज कॉफी ..... पीऊँगा।

(ग) मुझे ..... निमन्त्रण-पत्र कल ..... मिल गया था, आज उसे ..... मिल गया।

(घ) तुम ..... फँसोगे, मुझे ..... फँसवाओगे।

(ङ) मैंने केवल तुम्हें ..... बुलाया है, किसी अन्य को नहीं।

8. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए—

(क) अव्यय से आप क्या समझते हैं? इसके कितने भेद होते हैं?

(ख) क्रियाविशेषण के भेदों के नाम बताइए और प्रत्येक को उदाहरण देकर समझाइए।

(ग) सम्बन्धबोधक अव्यय किसे कहते हैं? उदाहरण देकर अपने कथन की पुष्टि कीजिए।

(घ) विस्मयादिबोधक अव्यय किसे कहते हैं? सोदाहरण लिखिए।

(ङ) निपात के भेदों के नाम बताइए तथा प्रत्येक के उदाहरण भी दीजिए।

रचनात्मक गतिविधियाँ

1. आप प्राय: घर में जब टी०वी० देखते हैं तो और कुछ भी करते हैं; जैसे—कुछ महिलाएँ जब टी०वी० देखती हैं तो साथ-साथ स्वेटर भी बुन लेती हैं।

इसी प्रकार ऐसे कौन-कौन से काम हैं, जिन्हें करते हुए आप या आपके परिवार के सदस्य कुछ और भी करते हैं। ऐसे कामों की एक सूची बनाइए।

2. विस्मयादिबोधक अव्यय आश्चर्य, घृणा, शोक आदि भावों को प्रकट करते हैं।

विभिन्न प्रकार के विस्मयादिबोधक अव्ययों का प्रयोग कर वाक्य बनाइए। देखते हैं, आप कितने भावों का प्रयोग करके वाक्य बना सकते हैं।

11

अशुद्धि शोधन
Correction of Error

भाषा में वर्तनी या वाक्य-रचना संबंधी अशुद्धि अधूरी शिक्षा की निशानी है। भाषा सीखने के प्रारंभिक स्तर पर जानकारी के अभाव में शब्दों की वर्तनी अथवा वाक्यों की संरचना में अशुद्धियाँ होती हैं। कालांतर में अभ्यासवश इन अशुद्धियों में कमी आती है। किंतु, ध्यान नहीं देने के कारण कुछ अशुद्धियाँ आदत बन जाती हैं। समय रहते इन्हें ठीक कर लेना अत्यंत आवश्यक है; अन्यथा अशुद्ध प्रयोग की आदत पड़ जाने के बाद पढ़े-लिखे लोग भी भद्दी और बचकानी गलतियाँ करते देखे गए हैं।

नीचे कुछ शब्दों की वर्तनी एवं वाक्य रचना में संबंधित कुछ सामान्य अशुद्धियों के उदाहरण शुद्धि-शोधन के साथ प्रस्तुत हैं—

मात्रा-सम्बन्धी अशुद्धियाँ

अशुद्ध	शुद्ध
अवश्यक	आवश्यक
व्यवहारिक	व्यावहारिक
अहार	आहार
अतिथी	अतिथि
बारात	बरात
दृष्टव्य	द्रष्टव्य

अशुद्ध	शुद्ध
भोगौलिक	भौगोलिक
निरोग	नीरोग
बिमारी	बीमारी
वधु	वधू
पत्नि	पत्नी
रुप	रूप

अशुद्ध	शुद्ध
ग्रहणी	गृहिणी
हिन्दूस्तान	हिन्दुस्तान
गुरू	गुरु
नुपूर	नूपुर
रितु	ऋतु
प्रथक	पृथक

व्यंजन-सम्बन्धी अशुद्धियाँ

अशुद्ध	शुद्ध
प्रगट	प्रकट
ज्येष्ट	ज्येष्ठ
रावन	रावण
प्रसंशा	प्रशंसा
वृहत्	बृहत्
बाणी	वाणी
विघालय	विद्यालय
आर्दश	आदर्श

अशुद्ध	शुद्ध
कोष्टक	कोष्ठक
करुना	करुणा
पुन्य	पुण्य
बसन्त	वसन्त
जबाब	जवाब
अनुसंशा	अनुशंसा
धोतक	द्योतक
अन्तराष्ट्रीय	अन्तर्राष्ट्रीय

अशुद्ध	शुद्ध
प्रनाम	प्रणाम
भूक	भूख
चिठ्ठी	चिट्ठी
बबण्डर	बवण्डर
त्रिसूल	त्रिशूल
मुसकिल	मुश्किल
आर्शीवाद	आशीर्वाद
कार्यकर्म	कार्यक्रम

संयुक्ताक्षर सम्बन्धी अशुद्धियाँ

अशुद्ध	शुद्ध
उज्वल	उज्ज्वल
कवियत्री	कवयित्री
मँहगाई	महँगाई
अतिश्योक्ति	अतिशयोक्ति
स्वास्थ	स्वास्थ्य

अशुद्ध	शुद्ध
उपलक्ष	उपलक्ष्य
सन्यासी	संन्यासी
संमान	सम्मान
आन्नद	आनन्द
ज्योत्सना	ज्योत्स्ना

अशुद्ध	शुद्ध
मध्यान्ह	मध्याह्न
सन्मुख	सम्मुख
शमशान	श्मशान
प्रज्जवलित	प्रज्वलित
निसन्तान	निस्सन्तान

वाक्य-रचना संबंधी अशुद्धियाँ

व्याकरणिक नियमों की जानकारी के अभाव में वाक्य-रचना संबंधी अशुद्धियाँ होती हैं। वाक्य-रचना की अशुद्धियों में लिंग, वचन, पुरुष, वाच्य के आधार पर शब्दों के रूपांतरण और क्रिया की अन्विति में होने वाली भूलें प्रमुख हैं। साथ ही पद, क्रम और परसर्ग संबंधी गलतियाँ भी इसी श्रेणी में आती हैं। वाक्य-रचना की सामान्य अशुद्धियों के कुछ उदाहरण अशुद्धियाँ-शोधन के साथ नीचे प्रस्तुत हैं—

अशुद्ध वाक्य	शुद्ध वाक्य
वह सोमवार के दिन चला गया।	वह सोमवार को चला गया।
हमें अपने देश पर अहंकार है।	हमें अपने देश पर गर्व है।
तुझको कुछ नहीं पता।	तुझे कुछ नहीं पता।
उन्होंने कहाँ जाना है?	उन्हें कहाँ जाना है?
कमला बहुत विद्वान है।	कमला बहुत विदुषी है।
दही जम गई है।	दही जम गया है।
वह जल्दी लौट आएँगे।	वे जल्दी लौट आएँगे।
बच्चे की आँखों से आँसू बहने लगा।	बच्चे की आँखों से आँसू बहने लगे।
बच्चा छत पर से गिर गया।	बच्चा छत से गिर गया।
पतंगें आकाश पर उड़ रही हैं।	पतंगें आकाश में उड़ रही हैं।
एक फूलों की माला ले आओ।	फूलों की एक माला ले आओ।
मीठा संगीत सुनकर आनन्द आ गया।	मधुर संगीत सुनकर आनन्द आ गया।
हमने कई पुस्तकें पढ़ा हैं।	हमने कई पुस्तकें पढ़ी हैं।
वे दर्शन देने आया था।	वे दर्शन देने आये थे।
नल से लगातार पानी वह रहा था।	नल से पानी लगातार बह रहा था।
यहाँ कूड़ा नहीं फेंको।	यहाँ कूड़ा मत फेंको।

अशुद्ध वाक्य	शुद्ध वाक्य
तुम कर रहे हो क्या?	तुम क्या कर रहे हो?
श्रीरामचरितमानस ने तुलसीदास लिखा।	तुलसीदास ने श्रीरामचरितमानस लिखा।
रेनू सोमवार के दिन व्रत रखती है।	रेनू सोमवार को व्रत रखती है।
बच्चे सायंकाल के समय बाहर खेल रहे थे।	बच्चे सायंकाल बाहर खेल रहे थे।
आज का दीन बहुत शुभ है।	आज का दिन बहुत शुभ है।
कल श्याम को मेरे भाई आएँगे।	कल शाम को मेरे भाई आएँगे।
वह व्यक्ति सज्जन है।	वह सज्जन है।
मुझे पक्का ईश्वर पर विश्वास है।	मुझे ईश्वर पर पक्का विश्वास है।
मेरा तो प्राण ही निकल गया।	मेरे तो प्राण ही निकल गए।
श्रीरामचरितमानस की भाषा अवधि है।	श्रीरामचरितमानस की भाषा अवधी है।
मुझे चाहिए कुछ ताजे फल।	मुझे कुछ ताजे फल चाहिए।
गाड़ी चलती-चलती रुक गई।	गाड़ी चलते-चलते रुक गई।
किसी और नौकर को भेजो।	किसी दूसरे नौकर को भेजो।
हमें हमारा काम स्वयं करना चाहिए।	हमें अपना कार्य स्वयं करना चाहिए।
दिल के अन्दर प्यार होना चाहिए।	दिल में प्यार होना चाहिए।

1. निम्नलिखित शब्दों के शुद्ध रूप के सामने सही (✓) का चिह्न लगाइए—

(क)	अविष्कार	आविष्कार	आविषकार	आविश्कार
(ख)	सन्नयासी	संयासी	सन्यासी	संन्यासी
(ग)	पूजनीय	पूज्यनीय	पुजनीय	पुज्यनीय
(घ)	कवयित्री	कवियित्री	कवियत्री	कवियित्रि
(ङ)	प्रज्वलित	प्रज्ज्वलित	प्रजज्वलित	परज्ज्वलित

2. निम्नलिखित शब्दों की वर्तनी शुद्ध कीजिए—

भोगौलिक	.....	ज्योत्सना	.....	नुपूर	.....
बाणी	.....	वृहत्	.....	स्वास्थ	.....
आर्शीवाद	.....	ज्येष्ट	.....	निरोग	.....
मृत्यू	.....	प्रसंशा	.....	धोतक	.....
प्रमात्मा	.....	ग्रहणी	.....	मँहगाई	.....

3. निम्नलिखित वाक्यों को शुद्ध कीजिए—

(क) नेहा कमर कसी बैठी है।

(ख) उसने भी आपसे बात करनी है।

(ग) आज मैंने बड़ा मजा किया।

(घ) तुफान के कारण अनेकों लोग मारे गए।

(ङ) मेरा पिताजी दफ्तर गया है।

(च) कृपया मेरे घर पधारने की कृपा करें।

(छ) जितनी करनी वैसी भरनी।

(ज) हम कल कह आपसे रहे थे।

4. वाक्य के रिक्त स्थान के लिए उपयुक्त शब्द वाला विकल्प चुनिए—

(क) ..... भाई बहुत अच्छे हैं। (मेरा, मेरी, मेरे)

(ख) पिताजी ने हस्ताक्षर कर .....। (दिया है, दिए हैं, दी है)

(ग) पेड़ ..... तोता बैठा है। (ऊपर, में, पर)

(घ) आजकल पाँच ..... में क्या आता है। (रुपया, रुपये, रुपयों)

(ङ) सेठ करोड़ीमल ..... कंजूस था। (बहुत, बड़ा, अधिक)

(च) ..... बहुत अच्छा लगता है। (वे, वह, वो)

(छ) यहाँ कूड़ा .....फेंको। (मत, नहीं, न)

(ज) हमने खाना खा .....। (लिया, लिए, ली)

रचनात्मक गतिविधियाँ

- नीचे दिए गए अनुच्छेद में वर्तनी सम्बन्धी अनेक गलतियाँ हैं जिनका आपको संशोधन करना है—

उन्नती के पथ पर चलने वाला क्षात्र, प्रातकाल सूर्यदय से पुर्व ही उठ जाता है। नित्यक्रम से निवृत होकर वह अस्नान करता है। तत्पशचात् भगवन से प्राथना करता है कि वह सदा उसका पथपदर्शक रहे। इसके बाद व्ययाम करना उत्तम छार्त के लिए अवश्यक है। व्ययाम के बाद थोडा जलपन करना हितकार होता है। उसके बाद देनिक समाचार-पर्त भी देखन चाहीए ताकी सन्सार, देश, नगर तथा पडोस की गतीविधियों का परिचेय मिल जाए। इसका ग्यान न होने से कबी-कबी बड़ी हानी होती हे।

12

सन्धि
Joining

'सन्धि' शब्द का अर्थ है—मेल। दो शब्दों के मिलने पर पहले शब्द का अन्तिम वर्ण और दूसरे शब्द का पहला वर्ण आपस में मिल जाता है तथा एक नया रूप धारण कर लेता है। ध्वनियों के इस मेल के कारण हुए विकार या परिवर्तन को व्याकरण में सन्धि कहते हैं। उदाहरणार्थ—

- शरणागत की रक्षा करना राजपूती आन है।
- बेंच पर नागरिकों से घिरे सज्जन विराजमान थे।
- संन्यासी के मन से दुर्भावना जाती रही।

पहले वाक्य में 'शरणागत' शब्द 'शरण + आगत' से बना है। 'शरण' के अन्त का 'अ' और 'आगत' के आरम्भ का 'आ' मिलकर 'आ' बन गया है। इसमें दो स्वरों (अ + आ) के मिलने से सन्धि हुई है।

दूसरे वाक्य में 'सज्जन' शब्द 'सत् + जन' के योग से बना है। 'सत्' के अन्त का 'त्' और 'जन' के आरम्भ का 'ज' मिलकर 'ज्ज' बना है। यहाँ दो व्यंजनों (त् + ज) में सन्धि हुई है।

तीसरे वाक्य में 'दुर्भावना' शब्द (दु: + भावना) में 'दु:' में विसर्ग से पहले 'उ' स्वर है और 'भावना' के आरम्भ में 'भा' वर्ण है। अत: विसर्ग का 'र्' होकर 'दुर्भावना' शब्द बना है। यहाँ विसर्ग की 'भा' के साथ सन्धि हुई है।

सन्धि-विच्छेद—सन्धियुक्त शब्दों को अलग-अलग करने की प्रक्रिया को सन्धि-विच्छेद कहते हैं। इसमें सन्धि-युक्त शब्द को फिर से सन्धि-पूर्व अवस्था में लाकर लिखा जाता है। उपर्युक्त तीनों पदों का सन्धि-विच्छेद देखिए—

शरणागत = शरण + आगत　　सज्जन = सत् + जन　　दुर्भावना = दु: + भावना

सन्धि के भेद

सन्धि निम्नलिखित तीन प्रकार की होती है—

1. स्वर सन्धि

स्वर सन्धि में दो स्वरों का मेल होता है; जैसे—परम + अर्थ = परमार्थ (अ + अ = आ) यहाँ दो स्वरों (अ + अ) का मेल हुआ है। स्वर सन्धि के पाँच उपभेद हैं—

(क) दीर्घ सन्धि—जब ह्रस्व या दीर्घ अ, इ, उ के बाद ह्रस्व या दीर्घ अ, इ, उ आएँ तो इसके मेल से दीर्घ आ, ई तथा ऊ बन जाता है। स्वरों के इस मेल तथा मेल के कारण हुए परिवर्तन को दीर्घ सन्धि कहा जाता है; जैसे—

अ + अ = आ	भाव + अर्थ = भावार्थ	सूर्य + अस्त = सूर्यास्त
अ + आ = आ	रत्न + आकर = रत्नाकर	योग + आसन = योगासन
आ + अ = आ	यथा + अर्थ = यथार्थ	रेखा + अंकित = रेखांकित
आ + आ = आ	महा + आशय = महाशय	महा + आत्मा = महात्मा
इ + इ = ई	रवि + इन्द्र = रवीन्द्र	मुनि + इन्द्र = मुनीन्द्र
इ + ई = ई	कपि + ईश्वर = कपीश्वर	गिरि + ईश = गिरीश

ई + इ = ई	शची + इन्द्र = शचीन्द्र	लक्ष्मी + इच्छा = लक्ष्मीच्छा
ई + ई = ई	रजनी + ईश = रजनीश	
उ + उ = ऊ	सु + उक्ति = सूक्ति	गुरु + उपदेश = गुरूपदेश
उ + ऊ = ऊ	लघु + ऊर्मि = लघूर्मि	
ऊ + उ = ऊ	वधू + उत्सव = वधूत्सव	
ऊ + ऊ = ऊ	वधू + ऊर्मि = वधूर्मि	

(ख) गुण सन्धि—जब अ, आ का इ, ई और उ, ऊ से मेल होता है तो इनके स्थान पर क्रमशः 'ए' और 'ओ' हो जाता है। अ, आ का ऋ से मेल होने पर अर् हो जाता है। स्वरों का यह मेल **गुण सन्धि** कहलाता है; जैसे—

अ + इ = ए	नर + इन्द्र = नरेन्द्र	भारत + इन्दु = भारतेन्दु
आ + इ = ए	यथा + इष्ट = यथेष्ट	महा + इन्द्र = महेन्द्र
अ + ई = ए	गण + ईश = गणेश	एक + ईश्वर = एकेश्वर
आ + ई = ऐ	उमा + ईश = उमेश	राजा + ईश = राजेश
अ + उ = ओ	सूर्य + उदय = सूर्योदय	पर + उपकार = परोपकार
आ + उ = ओ	महा + उत्सव = महोत्सव	गंगा + उदय = गंगोदय
अ + ऊ = ओ	नव + ऊढ़ा = नवोढ़ा	
आ + ऊ = ओ	गंगा + ऊर्मि = गंगोर्मि	
अ + ऋ = अर्	सप्त + ऋषि = सप्तर्षि	
आ + ऋ = अर्	महा + ऋषि = महर्षि	

(ग) वृद्धि सन्धि—यदि अ, आ के बाद ए-ऐ हो तो दोनों के मेल से 'ऐ' हो जाता है तथा यदि अ, आ के बाद ओ-औ हो तो दोनों के मेल से 'औ' हो जाता है; जैसे—

अ + ए = ऐ	एक + एक = एकैक	
आ + ए = ऐ	सदा + एव = सदैव	
अ + ऐ = ऐ	मत + ऐक्य = मतैक्य	
आ + ऐ = ऐ	महा + ऐश्वर्य = महैश्वर्य	
अ + ओ = औ	दन्त + ओष्ठ = दन्तौष्ठ	
अ + औ = औ	वन + औषधि = वनौषधि	
आ + ओ = औ	महा + ओजस्वी = महौजस्वी	
आ + औ = औ	महा + औषधि = महौषधि	

(घ) यण् सन्धि—जब ह्रस्व या दीर्घ इ, उ, ऋ के बाद इनसे भिन्न कोई स्वर आए तो, इ का य् , उ का व् और ऋ का र् हो जाता है। स्वरों के इस मेल को **यण् सन्धि** कहा जाता है; जैसे—

इ + अ = य्	यदि + अपि = यद्यपि	
इ + उ = यु	उपरि + उक्त = उपर्युक्त	

इ + ए = ये		प्रति + एक = प्रत्येक	
उ + आ = वा		सु + आगत = स्वागत	
उ + इ = वि		अनु + इति = अन्विति	
उ + ए = वे		अनु + एषण = अन्वेषण	
ऋ + आ = रा		मातृ + आज्ञा = मात्राज्ञा	

(ङ) अयादि सन्धि—जब ए-ऐ, ओ-औ के बाद इनमें भिन्न स्वर आ जाता है, तो इनके स्थान पर ए का अय्, ऐ का आय्, ओ का अव् और औ का आव् हो जाता है। स्वरों के इस प्रकार के मेल को अयादि सन्धि कहते हैं; जैसे—

ए + अ = अय्		ने + अन = नयन	
ऐ + अ = आय्		नै + अक = नायक	
ऐ + इ = आयि		गै + इका = गायिका	
ओ + अ = अव्		भो + अन = भवन	
औ + अ = आव्		पौ + अक = पावक	
औ + इ = आवि		नौ + इक = नाविक	
औ + उ = आवु		भौ + उक = भावुक	

2. व्यंजन सन्धि

किसी व्यंजन का व्यंजन अथवा स्वर से मेल हो जाने पर जो परिवर्तन होता है, उसे व्यंजन सन्धि कहा जाता है। व्यंजन सन्धि के प्रमुख नियम इस प्रकार हैं—

(i) वर्ग के पहले वर्ण का तीसरे वर्ण में परिवर्तन—

दिक् + दर्शन = दिग्दर्शन
दिक् + अम्बर = दिगम्बर

(ii) वर्ग के पहले वर्ण का पाँचवें वर्ण में परिवर्तन—

जगत् + नाथ = जगन्नाथ
सत् + मार्ग = सन्मार्ग

(iii) 'त' के बाद 'ल' हो तो 'त' 'ल' में बदल जाता है—

तत् + लीन = तल्लीन

(iv) 'त' के बाद यदि ज/झ हो तो 'त' 'ज' में बदल जाता है—

सत् + जन = सज्जन
जगत् + जननी = जगज्जननी

(v) 'त' के बाद यदि 'ट' 'ड' हो तो 'ट' 'ड' में बदल जाता है—

उत् + डयन = उड्डयन
तत् + टीका = तट्टीका

(vi) 'त' के बाद यदि 'श' हो तो 'त' का 'च' और 'श' का 'छ' हो जाता है—

उत् + श्वास = उच्छवास
उत् + शिष्ट = उच्छिष्ट

(vii) 'त' के बाद यदि 'च' हो तो 'त' का 'च' हो जाता है—

उत् + चारण = उच्चारण

(viii) यदि 'त' के बाद 'ह' हो तो 'त' का 'द' और 'ह' का 'ध' हो जाता है—

उत् + हार = उद्धार

3. विसर्ग सन्धि

विसर्ग के बाद किसी स्वर या व्यंजन आने से विसर्ग में जो परिवर्तन होता है, वह विसर्ग सन्धि कहलाती है; जैसे—

नि: + चय	= निश्चय	नि: + तेज	= निस्तेज	नि: + टुर	= निष्टुर
नि: + फल	= निष्फल	नि: + पाप	= निष्पाप	दु: + उपयोग	= दुरुपयोग
दु: + लभ	= दुर्लभ	पुन: + जन्म	= पुनर्जन्म	मन: + विकार	= मनोविकार
वय: + वृद्ध	= वयोवृद्ध	नि: + रोग	= नीरोग	नि: + रस	= नीरस

हिन्दी की सन्धियाँ

सन्धि हर एक भाषा में होती है। हिन्दी में बोली जाने वाली भाषा में सन्धि होती है, लेकिन लिखाई में ऐसे बहुत क शब्द हैं, जिनमें सन्धि दिखाई जाती है। कुछ शब्द इस प्रकार हैं—

(i) सब + ही = सभी, जब + ही = जभी, अब + ही = अभी, तब + ही = तभी

(ii) यह + ही = यही, वह + ही = वही, उस + ही = उसी, किस + ही = किसी

(iii) कहाँ + ही = कहीं, वहाँ + ही = वहीं, यहाँ + ही = यहीं

ध्यान रहे—हिन्दी की सन्धियों पर संस्कृत के नियम लागू नहीं होते। हिन्दी ने कुछ अपने नियम विकसित कर लिए हैं।

कुछ करके सीखें

1. सही उत्तर पर सही (✓) का चिह्न लगाइए—

(क) सन्धि कहते हैं—

(i) दूर-दूर के वर्णों के मेल को ◯ (ii) पास-पास के वर्णों के मेल को ◯

(iii) वर्णों के वियोग को ◯

(ख) दीर्घ, गुण, वृद्धि, यण् और अयादि—ये किस सन्धि के उपभेद हैं?

(i) व्यंजन सन्धि ◯ (ii) स्वर सन्धि ◯ (iii) विसर्ग सन्धि ◯

(ग) 'पौ + अन' से बना शब्द है—

(i) पवन ◯ (ii) पाहुन ◯ (iii) पावन ◯

(घ) 'रामानुज' शब्द का सन्धि-विच्छेद है—

(i) राम + अनुज ◯ (ii) रामा + नुज ◯ (iii) रा + मनुज ◯

2. सन्धि कीजिए—

शिव	+	आलय	=	गंगा	+	ऊर्मि	= .....
सदा	+	एव	=	चित्	+	मय	= .....
उत्	+	ज्वल	=	अनु	+	छेद	= .....
तपः	+	बल	=	दुः	+	कर	= .....
नमः	+	कार	=	नदी	+	ईश	= .....
मातृ	+	आज्ञा	=	सत्	+	गति	= .....
षट्	+	दर्शन	=	सम्	+	कल्प	= .....
अति	+	आचार	=	सुर	+	इन्द्र	= .....
निः	+	छल	=	निः	+	दुर	= .....

3. निम्नलिखित शब्दों का सन्धि-विच्छेद करते हुए सन्धि का भेद लिखिए—

(क)	सदाचार	=	+	.....
(ख)	निस्तेज	=	+	.....
(ग)	मतैक्य	=	+	.....
(घ)	तपोवन	=	+	.....
(ङ)	उल्लास	=	+	.....
(च)	महेश्वर	=	+	.....

4. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए—

(क) सन्धि किसे कहते हैं? इसके कितने भेद होते हैं?

(ख) स्वर सन्धि के कितने उपभेद होते हैं? सोदाहरण लिखिए।

(ग) स्वर सन्धि और व्यंजन सन्धि में क्या अन्तर है?

(घ) विसर्ग सन्धि से आप क्या समझते हैं?

रचनात्मक गतिविधियाँ

- सन्धि के तीनों भेद (स्वर सन्धि, व्यंजन सन्धि और विसर्ग सन्धि) के नाम अलग-अलग पर्चियों पर लिख लें। एक-एक पर्ची अपनी कक्षा के छात्रों को दें। जिस छात्र को जो पर्ची मिलती है, वह उस सन्धि के तीन-तीन शब्द बताए। अगर कोई छात्र तीन शब्द नहीं बतलाता है तो दूसरा छात्र उसकी मदद करे।

13

उपसर्ग, प्रत्यय और समास
Prefix, Suffix and Compound

1. उपसर्ग (Prefix)

वे वाक्यांश जो मूल (रूढ़) शब्द (संज्ञा, विशेषण आदि) के पहले जुड़ते हैं, उपसर्ग कहलाते हैं। इनके योग से शब्द के अर्थ में विशेषता आ जाती है; जैसे—

मूल शब्द	उपसर्ग	व्युत्पन्न (यौगिक) शब्द
दान	आ, प्र	आदान, प्रदान
ज्ञान	अ, वि	अज्ञान, विज्ञान
गुण	अव, निर्	अवगुण, निर्गुण

इन शब्दों को पढ़ने के बाद निम्नलिखित तथ्यों का पता चलता है—

- शब्दों का निर्माण उनके आरम्भ में शब्दांशों का प्रयोग करके किया गया है।
- इन शब्दांशों का स्वतन्त्र प्रयोग नहीं किया जाता, ये शब्दों के आरम्भ में जोड़े जाते हैं।
- शब्दांश जुड़ने पर मूल शब्द के अर्थ में परिवर्तन आ जाता है; जैसे—धर्म-अधर्म (विपरीत अर्थ दे रहे हैं)।

हिन्दी में प्रचलित अधिकतर उपसर्ग संस्कृत से आए हैं। इनके अतिरिक्त कुछ उपसर्ग हिन्दी के अपने हैं और कुछ अरबी-फ़ारसी व अंग्रेज़ी के। इन उपसर्गों का संक्षिप्त विवरण नीचे दिया जा रहा है—

1. संस्कृत के उपसर्ग

	उपसर्ग	अर्थ	उदाहरण
1.	अति	अधिक	अत्याचार, अत्यधिक, अतिरिक्त, अत्यन्त
2.	अनु	पीछे	अनुचर, अनुकूल, अनुसार, अनुमान
3.	अप	बुरा, हीन, अपूर्ण	अपशब्द, अपमान, अपहरण, अपकार
4.	अव	नीचे, बुरा, हीन	अवकाश, अवगुण, अवसर, अवमानना
5.	अभि	चारों ओर, सामने	अभिनय, अभिप्राय, अभियुक्त, अभियोग
6.	आ	तक, लेकर	आजन्म, आमरण, आदान, आक्रमण
7.	उप	छोटा, पास	उपनाम, उपवाक्य, उपदेश, उपवन
8.	दुर्	बुरा, कठिन	दुर्गम, दुर्जन, दुराचार, दुर्घटना
9.	निर्	बाहर, बिना	निर्गुण, निराकार, निर्माण, निर्धन
10.	निस्	नहीं, बिना	निस्सन्तान, निश्चल, निस्तेज, निश्चय
11.	परा	उलटा, पीछे	पराक्रम, पराधीन, पराजय, परामर्श

	उपसर्ग	अर्थ	उदाहरण
12.	प्र	अधिक, आगे	प्रभाव, प्रहार, प्रकार, प्रबल
13.	प्रति	हरेक, उलटा	प्रतिक्रिया, प्रतिशोध, प्रतिदिन, प्रतिकूल
14.	वि	विशेष, अलग, उलटा	विचार, विजय, विदेश, विज्ञान
15.	स	साथ/सहित	सकुशल, सजल, सनाथ, सपरिवार
16.	सु	अच्छा	सुपात्र, सुपुत्र, सुगम, सुयोग

2. हिन्दी के उपसर्ग

1.	अ	अभाव, निषेध	अशान्ति, अमर, अगम, अछूत
2.	अन	कमी, निषेध	अनमोल, अनकही, अनजान, अनसुनी
3.	अध	आधा	अधखिला, अधमरा, अधकचरा, अधपका
4.	क, कु	बुरा	कपूत, कुदिन, कुचाल, कुरूप
5.	स, सु	साथ, अच्छा	सपूत, सगुन, सुजन, सुघड़
6.	नि	बिना, निषेध	निहत्था, निडर, निकम्मा, निहाल
7.	भर	पूरा	भरपूर, भरमार, भरपाई, भरसक
8.	चौ	चार	चौमासा, चौराहा, चौपाया
9.	बिन	बिना, निषेध	बिन ब्याहा, बिन माँगा, बिन देखा

3. उर्दू-फ़ारसी के उपसर्ग

1.	बद	बुरा	बदनाम, बदमाश, बदहज़्मी, बदबू, बदसूरत
2.	बे	बिना	बेदखल, बेशर्म, बेलगाम, बेनाम, बेकार
3.	खुश	अच्छा	खुशबू, खुशनुमा, खुशमिजाज़, खुशहाल
4.	ला	बिना	लाइलाज़, लापरवाह, लाजवाब, लापता
5.	ना	नहीं	नालायक, नादान, नाजायज़, नासमझ, नापसन्द

4. अंग्रेज़ी के उपसर्ग

1.	सब	नीचे, अधीन	सब-जज, सब-इंस्पेक्टर, सब-कमेटी
2.	डिप्टी	उप, सहायक	डिप्टी-कमिश्नर, डिप्टी-डायरेक्टर
3.	जनरल	प्रधान	जनरल-मैनेजर, जनरल-सेक्रेटरी
4.	हेड	प्रधान, मुख्य	हेड-कांस्टेबल, हेड-मास्टर, हेड-क्लर्क

2. प्रत्यय (Suffix)

जो शब्दांश मूल (रूढ़) शब्द के अन्त में लगकर नए शब्द बनाते हैं, वे प्रत्यय कहे जाते हैं; जैसे—

मूल शब्द	प्रत्यय	व्युत्पन्न (यौगिक) शब्द
दास	ता	दासता
बंगाल	ई	बंगाली
उपदेश	क	उपदेशक

उपर्युक्त शब्दों को पढ़ने के बाद निम्नलिखित तथ्यों का पता चलता है—

- ❖ प्रत्यय शब्दों के अन्त में लगते हैं।
- ❖ ये शब्दांश होते हैं, इसलिए इनका अपना स्वतन्त्र रूप से कोई अस्तित्व नहीं होता।
- ❖ प्रत्यय शब्द के अन्त में जुड़कर उसके अर्थ में विशेषता/परिवर्तन लाते हैं।

हिन्दी में दो प्रकार के प्रत्यय प्रयुक्त किए जाते हैं—कृत् प्रत्यय और तद्धित प्रत्यय।

1. कृत् प्रत्यय

वे प्रत्यय जो धातु (क्रिया का मूल रूप) से जुड़कर संज्ञा, विशेषण आदि शब्द बनाते हैं, उन्हें कृत् प्रत्यय कहते हैं।

कृत् प्रत्यय निम्नलिखित पाँच प्रकार के होते हैं—

(क) कर्तृवाचक संज्ञा बनाने वाले कृत् प्रत्यय—जो कृत् प्रत्यय कर्ता अर्थात् क्रिया को करने वाले का ज्ञान कराते हैं, वे कर्तृवाचक कृत् प्रत्यय कहलाते हैं; जैसे—

प्रत्यय	मूल शब्द	यौगिक शब्द
अक	पठ, धाव, पच, चल	पाठक, धावक, पाचक, चालक
आऊ	लड़, भिड़, उड़	लड़ाऊ, भिड़ाऊ, उड़ाऊ
आकू	पढ़, लड़	पढ़ाकू, लड़ाकू
इया	घट, रस. बढ़	घटिया, रसिया, बढ़िया
हार	पालन, होना	पालनहार, होनहार
वाला	रख, पढ़, देख, पीना, खाना	रखवाला, पढ़नेवाला, देखनेवाला, पीनेवाला, खानेवाला

(ख) कर्मवाचक शब्द बनाने वाले कृत् प्रत्यय—जो कृत् प्रत्यय शब्दों के अन्त में जुड़कर कर्मवाचक शब्द बनाते हैं, वे कर्मवाचक कृत् प्रत्यय कहलाते हैं; जैसे—

औना	खेल, बिछ	खिलौना, बिछौना
नी	ओढ़, सूँघ, धौंक	ओढ़नी, सूँघनी, धौंकनी
ना	गा, खा, नाच, रो, भाग	गाना, खाना, नाचना, रोना, भागना

(ग) करणवाचक संज्ञा बनाने वाले कृत् प्रत्यय—जो कृत् प्रत्यय शब्दों के अन्त में जुड़कर करणवाचक संज्ञा शब्दों की रचना करते हैं, वे करणवाचक कृत् प्रत्यय कहलाते हैं; जैसे—

आ	घेर, ठेल, भूल, झूल	घेरा, ठेला, भूला, झूला
न	बन्ध, झाड़, बेल, ढक	बन्धन, झाड़न, बेलन, ढक्कन
नी	सूँघ, चट, मथ, रच	सूँघनी, चटनी, मथनी, रचनी

(घ) भाववाचक संज्ञा बनाने वाले कृत् प्रत्यय—जो कृत् प्रत्यय शब्दों के अन्त में जुड़कर भाववाचक संज्ञा शब्दों की रचना करते हैं, वे भाववाचक कृत् प्रत्यय कहलाते हैं; जैसे—

आई	पढ़, लड़, सुन, जुत, हँस	पढ़ाई, लड़ाई, सुनाई, जुताई, हँसाई

आवट	लिख, सज, मिल, दिख	लिखावट, सजावट, मिलावट, दिखावट
आहट	चिल्ला, घबरा, गुर्रा	चिल्लाहट, घबराहट, गुर्राहट
आन	लग, चढ़, उड़, उठ, थक	लगान, चढ़ान, उड़ान, उठान, थकान
अन	चल, गम, मिल	चलन, गमन, मिलन

(ङ) क्रियावाचक शब्द बनाने वाले कृत् प्रत्यय—जो कृत् प्रत्यय शब्दों के अन्त में जुड़कर क्रियावाचक विशेषण, संज्ञा आदि क्रिया शब्दों की रचना करते हैं, वे क्रियावाचक कृत् प्रत्यय कहलाते हैं; जैसे—

आ	हँस, देख, चल, सोच, बोल	हँसा, देखा, चला, सोचा, बोला
कर	आ, जा, खा, सोच, बोल, देख	आकर, जाकर, खाकर, सोचकर, बोलकर, देखकर
या	खा, पी, सो, गा	खाया, पीया, सोया, गाया
आलु	कृपा, दया, श्रद्धा	कृपालु, दयालु, श्रद्धालु
एरा	मामा, चाचा, लूट	ममेरा, चचेरा, लुटेरा

2. तद्धित प्रत्यय

वे प्रत्यय जो धातु से भिन्न किसी शब्द (संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण) के अन्त में जुड़कर नए शब्द बनाते हैं, उन्हें **तद्धित प्रत्यय** कहते हैं।

तद्धित प्रत्यय निम्नलिखित आठ प्रकार के होते हैं—

(क) भाववाचक तद्धित प्रत्यय

प्रत्यय	मूल शब्द	यौगिक शब्द
आई	बुरा, भला, चतुर, पण्डित	बुराई, भलाई, चतुराई, पण्डिताई
ई	खेत, सर्द, गर्म, गरीब	खेती, सर्दी, गर्मी, गरीबी
पन	अपना, बच्चा, लड़का	अपनापन, बचपन, लड़कपन
आहट	कड़वा, गरम, चिकना	कड़वाहट, गरमाहट, चिकनाहट
आवट	दिख, लिख, बना, सज	दिखावट, लिखावट, बनावट, सजावट

(ख) कर्तृवाचक तद्धित प्रत्यय

ई	सुख, दुःख, शास्त्र, तेल	सुखी, दुःखी, शास्त्री, तेली
क	पाठ, वाच, लेख, सुधार	पाठक, वाचक, लेखक, सुधारक
कार	कहानी, कथा, रचना, कला	कहानीकार, कथाकार, रचनाकार, कलाकार

(ग) सम्बन्धवाचक तद्धित प्रत्यय

एरा	मौसा, चाचा, फूफा, मामा	मौसेरा, चचेरा, फुफेरा, ममेरा
इक	दिन, धर्म, मूल, नीति, समाज	दैनिक, धार्मिक, मौलिक, नैतिक, सामाजिक
ई	पंजाब, बंगाल, बिहार, गुजरात	पंजाबी, बंगाली, बिहारी, गुजराती

(घ) लघुतावाचक तद्धित प्रत्यय

इया	डिब्बा, लोटा, खाट	डिबिया, लुटिया, खटिया
ई	डोर, पहाड़, घंटा, ढोलक	डोरी, पहाड़ी, घंटी, ढोलकी
री	छाता, कोठा	छतरी, कोठरी
टी/टा	लंग, चिमटा	लँगोटी, चिमटी

(ङ) क्रमवाचक तद्धित प्रत्यय

वाँ	दस, बीस, बत्तीस, अड़तालीस	दसवाँ, बीसवाँ, बत्तीसवाँ, अड़तालिसवाँ
हरा	एक, दो, तीन, चार	इकहरा, दोहरा, तिहरा, चौहरा

(च) गुणवाचक तद्धित प्रत्यय

आ	भूख, प्यास, मैल, सड़	भूखा, प्यासा, मैला, सड़ा
ई	क्रोध, लोभ, जंगल, विदेश	क्रोधी, लोभी, जंगली, विदेशी
ईला	चमक, बर्फ़, रंग, सज	चमकीला, बर्फ़ीला, रँगीला, सजीला
ऐला	कस, विष	कसैला, विषैला
वान	चरित्र, धन, रूप, गुण	चरित्रवान, धनवान, रूपवान, गुणवान
लु	दया, कृपा, श्रद्धा	दयालु, कृपालु, श्रद्धालु
वती/मती	रूप, गुण, बल, बुद्धि	रूपवती, गुणवती, बलवती, बुद्धिमती
वान/मान	रूप, गुण, बल, बुद्धि, शक्ति	रूपवान, गुणवान, बलवान, बुद्धिमान, शक्तिमान

(छ) स्त्रीलिंगवाचक तद्धित प्रत्यय

ई	लड़का, बेटा, मामा, नाना, दादा	लड़की, बेटी, मामी, नानी, दादी
इया	चूहा, बूढ़ा, चिड़ा	चुहिया, बुढ़िया, चिड़िया
आनी	जेठ, सेठ, देवर	जेठानी, सेठानी, देवरानी
नी	चोर, मोर, शेर, हिरन	चोरनी, मोरनी, शेरनी, हिरनी
आ	छात्र, शिष्य, प्रिय, वृद्ध	छात्रा, शिष्या, प्रिया, वृद्धा
इका	नायक, गायक	नायिका, गायिका

(ज) बहुवचनवाचक तद्धित प्रत्यय

ए	लड़का, पत्ता, रास्ता, छाता	लड़के, पत्ते, रास्ते, छाते
एँ	माला, छात्रा, बात, पुस्तक	मालाएँ, छात्राएँ, बातें, पुस्तकें
आँ	गुड़िया, बुढ़िया, चिड़िया	गुड़ियाँ, बुढ़ियाँ, चिड़ियाँ
याँ	बेटी, मक्खी, लड़की, नारी	बेटियाँ, मक्खियाँ, लड़कियाँ, नारियाँ

उपसर्ग तथा प्रत्यय का एक साथ प्रयोग

1.	उप	+	कार	+	ई	=	उपकारी
2.	अप	+	मान	+	इत	=	अपमानित
3.	पर	+	तन्त्र	+	ता	=	परतन्त्रता
4.	अ	+	समाज	+	इक	=	असामाजिक
5.	बे	+	रोज़गार	+	ई	=	बेरोज़गारी

3. समास (Compound)

'समास' शब्द का अर्थ है—पास रखना या छोटा करना। दो या दो से अधिक शब्दों को आपस में मिलाकर एक नया शब्द बनाना **समास** कहलाता है। भाषा के प्रयोग में सामासिक शब्दों के प्रयोग से संक्षिप्तता और शैली में उत्कृष्टता एवं सटीकता आती है। उदाहरण के लिए—

काठ की पुतली (समस्तपद : कठपुतली)

घोड़े पर सवारी करने वाला (समस्तपद : घुड़सवार)

इससे स्पष्ट है कि दो या दो से अधिक शब्दों के मिलने पर ही सामासिक शब्द का निर्माण होता है। इस प्रक्रिया में दो पदों के बीच आने वाले कुछ व्याकरणिक शब्दों का लोप करने से दोनों पद पास आ जाते हैं।

समास-रचना में प्राय: दो पद होते हैं। पहले पद को 'पूर्वपद' और दूसरे पद को 'उत्तरपद' कहते हैं तथा समास से बने पद को 'समस्तपद'।

पूर्वपद	उत्तरपद	समस्तपद
लम्बा	उदर	लम्बोदर
दश	आनन	दशानन

समस्त पद के अंगों को अलग करने की प्रक्रिया को 'समास-विग्रह' कहते हैं। विग्रह करते हुए लुप्त व्याकरणिक शब्द पुन: दिखाई देते हैं; जैसे—

गंगाजल	गंगा	जल	गंगा का जल
(समस्तपद)	(पूर्वपद)	(उत्तरपद)	(समास-विग्रह)

समास के भेद

समास मुख्य रूप से छ: प्रकार के होते हैं—

1. अव्ययीभाव समास—समस्तपद के दो खण्डों में पहला खण्ड अव्यय हो तथा वह सम्पूर्ण समस्तपद भी प्राय: क्रियाविशेषण या अव्यय का कार्य करता हो, वहाँ समस्त पद अव्ययीभाव समास होता है; जैसे—

समस्तपद	समास-विग्रह	समस्तपद	समास-विग्रह
प्रतिदिन	हर दिन/प्रत्येक दिन	प्रतिवर्ष	हर वर्ष/प्रत्येक वर्ष
यथाशक्ति	शक्ति के अनुसार	आजीवन	जीवन भर
सपरिवार	परिवार के साथ	बीचोंबीच	बीच-बीच में
बेनकाब	नकाब के बिना	रातोंरात	रात-ही-रात में
हाथोंहाथ	हाथ-ही-हाथ में	भरपेट	पेट भरकर

2. तत्पुरुष समास—इस समास में उत्तरपद प्रधान होता है तथा पूर्वपद गौण होता है। समस्तपद बनाते समय शब्द-समूहों के बीच में आने वाले परसर्ग (ने, को, के लिए आदि) लुप्त हो जाते हैं; जैसे—'बैलगाड़ी' और 'विद्यालय'—ये दोनों समस्तपद हैं। क्रमश: इनके विग्रह हैं—बैल की गाड़ी और विद्या के लिए आलय।

कारक की दृष्टि से तत्पुरुष समास के निम्नलिखित छ: भेद होते हैं—

(क) कर्म तत्पुरुष—कर्म कारक का परसर्ग 'को' होता है। अत: इस समास में समस्त पद बनाते समय 'को' परसर्ग लुप्त हो जाता है; जैसे—

यशप्राप्त	यश को प्राप्त	ग्रामगत	ग्राम को गया हुआ

(ख) करण तत्पुरुष—करण कारक का परसर्ग 'से' तथा 'के द्वारा' होता है। अत: इस समास में इन परसर्गों का लोप हो जाता है; जैसे—

तुलसीकृत	तुलसी द्वारा कृत	शोकाकुल	शोक से आकुल

(ग) सम्प्रदान तत्पुरुष—इस कारक का परसर्ग 'के लिए' (किसी को कुछ देने के अर्थ में) होता है। अत: सम्प्रदान तत्पुरुष में 'के लिए' परसर्ग का लोप हो जाता है; जैसे—

स्नानघर	स्नान के लिए घर	देशभक्ति	देश के लिए भक्ति

(घ) अपादान तत्पुरुष—अपादान कारक का परसर्ग 'से' (अलग होने, तुलना करने, डरने, लजाने के लिए) होता है। अत: इस समास में 'से' परसर्ग लुप्त हो जाता है; जैसे—

देशनिकाला	देश से निकाला	ऋणमुक्त	ऋण से मुक्त

(ङ) सम्बन्ध तत्पुरुष—सम्बन्ध कारक के परसर्ग 'का, के, की' आदि होते हैं। अत: इस समास की रचना के दौरान ये परसर्ग लुप्त हो जाते हैं; जैसे—

हरिभक्ति	हरि की भक्ति	राजाज्ञा	राजा की आज्ञा
पवनपुत्र	पवन का पुत्र	भारतरत्न	भारत का रत्न

(च) अधिकरण तत्पुरुष—अधिकरण कारक के परसर्ग 'में, पर' होते हैं। अत: इस समास की रचना के समय इन परसर्गों का लोप हो जाता है; जैसे—

आपबीती	आप पर बीती	प्रेममग्न	प्रेम में मग्न
वनवास	वन में वास	शरणागत	शरण में आगत

3. कर्मधारय समास—जहाँ समस्तपद के दोनों खण्डों में विशेषण-विशेष्य या उपमान-उपमेय सम्बन्ध हो, वहाँ कर्मधारय समास होता है। अर्थात् कर्मधारय में पहला पद विशेषण या उपमावाचक होता है; जैसे—

महात्मा	महान है जो आत्मा	चन्द्रमुख	चन्द्र के समान मुख
घनश्याम	घन के समान श्याम	कमलनयन	कमल के समान नयन
नीलकण्ठ	नीला है जो कण्ठ/नीले कण्ठ वाला	पुरुषोत्तम	पुरुषों में है जो उत्तम

4. द्विगु समास—जिस समस्तपद का पहला पद संख्यावाचक विशेषण होता है और वह समस्तपद समूह का बोध कराता है, उसे **द्विगु समास** कहते हैं; जैसे—

नवरत्न	नौ रत्नों का समूह	चतुर्भुज	चार भुजाओं का समूह
सतसई	सात सौ दोहों का समूह	शताब्दी	शत (सौ) अब्दों (वर्षों) का समूह
तिरंगा	तीन रंगों का समाहार	सप्ताह	सात अह (दिनों) का समूह
सप्तर्षि	सात ऋषियों का समूह	त्रिफला	तीन फलों का समूह
नवरात्रि	नौ रात्रियों का समाहार	चौराहा	चार राहों का समाहार

5. द्वन्द्व समास—जहाँ समस्तपद के दोनों खण्ड समान स्तर के हों तथा जिसमें 'और', 'या', 'अथवा' योजक का लोप हो, वहाँ **द्वन्द्व समास** होता है; जैसे—

रात-दिन	रात और दिन	सुख-दु:ख	सुख और दु:ख
लाभ-हानि	लाभ या हानि	ऊँच-नीच	ऊँच अथवा नीच
पाप-पुण्य	पाप और पुण्य	जीवन-मरण	जीवन और मरण

6. बहुव्रीहि समास—जहाँ समस्तपद अपने अर्थ के अतिरिक्त किसी अन्य अर्थ का द्योतन करता हो, वहाँ **बहुव्रीहि समास** होता है। ऐसे शब्द अपने से भिन्न किसी अन्य संज्ञा या विशेषण के बोधक होते हैं; जैसे—

अंशुमाली	अंशु (किरणें) हैं माला जिसकी (सूर्य)

'अंशुमाली' शब्द के दो पद हैं—'अंशु' और 'माली', किन्तु समस्तपद का अर्थ है—'सूर्य'। इस शब्द में 'अंशु' और 'माली' दोनों पद अप्रधान हो गए हैं और अन्य शब्द 'सूर्य' की प्रधानता हो गई है। इसी प्रकार—

चक्रधर	चक्र धारण किया है जिसने (विष्णु)
चन्द्रशेखर	चन्द्र है शिखर पर जिसके (शिव)
चतुर्मुख	चार मुख हैं जिसके (ब्रह्मा)
गजानन	गज है आनन जिसका (गणेश)
मुरलीधर	मुरली को धारण किया है जिसने (कृष्ण)

कर्मधारय और बहुव्रीहि समास में अन्तर

कर्मधारय समास के दोनों पदों में विशेषण-विशेष्य या उपमान-उपमेय का सम्बन्ध होता है, जबकि बहुव्रीहि समास के दोनों पद मिलकर किसी अन्य पद की ओर संकेत करते हैं यानी तीसरे पद की विशेषता प्रकट करते हैं; जैसे—

पीताम्बर = पीला (विशेषण) अम्बर (विशेष्य) — कर्मधारय समास

पीताम्बर = पीला है अम्बर (वस्त्र) जिसका (श्रीकृष्ण) — बहुव्रीहि समास

द्विगु और बहुव्रीहि समास में अन्तर

द्विगु समास का पहला पद संख्यावाची विशेषण होता है जबकि बहुव्रीहि समास के दोनों पद मिलकर किसी तीसरे पद की ओर संकेत करते हैं; जैसे—

चतुर्भुज = चार भुजाओं का समूह — द्विगु समास

चतुर्भुज = चार भुजाएँ हैं जिसकी (विष्णु) — बहुव्रीहि समास

1. सही उत्तर पर सही (✓) का चिह्न लगाइए—

(क) डिप्टी-कलेक्टर शब्द में प्रयुक्त 'डिप्टी' किस भाषा का उपसर्ग है?

(i) अरबी ◯ (ii) अंग्रेज़ी ◯ (iii) फ़ारसी ◯

(ख) 'अ' उपसर्ग जुड़ने से बना शब्द है—

(i) अनादर ◯ (ii) अवगुण ◯ (iii) अज्ञान ◯

(ग) 'कृत्' प्रत्यय का प्रयोग किया जाता है—

(i) संज्ञा के साथ ◯ (ii) क्रिया के साथ ◯ (iii) सर्वनाम के साथ ◯

(घ) 'ई' प्रत्यय लगने से बना शब्द है—

(i) चढ़ाई ◯ (ii) पण्डिताई ◯ (iii) धनी ◯

(ङ) 'शक्ति के अनुसार' का समस्तपद है—

(i) यथाशक्ति ◯ (ii) शक्तिशाली ◯ (iii) शक्तिमान ◯

(च) 'गुरु-शिष्य' शब्द का समास-विग्रह है—

(i) गुरु और शिष्य ◯ (ii) गुरु के साथ शिष्य ◯ (iii) गुरु या शिष्य ◯

2. निम्नलिखित शब्दों में प्रयुक्त सही उपसर्ग पर सही (✓) का चिह्न लगाइए—

(क) निर्भय	—	निः	☐	नि	☐	निर्	☐
(ख) अत्याचार	—	अति	☐	अत्	☐	अत्य	☐
(ग) चौराहा	—	चो	☐	चौ	☐	चौइ्	☐
(घ) बेलगाम	—	बेल	☐	बेल्	☐	बे	☐

3. निम्नलिखित शब्दों में से उपसर्ग अलग कीजिए—

दुर्गम .....
गैरसरकारी .....
अनपढ़ .....

हमराज .....
पुनर्जन्म .....
अनादर .....

उत्कर्ष .....
अवनति .....
सुयोग .....

4. निम्नलिखित वाक्यों को कोष्ठक में दिए गए शब्दों में उपसर्ग लगाकर पूर्ण कीजिए—

(क) अध्यापक के डाँटने पर उसका कक्षा में ..... *(मान)* हुआ।

(ख) वीर पुरुष कभी भी ..... *(जय)* स्वीकार नहीं करते।

(ग) महात्मा जी ने सदाचरण का ..... *(देश)* दिया।

(घ) भीष्म पितामह ने ..... *(जीवन)* विवाह न करने की प्रतिज्ञा की।

5. कोष्ठक में दिए गए शब्द के साथ सही प्रत्यय लगाकर वाक्यों के रिक्त स्थान भरिए—

(क) मुझे आज भी ..... के दिन याद आते हैं। *(बच्चा)*

(ख) आज हमारे देश में ..... बढ़ती जा रही है। *(महँगा)*

(ग) मैं ..... लोगों को पसन्द नहीं करता। *(झगड़ा)*

(घ) ..... के लिए खेद है। *(रुक)*

6. निम्नलिखित वाक्यों में प्रयुक्त तद्धित प्रत्ययों के प्रकार बताइए—

क्रमवाचक, लघुतावाचक, सम्बन्धवाचक, बहुवचनवाचक, भाववाचक, गुणवाचक, स्थानवाचक, कर्तृवाचक, स्त्रीलिंगवाचक

(क) लखनवी .....
(घ) सुता .....
(छ) नदियाँ .....
(ञ) इकहरा .....
(ड) मुम्बइया .....

(ख) चचेरा .....
(ङ) कोठरी .....
(ज) रसोइया .....
(ट) सामाजिक .....
(ढ) चौड़ाई .....

(ग) बचपन .....
(च) चमकीला .....
(झ) राधेय .....
(ठ) कमरे .....
(ण) तपस्विनी .....

7. नीचे दिए गए शब्दों से उपसर्ग, मूल शब्द और प्रत्यय अलग-अलग करके लिखिए—

		उपसर्ग	मूल शब्द	प्रत्यय
(क) सुगमता	—	.....	.....	.....
(ख) बेरोजगारी	—	.....	.....	.....
(ग) प्रशिक्षित	—	.....	.....	.....
(घ) असामाजिक	—	.....	.....	.....

8. रंगीन शब्दों को समस्तपद में परिवर्तित करके वाक्य को पुनः लिखिए—

(क) मुझे जेब के लिए जो खर्च मिलता है, उसे मैं पुस्तकों पर खर्च करता हूँ।

.....

(ख) प्रभात ने प्रीत विहार के चार राहों के समूह पर तीन मंजिल वाला शोरूम बना लिया है।

.....

(ग) लम्बा है उदर जिसका, नीला है कण्ठ जिसका के पुत्र हैं।

.....

(घ) हमें अपनी शक्ति के अनुसार कार्य करना चाहिए।

.....

9. निम्नलिखित समस्तपदों को विग्रह कीजिए और समास का नाम बताइए—

(क)	पाप-पुण्य	.....	.....
(ख)	नीलकमल	.....	.....
(ग)	तिरंगा	.....	.....
(घ)	बीचोंबीच	.....	.....
(ङ)	चक्रधर	.....	.....

10. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए—

(क) उपसर्ग का प्रयोग कहाँ किया जाता है?

(ख) हिन्दी में किन-किन भाषाओं के उपसर्ग प्रयोग किए जाते हैं? किन्हीं चार के नाम लिखिए।

(ग) प्रत्यय से क्या अभिप्राय है? सोदाहरण स्पष्ट कीजिए।

(घ) उपसर्ग और प्रत्यय में क्या समानता और अन्तर है?

(ङ) समास किसे कहते हैं? इसके कितने भेद हैं? उदाहरण सहित लिखिए।

(च) समास-विग्रह में समस्त पद का दूसरा पद क्या कहलाता है?

(छ) कर्मधारय, द्विगु तथा बहुव्रीहि समास में अन्तर कीजिए।

रचनात्मक गतिविधियाँ

- पढ़े हुए पाठों से कुछ सामासिक शब्द छाँटकर उनका विग्रह करें। बहुव्रीहि समास वाले शब्दों के विग्रह और उनके विशेष अर्थ की चर्चा अपने सहपाठियों के बीच अभिनय द्वारा करें; जैसे—

'लम्बोदर' का विग्रह है—लम्बा है उदर जिसका अर्थात् गणेश।

अभिनय द्वारा बताने के लिए अपने पेट पर हाथ फेरते हुए साथी को समझाने की चेष्टा करें।

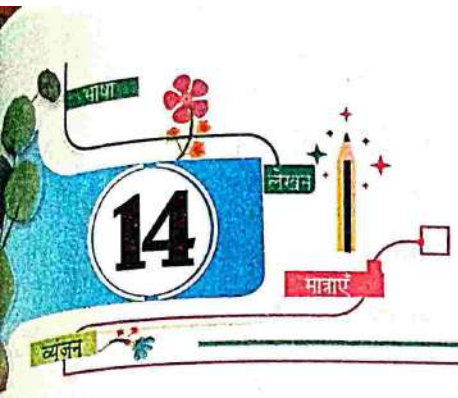

14 वाक्य-विचार
Syntax

अपनी बात या विचार दूसरों तक पहुँचाने के लिए हम भाषा का प्रयोग करते हैं। वर्ण भाषा की सबसे छोटी इकाई है। वर्णों के सार्थक मेल से शब्द बनते हैं। शब्द पदों का रूप लेकर वाक्य की रचना करते हैं। सार्थक पदों को व्यवस्थित क्रम से लिखने पर ही अर्थपूर्ण वाक्य बनते हैं। इस प्रकार, शब्दों का वह सार्थक और व्यवस्थित समूह जिससे किसी भाव या विचार को पूर्णत: प्रकट किया जा सके, वाक्य कहलाता है।

हिन्दी में कर्ता या कर्म के साथ क्रिया का और विशेष्य के साथ विशेषण आदि का मेल रहता है; जैसे—

- ❖ गरिमा ने पुस्तक पढ़ी।
- ❖ गरिमा ने ग्रन्थ पढ़ा।

इसी प्रकार, सर्वनाम का वचन और पुरुष उस संज्ञा के अनुसार होता है, जिसके लिए उसका प्रयोग हुआ है; जैसे—

- ❖ रेनू ने कहा, ''मैं विद्यालय जाऊँगी।''
- ❖ मैंने नौकर से पूछा, ''तुम कहाँ थे?''

वाक्य के अंग

वाक्य छोटा हो या बड़ा, उसके दो ही अंग होते हैं—उद्देश्य और विधेय।

प्राय: उद्देश्य वाक्य के प्रारम्भ में और विधेय वाक्य के अन्त में होता है; जैसे—

1. **उद्देश्य**—किसी वाक्य में जिसके विषय में कुछ बताया जाता है, उसे उद्देश्य कहते हैं।
2. **विधेय**—किसी वाक्य में उद्देश्य के विषय में जो कुछ भी बताया जाता है, उसे विधेय कहते हैं।

उद्देश्य	विधेय
1. भागता हुआ चोर	तुरन्त पकड़ा गया।
2. प्रेमचन्द की कहानियाँ	बड़ी रुचि से पढ़ी जाती हैं।
3. वह बेचारा	क्या कर सकता था?

इस प्रकार, हम देखते हैं कि वाक्य में (सबसे छोटे वाक्य में भी) उद्देश्य और विधेय दोनों होते हैं। बड़े-से-बड़े वाक्यों में उद्देश्य और विधेय का विस्तार होता है।

वाक्य के भेद

वाक्य का विवेचन दो प्रकार से किया जाता है—

1. रचना के आधार पर वाक्य के भेद

रचना के आधार पर वाक्य तीन प्रकार के होते हैं—

(क) सरल वाक्य—जिस वाक्य में एक मुख्य क्रिया तथा विधेय हो, वह सरल वाक्य कहलाता है; जैसे—

- ❖ प्रशान्त पढ़ रहा है।
- ❖ ईशान और देव सुबह ही खेलने चले गए।

(ख) संयुक्त वाक्य—जहाँ दो या दो से अधिक स्वतन्त्र उपवाक्य किसी समानाधिकरण समुच्चयबोधक (और, तथा, परन्तु, किन्तु, लेकिन, अथवा या आदि) से जुड़े हों, वह वाक्य संयुक्त वाक्य कहलाता है; जैसे—

❖ अर्चित स्कूल जाता है और मन लगाकर पढ़ता है। ❖ वह चला गया परन्तु रास्ते से लौट आया।

(ग) मिश्रित वाक्य—जिन वाक्यों में एक प्रधान उपवाक्य और एक या एक से अधिक आश्रित उपवाक्य व्यधिकरण समुच्चयबोधक (कि, क्योंकि, जो, जिसने, जहाँ आदि) से जुड़े हों, वह वाक्य मिश्रित वाक्य कहलाता है; जैसे—

❖ मैं विश्वास के साथ कह सकता हूँ कि मेरा उत्तर सही है। ❖ यह वही लड़का है जिसने कल दौड़ जीती थी।

2. अर्थ के आधार पर वाक्य के भेद

अर्थ के आधार पर वाक्य आठ प्रकार के होते हैं—

(क) विधानवाचक वाक्य—जिन वाक्यों में क्रिया के करने या होने की सामान्य सूचना मिलती है या किसी के अस्तित्व का बोध होता है, उन्हें विधानवाचक वाक्य कहा जाता है; जैसे—

❖ वृक्ष हमें स्वच्छ वायु प्रदान करते हैं। ❖ आज सोमवार है।

(ख) निषेधात्मक वाक्य—जिन वाक्यों से किसी कार्य के निषेध (न होने) का बोध हो, उन्हें निषेधात्मक वाक्य कहा जाता है; जैसे—

❖ वह आज नहीं आएगा। ❖ तरुण ने पाठ नहीं पढ़ा।

(ग) प्रश्नवाचक वाक्य—जिन वाक्यों का प्रयोग प्रश्न पूछने के लिए किया जाता है, उन्हें प्रश्नवाचक वाक्य कहते हैं; जैसे—

❖ बाहर कौन बैठा है? ❖ तुम क्या कर रहे हो?

(घ) सन्देहवाचक वाक्य—जिन वाक्यों से किसी कार्य के होने में सन्देह या सम्भावना की भावना का बोध हो, उन्हें सन्देहवाचक वाक्य कहते हैं; जैसे—

❖ शायद वह आने वाला है। ❖ सम्भवत: आज वर्षा होगी।

(ङ) विस्मयादिबोधक वाक्य—जिन वाक्यों से आश्चर्य, घृणा, हर्ष, शोक आदि के भाव व्यक्त हों, उन्हें विस्मयादिबोधक वाक्य कहा जाता है; जैसे—

❖ ओह! यह क्या हो गया। ❖ वाह! तुमने तो कमाल कर दिया।

(च) इच्छावाचक वाक्य—जिन वाक्यों में वक्ता की इच्छा, आशा या आशीर्वाद, शुभकामना आदि का भाव व्यक्त हो, उसे इच्छावाचक वाक्य कहा जाता है; जैसे—

❖ भगवान करे, तुम सफल हो। ❖ तुम्हारी यात्रा सुखद रहे।

(छ) संकेतवाचक वाक्य—जिन वाक्यों में एक क्रिया का होना दूसरी पर निर्भर हो, उन्हें संकेतवाचक वाक्य कहा जाता है; जैसे—

❖ अगर तुम परिश्रम करोगे तो अवश्य सफलता मिलेगी। ❖ यदि वर्षा होती तो फसल भी अच्छी होती।

(ज) आज्ञा या विधिवाचक वाक्य—जिन वाक्यों द्वारा आज्ञा या अनुमति, विनय, प्रार्थना या निर्देश आदि का भाव प्रकट होता है, उन्हें आज्ञा या विधिवाचक वाक्य कहा जाता है; जैसे—

❖ कृपया, मेरी सहायता कीजिए। *(प्रार्थना)* ❖ तुम जा सकते हो। *(अनुमति)*

1. सही उत्तर पर सही (✓) का चिह्न लगाइए—

(क) एक उद्देश्य और एक विधेय किस प्रकार के वाक्य में होते हैं?

(i) मिश्रित ◯ (ii) सरल ◯ (iii) संयुक्त ◯

(ख) 'वर्षा होने पर मोर नाचने लगा।' किस प्रकार का वाक्य है?

(i) सरल ◯ (ii) संयुक्त ◯ (iii) मिश्रित ◯

(ग) जिस वाक्य से किसी बात की सूचना प्राप्त हो, उसे क्या कहेंगे?

(i) संकेतवाचक वाक्य ◯ (ii) विधानवाचक वाक्य ◯ (iii) इच्छावाचक वाक्य ◯

2. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए—

(क) वाक्य ..... के सार्थक मेल से बनते हैं।

(ख) वाक्य के अंग ..... तथा ..... हैं।

(ग) उद्देश्य के साथ विशेषण जुड़ने पर वह उद्देश्य का ..... कहलाता है।

(घ) वाक्य को ..... तथा ..... के आधार पर बाँटा गया है।

3. निम्नलिखित वाक्यों में उद्देश्य को रेखांकित कीजिए तथा विधेय चुनकर वाक्य के सामने लिखिए—

(क) मेरे छोटे भाई ने दो गुब्बारे खरीदे। .....

(ख) अध्यापक जी ने बच्चों को गणित पढ़ाया। .....

(ग) अयोध्या के राजा दशरथ के तीन रानियाँ थीं। .....

4. निम्नलिखित वाक्यों को पढ़कर रचना की दृष्टि से वाक्यों के प्रकार लिखिए—

(क) अध्यापक ने कल निबन्ध लिखकर लाने को कहा। .....

(ख) यदि वर्षा होती तो फ़सल अच्छी होती। .....

(ग) मैंने उसे पढ़ाया और नौकरी दिलवाई। .....

5. निम्नलिखित वाक्यों का अर्थ की दृष्टि से कोष्ठक में दिए गए निर्देशानुसार रूपान्तरण कीजिए—

(क) मधुकर ने भोजन नहीं किया है। *(प्रश्नवाचक)*

(ख) हिना कक्षा में प्रथम आई है। *(विस्मयबोधक)*

(ग) वर्षा होने पर फसल अच्छी होती है। *(संकेतवाचक)*

(घ) रवि गरीबों की सहायता करता है। *(आज्ञावाचक)*

(ङ) वह मन लगाकर पढ़ता है। *(निषेधवाचक)*

6. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए—

(क) वाक्य की परिभाषा लिखिए। इसमें कितने अनिवार्य तत्त्व होने चाहिए?

(ख) अर्थ की दृष्टि से वाक्य के कितने भेद हैं? उनके नाम लिखिए।

15 विराम-चिह्न
Punctuation-Marks

लिखित भाषा में जिस प्रकार लिपि-चिह्नों और वर्तनी का महत्त्व है, उसी प्रकार विराम-चिह्नों का भी है। लेखन में भावाभिव्यक्ति की स्पष्टता के लिए विराम-चिह्नों की आवश्यकता होती है। 'विराम' का शाब्दिक अर्थ होता है—रुकना अथवा ठहराव; जैसे—ये दो वाक्य देखें—

- बैठो, मत जाओ।
- बैठो मत, जाओ।

इन वाक्यों में अल्पविराम (,) के स्थान बदलने मात्र से उनके अर्थ पूरी तरह बदल गए हैं।

इस प्रकार, भावों को स्पष्ट करने के लिए बोलते, पढ़ते और लिखते समय रुकने की प्रक्रिया को व्यक्त करने वाले चिह्नों को विराम-चिह्न कहते हैं।

हिन्दी में प्रयोग किए जाने वाले प्रमुख विराम-चिह्न इस प्रकार हैं—

1. पूर्ण विराम (।)

सामान्य कथन वाले सभी प्रकार के वाक्यों—सरल, संयुक्त और मिश्र के अन्त में पूर्ण विराम का चिह्न लगाया जाता है; जैसे—

- समीर नहीं जाएगा।
- उसने कहा कि मानसी कल आ जाएगी।
- मैं कल आऊँगा और केवल एक घण्टा आपके पास रुकूँगा।

2. अर्ध विराम (;)

पूर्ण विराम से कम देर ठहरने के लिए अर्ध विराम का प्रयोग होता है। इसका प्रयोग निम्नलिखित स्थितियों में किया जाता है; जैसे—

(क) किसी नियम के बाद में आने वाले उदाहरणसूचक शब्द 'जैसे' से पहले आता है। उदाहरण के लिए, पुरुषों के नाम से पहले 'श्री' शब्द का प्रयोग होता है; जैसे—श्री भारत भूषण।

(ख) मिश्र तथा संयुक्त वाक्यों में विपरीत अर्थ प्रकट करने के लिए उपवाक्यों के बीच प्रयुक्त होता है; जैसे—गांधी जी नहीं रहे; वे तो अमर हो गए।

(ग) एक ही समूह के रूपों का वर्गीकरण करते हुए इसका प्रयोग होता है; जैसे—संज्ञा, संज्ञा के प्रकार; लिंग, वचन और कारक; सर्वनाम, सर्वनाम के भेद; विशेषण, विशेषण के प्रकार; प्रविशेषण।

3. अल्पविराम (,)

भाषा को बोलते या लिखते समय जहाँ बहुत ही कम समय के लिए रुकना पड़ता है, वहाँ अल्पविराम का प्रयोग होता है; जैसे—

- सुधा, मोनिका और रानी पार्टी में गईं।
- नहीं, मैं तुम्हारे साथ नहीं जा सकता।

4. प्रश्नसूचक चिह्न (?)

प्रश्नवाचक वाक्यों के अन्त में प्रश्नसूचक चिह्न लगाया जाता है; जैसे—

- तुम्हारा नाम क्या है?
- तुम कहाँ गए थे, कैसे आए और क्या चाहते हो?

5. विस्मयसूचक या सम्बोधनसूचक चिह्न (!)

(क) विस्मयसूचक चिह्न प्राय: हर्ष, विषाद, घृणा, आश्चर्य, भय, प्रार्थना आदि के सूचक शब्दों, पदबन्धों के साथ प्रयोग किए जाते हैं। विस्मयसूचक चिह्न वाक्य के अन्त अथवा मध्य में प्रयुक्त होता है; जैसे—

- ❖ कैसा सुन्दर दृश्य है!
- ❖ आह! उसे कितनी पीड़ा हो रही है।

(ख) सम्बोधन के लिए भी इस चिह्न का प्रयोग किया जाता है; जैसे—

- ❖ साथियो! आज देश के लिए कुछ करने का समय आ गया है।

6. उद्धरण चिह्न (' ... ' / " ... ")

इसका प्रयोग निम्नलिखित स्थितियों में होता है—

(क) वाक्य में प्रयुक्त कवि या लेखक का उपनाम, पाठों का शीर्षक, पुस्तक, समाचार-पत्र आदि का नाम लिखने में इकहरे उद्धरण चिह्न ('....') का प्रयोग किया जाता है; जैसे—

- ❖ सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' ने 'परिमल' ग्रन्थ की रचना की।

(ख) सूक्तियों या कहावतों को स्पष्ट करने के लिए काव्य-पंक्तियों, पदबन्धों और उपवाक्यों में इकहरे उद्धरण चिह्न (' ... ') का भी प्रयोग होता है; जैसे—

- ❖ तुलसीदास ने सत्य ही लिखा है, 'बिनु भय होइ न प्रीति।'

(ग) लेखक या वक्ता के कथन को यथावत् उद्धृत करने में दोहरे उद्धरण चिह्न ("....") का प्रयोग होता है; जैसे—

- ❖ खड़गसिंह बालकों की-सी अधीरता से बोला, "परन्तु बाबा जी, उसकी चाल न देखी तो क्या!"

7. योजक चिह्न (हाइफन) (-)

(क) इस चिह्न का प्रयोग सामासिक पदों या पुनरुक्त और युग्म शब्दों के मध्य किया जाता है; जैसे—

- ❖ सुख-दु:ख, तन-मन-धन, ईश्वर-वन्दना, देश-विदेश।

(ख) समानतासूचक शब्दों के साथ सा, सी, से के पहले भी योजक चिह्न का प्रयोग होता है; जैसे—

- ❖ गुलाब-सा चेहरा। मछली-सी आँखें। घुँघराले-से बाल।

8. निर्देशक चिह्न (डैश) (—)

वाक्यांशों तथा वाक्यों के बीच में इसका प्रयोग निम्नलिखित स्थितियों में होता है—

(क) उद्धरण या कथन के पहले; जैसे—

- ❖ तुलसीदास का कथन है—"रामनाम की महिमा अपार है।"

(ख) किन्हीं वस्तुओं, कार्यों आदि का विवरण देने में; जैसे—

- ❖ वह ढेर-सा सामान लाया—मसाले, दालें, फल, मुरब्बा, चटनी और अचार।

9. कोष्ठक ()

कोष्ठक का प्रयोग निम्नलिखित स्थितियों में किया जाता है—

(क) क्रमसूचक अंकों या वर्ण के साथ; जैसे—

- ❖ दिशाएँ चार होती हैं— (1) पूर्व, (2) पश्चिम, (3) उत्तर, (4) दक्षिण।

(ख) व्याख्यात्मक शब्दों में; जैसे—

- ऐसे व्यक्ति *(दुर्जन)* से दूर ही रहना भला है।

10. हंसपद (ʌ)

लिखते समय कोई शब्द छूट जाने की स्थिति में सम्बन्धित स्थान पर हंसपद लगाकर छूटे शब्द को ऊपर या हाशिए में लिख दिया जाता है; जैसे—

- रमेश ने राजू से कहा कि तुम घर चले ʌ जाओ।
- सलीम ने कल रोज़ा ʌ रखा था।

11. लाघव चिह्न (०)

संक्षिप्त रूप लिखने के लिए लाघव चिह्न का प्रयोग किया जाता है; जैसे—

- कृ०प०उ०(कृपया पृष्ठ उलटिए)
- डॉ० जोशी के पास एम०डी० की डिग्री है।

कुछ करके सीखें

1. सही उत्तर पर सही (✓) का चिह्न लगाइए—

(क) शब्द-युग्मों के बीच किस चिह्न का प्रयोग किया जाता है?

(i) इकहरा उद्धरण ('.....') (ii) अल्प विराम (,) (iii) योजक (-)

(ख) वाक्य लिखते समय यदि कोई शब्द छूट जाए तो उसे लिखने के लिए किस चिह्न का प्रयोग किया जाता है?

(i) योजक (-) (ii) इकहरा उद्धरण ('.....') (iii) हंसपद (ʌ)

(ग) शब्दों का संक्षिप्त रूप लिखने के लिए किस चिह्न का प्रयोग होता है?

(i) निर्देशक (ii) लाघव चिह्न (iii) अर्ध विराम

2. निम्नलिखित वाक्यों में उपयुक्त विराम-चिह्न लगाइए—

(क) परिश्रमी ईमानदार और स्वस्थ व्यक्ति सबको भाते हैं

(ख) ओह अब क्या होगा

(ग) हम शिमला पहुँचे हाथ मुँह धोया कपड़े बदले और सैर के लिए निकल पड़े

(घ) सर्वपल्ली डॉ राधाकृष्णन का जन्मदिन अध्यापक दिवस के रूप में मनाया जाता है

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए—

(क) विराम-चिह्न का प्रयोग क्यों किया जाता है?

(ख) अल्पविराम और अर्ध विराम में क्या अन्तर है?

रचनात्मक गतिविधियाँ

- आपने हिन्दी की पाठ्य-पुस्तक में उद्धरण चिह्नों ('...' / "...") का प्रयोग देखा होगा। लेखक के नाम, उपनाम के साथ एकल उद्धरण चिह्न ('...') का प्रयोग होता है। इनके प्रयोग को समझिए और अपने साथियों के साथ दोनों प्रकार के उद्धरण-चिह्नों पर चर्चा कीजिए।

16

मुहावरे और लोकोक्तियाँ
Idioms and Proverbs

1. मुहावरे (Idioms)

ऐसे शब्द-समूह या वाक्यांश जो लगातार प्रयोग में आते-आते कोई सामान्य अर्थ न देकर विशेष अर्थ देने लगें, मुहावरे कहलाते हैं। मुहावरों के प्रयोग से भाषा में सरसता, रोचकता, प्रवाह, रंजकता, लालित्य और प्रभावोत्पादकता आ जाती है। साथ ही भाषा की प्रभावशीलता भी कई गुना बढ़ जाती है। उदाहरणार्थ—

- शोभित ने पढ़ाई के समय तो मेहनत की नहीं, अब परीक्षा में अनुत्तीर्ण होने पर वह हाथ मलता रह गया।

उक्त वाक्य में 'हाथ मलना' का सामान्य अर्थ 'हाथ धोते समय हाथों को मलना' नहीं है। यहाँ इसका लाक्षणिक अर्थ है—पछताना। मुहावरे के प्रयोग से वाक्य में चमत्कारिक सुन्दरता आ गई है।

इस प्रकार, जब कोई वाक्यांश (पदबन्ध) अपने मूल शाब्दिक अर्थ को छोड़कर उससे अलग किसी विशेष अर्थ को प्रकट करने लगता है तब वह मुहावरा हो जाता है।

कुछ अन्य उदाहरण देखिए—

1. **अँगूठा दिखाना** (साफ़ इनकार करना)—जब मैंने अपने मित्र से पहली बार सहायता माँगी तब उसने मुझे अँगूठा दिखा दिया।
2. **अन्धे की लकड़ी** (एकमात्र सहारा)—श्रवण कुमार अपने माता-पिता के लिए अन्धे की लकड़ी की तरह था।
3. **अक्ल पर पत्थर पड़ना** (बुद्धि नष्ट होना)—सभी जानते हैं कि बुरे दिन आने पर व्यक्ति की अक्ल पर पत्थर पड़ जाते हैं।
4. **अपना उल्लू सीधा करना** (अपना मतलब निकालना)—आजकल लोग प्राय: अपना उल्लू सीधा करने के लिए मित्रता का नाटक रचते हैं।
5. **अपने मुँह मियाँ मिट्ठू बनना** (अपनी बड़ाई खुद करना)—कामचोर व्यक्ति करते-धरते तो कुछ नहीं हैं बस अपने मुँह मियाँ मिट्ठू जरूर बने रहते हैं।
6. **आसमान सिर पर उठाना** (बहुत हल्ला-गुल्ला करना)—अध्यापक के अवकाश पर होने के कारण छात्रों ने आसमान सिर पर उठा लिया।
7. **आकाश-पाताल एक करना** (बहुत परिश्रम करना)—परीक्षा में प्रथम आने के लिए मैं आकाश-पाताल एक कर दूँगा।
8. **आँखें खुलना** (भ्रम दूर होना)—नेताजी की पोल खुलने पर सबकी आँखें खुल गईं।
9. **आँखों में धूल झोंकना** (धोखा देना)—शिवाजी मुगलों की आँखों में धूल झोंककर जेल से भाग गए थे।
10. **आँखें फेर लेना** (प्रतिकूल हो जाना)—गरीबी में प्राय: सभी आँखें फेर लेते हैं।

11. **आग में घी डालना** (क्रोध को और बढ़ाना)—लक्ष्मण ने क्रोधी परशुराम को खरी-खरी सुनाकर आग में घी डाल दिया।

12. **आसमान सिर पर टूट पड़ना** (विपत्ति आ पड़ना)—पिता की मृत्यु के बाद रमेश के सिर पर आसमान टूट पड़ा।

13. **ईंट का जवाब पत्थर से देना** (शत्रु का मुकाबला दृढ़ता से करना)—शिवाजी ने औरंगजेब को ईंट का जवाब पत्थर से दिया।

14. **उँगली पर नचाना** (अपनी इच्छानुसार काम करवाना)—कैकेयी राजा दशरथ को उँगली पर नचाती थी।

15. **ओखली में सिर देना** (जान-बूझकर झंझट मोल लेना)—पहले सोचना था, अब जब ओखली में सिर दिया है, तो घबराने से काम नहीं चलेगा।

16. **कमर कसना** (तैयार होना)—परीक्षा निकट आ रही है इसलिए प्रथम आने के लिए कमर कस लो।

17. **कलेजा मुँह को आना** (अत्यन्त दु:खी होना)—अचानक नौकरी छूटने की खबर सुनकर उसका कलेजा मुँह को आ गया।

18. **कान पर जूँ न रेंगना** (तनिक भी असर न होना)—सभी जानते थे कि दुर्योधन को चाहे कितनी भी शिक्षा दो, मगर उसके कान पर जूँ नहीं रेंगेगी।

19. **कान खड़े होना** (चौकन्ना होना)—जब विपक्ष का नेता मन्त्री जी के साथ मंच पर भाषण देने आया तो सबके कान खड़े हो गए।

20. **घाव पर नमक छिड़कना** (दु:ख में और दु:खी करना)—वह तो पहले से ही दु:खी था ऊपर से तुमने उसे कटु वचन कहकर उसके घावों पर नमक छिड़क दिया।

21. **घोड़े बेचकर सोना** (गहरी नींद में सोना)—पुत्री का विवाह करने के बाद वह घोड़े बेचकर सो रहा है।

22. **चार चाँद लगाना** (मान बढ़ाना)—विश्वनाथ आनन्द ने शतरंज में विश्व खिताब जीतकर अपने देश की कीर्ति में चार चाँद लगा दिए।

23. **चिराग तले अँधेरा होना** (ज्ञानी के घर अज्ञानता होना)—अध्यापक हरिमोहन ने अपने बच्चों को ही अशिक्षित रखकर चिराग तले अँधेरा कर रखा है।

24. **छाती पर साँप लोटना** (ईर्ष्या से जलना)—भारत की चहुँमुखी उन्नति को देखकर उसके शत्रुओं की छाती पर साँप लोटने लगा है।

25. **जान हथेली पर रखना** (बलिदान के लिए तैयार रहना)—सच्चे देशभक्त जान हथेली पर रखकर शत्रु का सामना करते हैं।

26. **टाँग अड़ाना** (विघ्न डालना)—किसी के काम में टाँग अड़ाना ठीक नहीं होता।

27. **टेढ़ी खीर** (कठिन कार्य होना)—आजकल सरकारी नौकरी मिलना एक टेढ़ी खीर है।

28. **तलवे चाटना** (खुशामद करना)—विजय ने अपने अधिकारियों के तलवे चाटकर अपने भाई को नौकरी पर लगवा लिया।

29. **तूती बोलना** (धाक जमना)—आज पूरे विश्व में भारत की तूती बोल रही है।

30. **दाँत काटी रोटी होना** (गहरी मित्रता)—भारत तथा जापान में दाँत काटी रोटी है।

31. **दाँत खट्टे करना** (हराना)—भारतीय सेना ने पाकिस्तानी सेना के दाँत खट्टे कर दिए।

32. **दाँतों तले उँगली दबाना** (आश्चर्यचकित रहना)—अजन्ता की गुफाओं को देखकर सभी ने दाँतों तले उँगली दबा ली।

33. **नौ दो ग्यारह होना** (भाग जाना)—पुलिस को देखते ही चोर नौ दो ग्यारह हो गया।

34. **नाक में दम करना** (तंग करना)—आजकल आतंकवादियों ने पुलिस की नाक में दम कर रखा है।

35. **पाँचों उँगलियाँ घी में होना** (लाभ ही लाभ)—जब से वस्तुओं के भाव बढ़े हैं तभी से व्यापारियों की पाँचों उँगलियाँ घी में हैं।

36. **पेट में दाढ़ी होना** (छोटा होने पर भी चतुर होना)—अरे! उसे बच्चा मत समझो, उसके तो पेट में दाढ़ी है।

37. **फूला न समाना** (बहुत प्रसन्न होना)—चुनाव में जीतने का समाचार सुनकर नेताजी फूले नहीं समाए।

38. **बाएँ हाथ का खेल** (बहुत ही आसान)—इस प्रश्न को हल करना मेरे लिए बाएँ हाथ का खेल है।

39. **रंग में भंग पड़ना** (खुशी में बाधा पड़ना)—टी०वी० में बड़ा मनोरंजक कार्यक्रम आ रहा था, अचानक बिजली चले जाने से रंग में भंग पड़ गया।

40. **लकीर का फकीर होना** (पुरानी बात पर चलने वाला)—मेरे दादाजी अपने विचारों को नहीं बदल सकते, क्योंकि वे तो लकीर के फकीर हैं।

41. **लकीर पीटना** (पुरानी बात को दोहराना)—जो होना था, वह तो हो गया, अब लकीर पीटने से क्या लाभ।

42. **लोहा मानना** (श्रेष्ठता स्वीकार करना)—अकबर जैसा प्रतापी सम्राट भी राणा प्रताप का लोहा मानता था।

43. **लोहा लेना** (सामना करना)—पुरु ने बड़ी बहादुरी से सिकन्दर की सेना से लोहा लिया।

44. **सिर आँखों पर बैठाना** (बहुत सम्मान करना)—जीतकर आई टीम को भीड़ ने सिर आँखों पर बिठा लिया।

45. **हवा से बातें करना** (बहुत तेज भागना)—राणा प्रताप का घोड़ा चेतक हवा से बातें किया करता था।

46. **हवा लगना** (प्रभाव पड़ना)—आजकल के युवक-युवतियों को पश्चिमी सभ्यता की हवा लग गई है।

2. लोकोक्तियाँ (Proverbs)

लोकोक्ति शब्द 'लोक' और 'उक्ति' से मिलकर बना है। लोकोक्तियाँ वाक्य का अंग न बनकर प्राय: पूर्ण वाक्य होती हैं। लोकोक्तियाँ सामाजिक जीवन के अनुभव के आधार पर बनती हैं। इन्हें कहावत और जनश्रुति नामों से भी सम्बोधित किया जाता है। लोकोक्तियाँ विशेष सन्दर्भ में प्रयुक्त होती हैं और उनका विशेष अर्थ ही लिया जाता है; जैसे—

'कोयल होय न ऊजरी, सौ मन साबुन लाय।'

इसमें 'कोयल' उसके जन्मजात गुण कालापन को प्रकट करता है, 'उजली होना' इस गुण के परिवर्तन को प्रकट

करता है और 'सौ मन साबुन लाय' विभिन्न उपायों का बोध कराता है। इसका विशेष अर्थ है—"भिन्न-भिन्न उपायों से भी व्यक्ति का जन्मजात गुण या अवगुण बदला नहीं जा सकता।"

कुछ अन्य उदाहरण देखिए—

1. **अब पछताए होत क्या जब चिड़ियाँ चुग गईं खेत** (अवसर निकलने पर पछताने का कोई फायदा नहीं)—पूरे वर्ष तो तुम मौज-मस्ती करते रहे। अब परीक्षा के दिन में घबरा रहे हो। अब पछताए होत क्या जब चिड़ियाँ चुग गईं खेत।
2. **अधजल गगरी छलकत जाय** (थोड़ा ज्ञान रखने वाला व्यक्ति अधिक दिखावा करता है)—एम०बी०बी०एस० की प्रवेश परीक्षा क्या पास कर ली, तुम तो स्वयं को डॉक्टर समझने लगे। सच ही है—अधजल गगरी छलकत जाय।
3. **आसमान से गिरा, खजूर में अटका** (एक मुसीबत से छूटकर दूसरी में फँस जाना)—प्रांजल की जेब बस में कटने से बची तो रास्ते में उसे डाकुओं ने घेर लिया। इसे कहते हैं—आसमान से गिरा, खजूर में अटका।
4. **ऊँची दुकान, फीका पकवान** (प्रसिद्धि के अनुरूप न होना)—कंचन अपनी ससुराल की प्रशंसा करते नहीं थकती थी, पर जब मैं उसके घर गई, तो सारी असलियत मेरे सामने आ गई। इसे कहते हैं—ऊँची दुकान, फीका पकवान।
5. **एक अनार सौ बीमार** (वस्तु कम, चाहने वाले अधिक)—देश में बेरोज़गारी इस कदर बढ़ गई है कि एक पद के लिए हज़ारों आवेदन-पत्र आ जाते हैं। इसे कहते हैं—एक अनार सौ बीमार।
6. **एक पंथ दो काज** (एक ही काम से दो लाभ होना)—मैं तो बाज़ार हिन्दी की पुस्तक लेने गई थी, परन्तु रास्ते में अपनी बहुत पुरानी सहेली से भी मुलाकात हो गई। यह तो वही हुआ—एक पंथ दो काज।
7. **कंगाली में आटा गीला** (मुसीबत में और मुसीबत आना)—अभी फैक्ट्री में आगजनी से उबरे भी नहीं थे कि पिता की भी सड़क दुर्घटना में मृत्यु हो गई। इसे कहते हैं—कंगाली में आटा गीला होना।
8. **घर की मुर्गी दाल बराबर** (घर की वस्तु या व्यक्ति का आदर नहीं होता)—बबीता बाहर तो एक समाजसेविका के रूप में खूब आदर पाती है, परन्तु घर में उसकी दशा एक नौकरानी से अधिक नहीं है। सच ही है—घर की मुर्गी दाल बराबर।
9. **घर का भेदी लंका ढाए** (अपनों द्वारा हानि पहुँचाना)—पटेल परिवार का व्यापार बहुत तेज़ी पर था, परन्तु अचानक ही बहुत बड़े नुकसान ने उन्हें डुबो दिया। श्री पटेल समझ गए कि यह उनके पार्टनर का ही काम है। सत्य ही है—घर का भेदी लंका ढाए।
10. **चार दिन की चाँदनी फिर अँधेरी रात** (कुछ दिनों की खुशी होना)—चुनाव के दौरान गरीबों को नेताओं से खूब तोहफ़े मिलते हैं, परन्तु बाद में उनकी ज़िन्दगी चार दिन की चाँदनी फिर अँधेरी रात की तरह हो जाती है।
11. **चोर की दाढ़ी में तिनका** (अपराधी भयभीत रहता है)—मालकिन का हार चोरी होने पर सभी नौकरों की तलाशी ली जा रही थी। ऐसे में चमन वहाँ से भागने लगा। सच ही है—चोर की दाढ़ी में तिनका।
12. **छोटा मुँह बड़ी बात** (अपनी योग्यता से बढ़कर बोलना)—तुमने गायन प्रतियोगिता क्या जीत ली, अपने-आपको सोनू निगम ही समझने लगे। यह तो छोटा मुँह बड़ी बात जैसा ही हुआ।
13. **जिसकी लाठी उसकी भैंस** (शक्तिशाली ही अधिकार पाता है)—आज के युग में सीधे-सच्चे लोगों को कोई नहीं पूछता। आज का युग तो उन्हीं का है—जिसकी लाठी उसकी भैंस।

14. **दूर के ढोल सुहावने** (दूर की चीज़ें अच्छी लगती हैं)—पैसा कमाने के लालच में कई लोग विदेश में मारे-मारे फिरते हैं। इसे कहते हैं—दूर के ढोल सुहावने।

15. **पराधीन सपनेहुँ सुख नाहीं** (परतन्त्र कभी सुखी नहीं होता)—सोने के पिंजड़े में बन्द मैना का मन ही नहीं लगता। ठीक ही कहा है—पराधीन सपनेहुँ सुख नाहीं।

16. **बन्दर क्या जाने अदरक का स्वाद** (मूर्ख व्यक्ति को गुणों की कद्र नहीं होती)—पश्चिमी संगीत की धुनों पर थिरकने वाले युवाओं के सामने शास्त्रीय संगीत का कोई महत्त्व नहीं है। उनके लिए तो यह कहावत सत्य प्रतीत होती है कि बन्दर क्या जाने अदरक का स्वाद।

17. **साँप मरे पर लाठी न टूटे** (बिना हानि के काम निकाल लेना)—जॉन बेईमान व्यक्ति है, उससे रुपया वापस लेने का कोई ऐसा तरीका निकालो जिससे साँप मरे पर लाठी न टूटे।

कुछ अन्य प्रमुख लोकोक्तियाँ अर्थ सहित दी जा रही हैं, इन्हें पढ़िए, समझिए तथा अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए—

1. **अन्धों में काना राजा**—अज्ञानियों के बीच कम ज्ञान वाला ही ज्ञानी समझा जाता है।
2. **आए थे हरि भजन को ओटन लगे कपास**—अच्छा काम छोड़कर व्यर्थ का काम करने लगे।
3. **उल्टा चोर कोतवाल को डाँटे**—अपराधी अपना दोष पकड़ने वाले पर ही मढ़ने लगता है।
4. **एक मछली सारे तालाब को गन्दा करती है**—एक दुष्ट सारे समूह को कलंकित कर देता है।
5. **एक ही थैली के चट्टे-बट्टे**—किसी बुरे कार्य में लगे हुए व्यक्तियों का एक साथ होना।
6. **खोदा पहाड़ निकली चुहिया**—परिश्रम अधिक, लाभ बहुत कम होना।
7. **चोर-चोर मौसेरे भाई**—अपराधी व्यक्ति सहज ही आपस में मिल जाते हैं।
8. **जंगल में मोर नाचा किसने देखा**—जहाँ आवश्यकता न हो वहाँ योग्यता प्रदर्शित करना बेकार है।
9. **थोथा चना बाजे घना**—ज्ञान कम लेकिन दिखावा बहुत।
10. **नाच न जाने आँगन टेढ़ा**—काम करना न आने पर बहाना ढूँढ़ना।
11. **नौ नगद, न तेरह उधार**—तुरन्त का कम लाभ, बाद के सम्भावित अधिक लाभ से अच्छा रहता है।
12. **हाथी के दाँत खाने के और, दिखाने के और**—कथनी और करनी में अन्तर होना।

1. सही उत्तर पर सही (✓) का चिह्न लगाइए—

(क) मुहावरों का प्रयोग किया जाता है—

(i) मन के विचारों को प्रकट करने के लिए

(ii) भाषा को रोचक और प्रभावशाली बनाने के लिए

(iii) भाषा को जानने के लिए

(ख) 'आँखों में धूल झोंकना' का अर्थ है—

(i) धोखा देना (ii) हानि पहुँचाना (iii) अन्धा करना

(ग) 'लोहा लेना' का अर्थ है—

(i) श्रेष्ठता स्वीकार करना (ii) सामना करना (iii) वस्तु खरीदना

(घ) 'अधजल गगरी छलकत जाय' का अर्थ है—

(i) अयोग्य व्यक्ति अपनी अधिक ही प्रशंसा करता है।

(ii) थोड़ा ज्ञान रखने वाला व्यक्ति अधिक दिखावा करता है।

(iii) अयोग्य व्यक्ति ज्ञान की बातें नहीं जानता।

2. नीचे 'अ' वर्ग में मुहावरे दिए गए हैं और 'ब' वर्ग में उनके अर्थ। सही जोड़े मिलाइए—

अ	ब
(क) कलेजा मुँह को आना	(i) ईर्ष्या से जलना
(ख) उँगली पर नचाना	(ii) पराजित करना
(ग) छाती पर साँप लोटना	(iii) अत्यन्त दु:खी होना
(घ) दाँत खट्टे करना	(iv) साफ़ इनकार करना
(ङ) अँगूठा दिखाना	(v) अपनी इच्छानुसार काम करवाना

3. निम्नलिखित वाक्यों में खाली स्थानों को उपयुक्त मुहावरों से पूरा कीजिए—

(क) आजकल धनी व्यक्ति से मित्रता इसलिए की जाती है जिससे अपना .....।

(ख) जब अर्चित प्रथम आया तो वह ..... समाया।

(ग) हम पिकनिक पर जाने ही वाले थे कि अचानक अतिथि ने आकर ..... दिया।

(घ) भारत के सैनिकों ने पाकिस्तानी सेना के ..... दिए।

(ङ) शताब्दी एक्सप्रेस हवा ..... है।

4. नीचे दिए गए अर्थों से सम्बन्धित मुहावरे लिखिए—

(क) अपनी हानि स्वयं करना .....

(ख) जानबूझकर आपत्ति मोल लेना .....

(ग) छोटी-सी बात को बढ़ा-चढ़ाकर कहना .....

(घ) छोटा होने पर भी चतुर होना .....

(ङ) बहुत सम्मान करना .....

5. नीचे दी गई लोकोक्तियों को उनके सही अर्थ से मिलाइए—

लोकोक्तियाँ	अर्थ
(क) घर का भेदी लंका ढाए	(i) अपना दोष दूसरे पर मढ़ना
(ख) चोर की दाढ़ी में तिनका	(ii) बिना हानि के काम निकाल लेना
(ग) उल्टा चोर कोतवाल को डाँटे	(iii) अपनों द्वारा हानि पहुँचाना
(घ) साँप मरे पर लाठी न टूटे	(iv) अपनी योग्यता से बढ़कर बोलना
(ङ) छोटा मुँह बड़ी बात	(v) अपराधी भयभीत रहता है

6. नीचे दिए गए अर्थों से सम्बन्धित लोकोक्तियाँ लिखिए—

(क) अधिक बोलने वाला कुछ नहीं करता। .....

(ख) एक मुसीबत से छूटकर दूसरी में फँस जाना। .....

(ग) प्रत्यक्ष को प्रमाण की आवश्यकता नहीं होती। .....

(घ) अवसर निकलने पर पछताने का कोई फायदा नहीं। .....

7. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए—

(क) मुहावरा किसे कहते हैं? मुहावरे की प्रमुख विशेषताएँ बताइए।

(ख) मुहावरे और लोकोक्ति का अन्तर उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।

(ग) किन्हीं पाँच लोकोक्तियों का अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए।

रचनात्मक गतिविधियाँ

1. कुछ मुहावरे अलग-अलग खण्डों में दिए गए हैं। इन्हें आपस में मिलाकर सही मुहावरा चुनें। फिर इन मुहावरों का अपने वाक्यों में इस प्रकार प्रयोग करें कि उनका अर्थ स्पष्ट हो जाए—

	अ	ब	वाक्य-प्रयोग
(क)	कोल्हू का	सिर पर उठाना	.....
(ख)	आसमान	घी में होना	.....
(ग)	चादर से बाहर	बैल होना	.....
(घ)	पाँचों उँगलियाँ	सवार होना	.....
(ङ)	गर्दन पर	पैर फैलाना	.....

2. उपयुक्त शब्दों द्वारा नीचे दी गई लोकोक्तियों को पूरा कीजिए तथा उनके अर्थ बताइए—

(क) एक अनार सौ ....

(ख) आए थे हरि भजन को ....

(ग) ..... अदरक का स्वाद .....

(घ) जंगल में मोर ....

(ङ) ..... दाल बराबर। .....

17

अनुच्छेद-लेखन
Paragraph-Writing

किसी विषय पर अपने भावों या विचारों को संक्षिप्त रूप में अभिव्यक्त करना अनुच्छेद-लेखन कहलाता है। इसे लघु निबन्ध भी कह सकते हैं। यदि निबन्ध सागर है तो अनुच्छेद गागर में सागरभर है। इसमें 10–12 पंक्तियों की सीमा के भीतर ही विषय-परिचय, वर्णन व निष्कर्ष लिखने होते हैं। अनुच्छेद लिखने का विषय दैनिक घटना, अनुभव, सूक्ति या काव्य-पंक्ति आदि कुछ भी हो सकता है।

अनुच्छेद लिखते समय निम्नलिखित बातों को ध्यान में रखना चाहिए—

- सर्वप्रथम दिए गए विषय के केन्द्रीय भाव को समझकर उस पर भली-भाँति विचार कर लेना चाहिए।
- आरम्भ में लम्बी भूमिका और पुनरावृत्ति से बचना चाहिए।
- विषय के अनुरूप छोटे-छोटे वाक्यों का प्रयोग करना चाहिए। वाक्यों के बीच यथोचित तालमेल होना चाहिए।
- अनुच्छेद में कही गई बातें क्रमबद्ध और व्यवस्थित होनी चाहिए।
- अनुच्छेद की भाषा और शैली सहज, सरल, सरस और प्रभावोत्पादक होनी चाहिए।

कुछ अनुच्छेदों के नमूने

1. विद्यार्थी जीवन

विद्यार्थी जीवन भावी जीवन की आधारशिला है। विद्यार्थी अपने प्रारम्भिक जीवन में जितना गंभीरतापूर्वक अध्ययन कर योग्य बनता है, उसका भावी-जीवन उतना ही सुखी और समृद्ध हो जाता है। इतना ही नहीं वह संसार और मानव-जाति के लिए वरदान भी सिद्ध होता है। विश्व में जितने भी साहित्यकार, कवि और महापुरुष हुए हैं वे सभी अपने विद्यार्थी जीवन में विद्याव्यसनी और कर्मठ रहे हैं। ऐसे लोग ही संसार को नवप्रकाश और दिशा प्रदान करने वाले सिद्ध हुए हैं। स्वयं सुखी रहकर अन्यों को भी सुखी बनाते रहे हैं। विद्यार्थी जीवन संपूर्ण जीवन की नींव है। जिस प्रकार सुदृढ़ नींव पर ही विशाल और सुदृढ़ महल खड़ा किया जा सकता है उसी प्रकार योग्य एवं विद्याव्यसनी विद्यार्थी का ही जीवन सफल और देदीप्यमान होता है।

2. शिक्षक दिवस

शिक्षक दिवस प्रतिवर्ष 5 सितम्बर को मनाया जाता है। यह गुरु-शिष्य परम्परा का आधुनिक रूप है। प्राचीन भारत में शिष्य अपने गुरु के साथ आश्रम में रहते थे। वे गुरु की सेवा करते और शिक्षा प्राप्त करते थे। शिक्षा पद्धति आज चाहे कितनी ही बदल गई है, परन्तु गुरु को भरपूर सम्मान देने की प्रथा आज भी भारत में है। 'शिक्षक दिवस' का मनाना इसी भावना का प्रतीक है। 5 सितम्बर डॉ० सर्वपल्ली राधाकृष्णन का जन्मदिन है। वे एक कुशल शिक्षक तथा स्वतन्त्र भारत के राष्ट्रपति थे। विश्व भर के विद्वान उनका आदर करते थे। उन्होंने कई ग्रन्थों की रचना की। विद्यालयों में शिक्षक दिवस अलग-अलग ढंग से मनाया जाता है। इस दिन विशेष सभाओं का आयोजन किया जाता है। बच्चे काफ़ी दिन पहले से नृत्य व संगीत के कार्यक्रमों की तैयारी में जुट जाते हैं। शिक्षक दिवस के दिन बच्चे अध्यापकों के प्रति आदर व प्रेम को प्रकट करने के लिए उन्हें फूल देते हैं और तरह-तरह के रंग-बिरंगे कार्ड बनाकर अध्यापकों को उपहार में देते हैं। अध्यापकों के लिए विशेष सांस्कृतिक कार्यक्रम, भोज आदि का प्रबन्ध होता है। शिक्षक दिवस देश भर के विद्यालयों में श्रद्धापूर्वक मनाया जाता है।

3. समुद्र-तट की सैर

मैं अपने परिवार के साथ चेन्नई घूमने के लिए गया। वहाँ पहुँचकर हम सभी शाम के समय समुद्र-तट की सैर पर निकले। चेन्नई में चारों ओर हरियाली-ही-हरियाली है। समुद्र-तट पर पहुँचे, तो सूर्यास्त होने वाला था। चारों ओर सुनहरी लालिमा फैली हुई थी। हल्की ठण्डी हवा चल रही थी। समुद्र की लहरें उछल-उछलकर तट की ओर आतीं और उसे छूकर वापस चली जातीं। इतना मनोरम दृश्य देखकर मेरा मन प्रसन्नता से झूम उठा। हम सभी प्रकृति की सुषमा को निहार रहे थे। मैंने अपने जूते उतार दिए और समुद्र की लहरों से खेलने लगा। वहीं मेरी बहन और मैंने बहुत-से शंख और सीपियाँ इकट्ठे किए, फिर सबने मिलकर नारियल पानी पीया। अँधेरा होने पर हम लोग अपने ठहरने के स्थान की ओर चल पड़े। समुद्र-तट की यह सैर मेरे लिए जीवन भर की यादगार सैर बन गई।

4. हँसी का महत्त्व

आजकल हँसी भी दुर्लभ होती जा रही है। सभी के चेहरों पर तनाव, चिन्ता, दु:ख, उदासी ही अधिकतर दिखाई देती है। मुस्कराते हुए चेहरों का मानो अकाल ही पड़ गया है। क्या आप जानते हैं कि एक वयस्क मनुष्य एक बच्चे के मुकाबले केवल 30 प्रतिशत हँसता है। यही कारण है कि आजकल के तनावपूर्ण जीवन में मनुष्य अनेक घातक बीमारियों का शिकार होता जा रहा है। हँसना सेहत के लिए उतना ही आवश्यक है जितना कि भोजन करना। हँसने से शरीर में रक्त-संचार भली प्रकार से होता है और अनेक प्रकार के रोगों से तथा तनावों से लड़ने की क्षमता बढ़ती है। चाहे आप कितने ही व्यस्त क्यों न हों, परन्तु अपने लिए समय अवश्य निकालना चाहिए, जिसमें आप दोबारा बच्चा बनकर वही हँसी और खुशी प्राप्त कर सकें जो आपको बचपन में मिली थी। आज तो यह नारा होना चाहिए—'हँसो-हँसाओ जीवन खुशहाल बनाओ।'

5. कुसंगति का प्रभाव

जिस प्रकार एक गिलास अमृत-तुल्य पेय को विष की एक बूँद भी विषाक्त कर देती है उसी प्रकार थोड़ी-सी भी कुसंगति व्यक्ति के संपूर्ण अच्छे गुणों को नष्ट करने में समर्थ होती है। गुण अवगुण में बदलने लगते हैं और व्यक्ति कुछ-का-कुछ हो जाता है। कुसंगी और अपराधी मानसिकता के व्यक्ति को न तो समाज में आदर मिलता है और न ही वह किसी प्रकार की उन्नति ही कर पाता है। कुछ छात्र जब कुसंगति में पड़ जाते हैं तो सरस्वती की कृपा उन पर से हट जाती है, लक्ष्मी जी उनसे कोसों दूर भाग जाती हैं। इस संसार में दु:ख व अपमान के अतिरिक्त उन्हें कुछ और मिलता ही नहीं है। कुसंग में सब लोग अनुशासनहीन हो जाते हैं, जिससे वे परिवार, समाज व राष्ट्र किसी के प्रति भी अपने कर्तव्यों और दायित्वों का निर्वाह नहीं कर पाते। कुसंग के बारे में पं० रामचंद्र शुक्ल ने कहा है—

"कुसंग का ज्वर सबसे भयानक होता है। किसी युवा पुरुष की संगति बुरी होगी तो वह उसके पैरों में बँधी चक्की के समान होगी, जो उसे दिन-पे-दिन अवनति के गड्ढे में गिराती जाएगी और यदि अच्छी होगी तो सहारा देने वाली बाहु के समान होगी, जो उसे निरंतर उन्नति व प्रगति की ओर उठाती जाएगी।"

इस प्रकार, सत्संग और कुसंग ही मनुष्य के उत्थान व पतन का कारण बनता है।

- **निम्नलिखित विषयों पर अनुच्छेद लिखिए—**

(क) अनेकता में एकता, हिन्दी की विशेषता।
(ख) रेलवे स्टेशन पर मची भगदड़।
(ग) जब मुझे पहली बार चाय बनानी पड़ी।
(घ) यदि मैं सैनिक होता।
(ङ) विद्यार्थी और अनुशासन।
(च) भारत को कैसा नेता चाहिए।

18

सार-लेखन
Precis-Writing

'सार' का शाब्दिक अर्थ है—'निचोड़' या 'मूल तत्त्व'। जब किसी अवतरण को उसके मुख्य बिन्दुओं को छोड़े बिना अत्यन्त संक्षेप में व्यक्त किया जाता है, तो इसी प्रक्रिया का नाम 'सार-लेखन' है।

सार-लेखन के लिए निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना चाहिए—

- ❖ 'सार' दिए गए अवतरण का लगभग एक-तिहाई भाग होना चाहिए।
- ❖ 'सार-लेख' करते समय सर्वप्रथम दिए गए अवतरण को एक-दो बार ध्यान से पढ़ना चाहिए।
- ❖ पढ़ते-पढ़ते उसके महत्त्वपूर्ण बिन्दुओं को रेखांकित करते जाना चाहिए।
- ❖ अब इन महत्त्वपूर्ण बिन्दुओं को क्रम से लिख लेना चाहिए।
- ❖ अवतरण में आए उद्धरणों, सूक्तियों, उदाहरणों, घटनाओं, काव्य-पंक्तियों, मुहावरों, लोकोक्तियों को छोड़ देना चाहिए।
- ❖ 'सार' लिखने के बाद उसे एक बार पढ़ना अवश्य चाहिए और यह देखना चाहिए कि कहीं अवतरण का कोई महत्त्वपूर्ण बिन्दु छूट तो नहीं गया है।

कई बार अवतरण का शीर्षक भी लिखने को कहा जाता है। शीर्षक का चयन करते समय ध्यान रखिए—

(i) शीर्षक कम-से-कम शब्दों का हो।

(ii) वह आकर्षक तथा अर्थपूर्ण हो।

(iii) उसका सीधा सम्बन्ध अवतरण के मूल भाव से हो।

नीचे कुछ अवतरण तथा उनके सार (लगभग एक-तिहाई शब्दों में) दिए जा रहे हैं। उन पर ध्यान दीजिए—

1. सफल और असफल मनुष्यों में क्या अन्तर है? यह कि एक ने कम काम किया और दूसरे ने ज्यादा! क्या यही दोनों के परिश्रम के विभिन्न परिणामों का कारण है? नहीं, बात कुछ और ही है। सफल आदमी ने अपना कार्य बुद्धिमत्ता से किया, एकाग्रता से किया, उसमें अपना दिमाग लगाया। असफल व्यक्ति ने बोझा ढोया था। ऐसे लोग काम तो बहुत करते हैं, परिश्रम भी करते हैं, लेकिन उसमें अपनी बुद्धि का उपयोग नहीं करते। उनके श्रम और उनके फल को देखकर दया आती है। वे परिस्थितियों को पकड़े रहते हैं और नहीं जानते कि अवसर से किस तरह लाभ उठाना चाहिए। उनमें यह योग्यता नहीं होती जिससे कि वे असफलता को सफलता में बदल दें।

   (i) सार—किसी भी कार्य की सफलता या असफलता में बुद्धिमत्ता और एकाग्रता का महत्त्व होता है। काम करने की अधिकता या न्यूनता का नहीं। बुद्धि और अवसर का लाभ उठाने के अभाव से असफलता ही मिलती है।

   (ii) शीर्षक—सफलता का रहस्य।

2. सच्चा मित्र एक शिक्षक की भाँति होता है। जिस प्रकार एक शिक्षक अपने छात्र को सन्मार्ग की ओर ही अग्रसर करता है, उसी प्रकार एक सच्चा मित्र अपने मित्र को पाप के गर्त में गिरने से बचाता है। मानव-जीवन अधिक रहस्यपूर्ण है। कभी-कभी जीवन में ऐसे अवसर उपस्थित हो जाते हैं जब मनुष्य की धर्म-बुद्धि नष्ट हो जाती है

और उसका मन तेज गति से पाप की ओर दौड़ता है। ऐसे समय में मित्र का उपदेश ही अधिक कल्याणकारी सिद्ध होता है। मित्र के उपदेश का जितना प्रभाव हृदय पर पड़ता है, उतना और किसी का नहीं पड़ता।

(i) सार—सच्चा मित्र अपने मित्र को पाप के गर्त से बचाकर सन्मार्ग की ओर अग्रसर करता है। धर्म-बुद्धि के नष्ट होने पर पाप की ओर दौड़ते हुए मन पर मित्र के उपदेश का ही सर्वाधिक प्रभाव पड़ता है।

(ii) शीर्षक—सच्चा मित्र।

3. शिक्षा मनुष्य के मस्तिष्क और शरीर का उचित प्रयोग करना सिखाती है। वह शिक्षा, जो मनुष्य को पाठ्य-पुस्तकों के ज्ञान के अतिरिक्त कुछ गम्भीर चिन्तन न दे, व्यर्थ है। यदि हमारी शिक्षा, सुसंस्कृत, सभ्य, सच्चरित्र एवं अच्छे नागरिक नहीं बना सकती, तो उससे क्या लाभ! सहृदय, सच्चा, परन्तु अनपढ़ मजदूर उस स्नातक से कहीं अच्छा है, जो निर्दय और चरित्रहीन है। हमारे कुछ अधिकार व उत्तरदायित्व भी हैं। शिक्षित व्यक्ति को उत्तरदायित्वों का भी उतना ही ध्यान रखना चाहिए, जितना कि अधिकारों का।

(i) सार—शिक्षा मनुष्य को बुद्धि और शरीर का समुचित प्रयोग करना सिखाती है। ऐसी शिक्षा जो मानव को चिन्तन, सच्चरित्रता, उत्तरदायित्वों का बोध, सहृदयता आदि न दे सके, वह व्यर्थ है।

(ii) शीर्षक—सच्ची शिक्षा।

● निम्नलिखित गद्यांशों का सार लगभग एक-तिहाई शब्दों में लिखिए तथा इनका उपयुक्त शीर्षक भी सुझाइए—

(क) स्वतन्त्र भारत का सम्पूर्ण दायित्व आज विद्यार्थियों के ही ऊपर है, क्योंकि आज जो विद्यार्थी हैं, वे ही कल स्वतन्त्र भारत के नागरिक होंगे। भारत की उन्नति और उसका उत्थान उन्हीं की उन्नति और उत्थान पर निर्भर करता है। अत: विद्यार्थियों को चाहिए कि वे अपने भावी जीवन का निर्माण सतर्कता और सावधानी के साथ करें। उन्हें प्रत्येक क्षण अपने राष्ट्र, अपने समाज, अपने धर्म, अपनी संस्कृति को अपनी आँखों के सामने रखना चाहिए, जिससे उनके जीवन से राष्ट्र को कुछ बल प्राप्त हो सके। जो विद्यार्थी राष्ट्रीय दृष्टिकोण से अपने जीवन का निर्माण नहीं करते, वे राष्ट्र और समाज के लिए भार-स्वरूप हैं।

(ख) ऐसा देखा जाता है कि अधिकांश लोग अपने बहुमूल्य समय को व्यर्थ में व्यतीत कर देते हैं और जीवन के अन्तिम समय में पश्चात्ताप करते हैं, परन्तु फिर तो वही बात हो जाती है कि "अब पछताये होत क्या जब चिड़ियाँ चुग गईं खेत।" आज हम लोग व्यर्थ की बातों में जितना समय नष्ट कर देते हैं, यदि उनके दशमांश का भी सदुपयोग करना सीख जाएँ तो हम जीवन में असाधारण सफलताएँ प्राप्त कर सकते हैं। प्रत्येक सुन्दर समय हमारे लिए सुन्दर वस्तुएँ लेकर आता है, किन्तु हम उससे कोई लाभ नहीं उठाते।

(ग) निन्दा का उद्‌गम ही हीनता और कमजोरी से होता है। मनुष्य अपनी हीनता से दबता है। वह दूसरों की निन्दा करते हुए ऐसा अनुभव करता है कि वे सब निकृष्ट हैं और वह उनसे अच्छा है। उसके अहं की इससे तुष्टि होती है। बड़ी लकीर को कुछ मिटाकर छोटी लकीर बड़ी बनती है। ज्यों-ज्यों कर्म क्षीण होता जाता है, त्यों-त्यों निन्दा की प्रवृत्ति बढ़ती जाती है।

(घ) दस गीदड़ों की अपेक्षा एक सिंह अच्छा है। सिंह सिंह है और गीदड़ गीदड़ है। यही स्थिति किसी परिवार के उन सदस्यों की होती है जिनकी संख्या आवश्यकता से अधिक हो। न भरपेट भोजन, न तन ढकने को वस्त्र। न अच्छी शिक्षा, न मनचाहा रोजगार। गृहपति प्रतिक्षण चिन्ता में डूबा रहता है। रात की नींद और दिन का चैन गायब हो जाता है। बार-बार दूसरों पर निर्भर होने की विवशता। सम्मान और प्रतिष्ठा तो जैसे सपने की बातें हों। यदि दुर्भाग्यवश गृहपति न रहा तो आश्रितों का कोई ठिकाना नहीं। इसलिए आवश्यक है कि परिवार छोटा हो।

19

संवाद-लेखन
Dialogue-Writing

हम लोग आपस में बातचीत करते हैं। बातचीत करते समय हम संवादों का प्रयोग करते हैं। संवाद का विषय कुछ भी हो सकता है। बातचीत को आकर्षक और प्रभावशाली बनाने में संवादों का महत्त्वपूर्ण योगदान होता है। हम प्राय: नाटकों में पात्रों को संवाद बोलते सुनते हैं। संवाद लिखना एक कला है। अच्छे संवाद नाटक में जान डाल देते हैं। दी हुई स्थिति पर दो या अधिक पात्रों के बीच बातचीत को संवाद में लिखना संवाद-लेखन कहलाता है। लिखित संवाद में लेखक अपनी कल्पना से ही दो या अधिक पात्रों के संवाद लिखता है।

संवाद-लेखन के समय निम्नलिखित बातों का विशेष ध्यान रखना चाहिए—

- संवाद की भाषा सरल, स्पष्ट, पात्रानुकूल व भावानुकूल होनी चाहिए।
- वाक्य रोचक व संक्षिप्त होने चाहिए।
- संवाद घटना, परिस्थिति तथा समय के अनुकूल होने चाहिए।
- संवादों में क्रमबद्धता होनी चाहिए।

संवाद-लेखन के उदाहरण–

1. **पहलवान और मुल्ला नसीरुद्दीन की बातचीत—**

पहलवान : तुम भले ही अक्ल में बड़े हो, लेकिन ताकत तो मुझमें ही अधिक है।

मुल्ला : अच्छा, पर यह तो बताओ, तुम्हारे अन्दर कितनी ताकत है?

पहलवान : मैं पाँच क्विंटल की चट्टान को एक हाथ से उठाकर आकाश में उछाल सकता हूँ।

मुल्ला : अच्छा! तो आओ मेरे साथ। देखते हैं, कौन अधिक ताकतवर है?

पहलवान : ठीक है। कहो क्या करना है?

मुल्ला : ज़रा इस रूमाल को उस ऊँची दीवार के पार तो फेंककर दिखाओ।

पहलवान : यह कौन-सी बड़ी बात है।

(यह कहकर पहलवान ने रूमाल को पूरी ताकत से ऊपर उछाला लेकिन हल्का होने के कारण थोड़ी ऊँचाई से वापस नीचे आ गिरा।)

मुल्ला : पहलवान जी, इस काम में अक्ल की ताकत भी चाहिए जिसकी तुम्हारे अन्दर कमी है।

(फिर मुल्ला ने रूमाल एक छोटे कंकड़ में लपेटकर ऊपर की ओर फेंका, और रूमाल ऊँची दीवार के पार जा गिरा।)

2. **सौरभ और अजय में संवाद—**

सौरभ : भाई! मनुष्य पेड़-पौधों को क्यों काटता जा रहा है?

अजय : खेती के लिए अधिक भूमि चाहिए, इसलिए मनुष्य जंगलों को काटकर खेतों में बदल रहा है।

सौरभ : खेती के लिए जंगलों को काटने की जरूरत क्यों हुई?

अजय : अब जनसंख्या में लगातार वृद्धि हो रही है। बढ़ी हुई आबादी के लिए अधिक अनाज चाहिए, इसलिए खेत भी अधिक चाहिए।

सौरभ : पेड़-पौधों के कटने से हमारी समस्याएँ बढ़ रही हैं।

अजय : तुम ठीक कह रहे हो। हरे-भरे पेड़-पौधों से वायु शुद्ध होती रहती है। पेड़ के सभी हिस्सों का किसी न किसी रूप में प्रयोग होता है। इसलिए वनों और पेड़-पौधों का घटना मनुष्यों के लिए हानिकारक है।

सौरभ : फिर मनुष्य अपना भला क्यों नहीं सोच रहा है?

अजय : धीरे-धीरे मनुष्य समझ रहा है, इसलिए पेड़-पौधों को लगाकर हरियाली बढ़ाने पर जोर दिया जा रहा है। इसी में सब प्राणियों की भलाई है।

3. बिना बुलाए मेहमान की तरह एक पड़ोसी रोज सुबह अखबार पढ़ने आ जाते हैं। इस विषय पर गृहस्वामी और गृहस्वामिनी के बीच हुई बातचीत को संवाद के रूप में लिखिए—

गृहस्वामी : *(अपनी पत्नी को बुलाते हुए)* एजी सुनती हो! अगर आज का अखबार आ गया हो तो, ज़रा लाना। देखूँ आज के मुख्य समाचार क्या हैं?

गृहस्वामिनी : ठहरिए, अभी लाती हूँ।

(थोड़ी देर में खाली हाथ आती है, चेहरे पर क्रोध के भाव हैं।)

गृहस्वामी : क्या अभी तक आज का अखबार नहीं आया?

गृहस्वामिनी : क्या बताऊँ? आया तो था, पर उसे तुम्हारे वही दोस्त मंगतराम ले गए हैं।

गृहस्वामी : पर अभी तो उसकी शक्ल तक नहीं देखी और इससे पहले ही वह ले भी गया?

गृहस्वामिनी : हाँ, पहले तो यहीं बैठकर उसे पढ़ लेते थे, पर अब तो सीधे अखबार वाले से ही लेते हैं और अपने घर के बाहर पढ़कर उसे हमारे घर डाल जाते हैं।

गृहस्वामी : *(क्रोधित होकर)* यदि उन्हें अखबार पढ़ने का इतना ही शौक है, तो फिर अपना अखबार क्यों नहीं मँगा लेते?

गृहस्वामिनी : जब रोजाना मुफ़्त में ही अखबार पढ़ने को मिल जाए, तो फिर पैसे खर्च करने की क्या जरूरत है?

गृहस्वामी : तो फिर क्या करें? इस समस्या को कैसे हल करें?

गृहस्वामिनी : मेरी राय मानो तो तुम भी कुछ दिनों के लिए अखबार लेना बन्द कर दो।

4. दूरदर्शन-कार्यक्रमों के विषय में पिता-पुत्र के बीच हुई बातचीत को संवाद के रूप में लिखिए।

पिता : बेटा, मैं देख रहा हूँ आजकल तुम्हारा ध्यान पढ़ाई की ओर नहीं लगता। दिन-भर टी०वी० देखते रहते हो। क्या तुम्हें अपनी परीक्षा की ज़रा भी फिक्र नहीं है?

पुत्र : क्षमा करें पिता जी, मैं केवल वो कार्यक्रम ही देखता हूँ जो ज्ञानवर्धक तथा शिक्षाप्रद होते हैं।

पिता : बेटा! मेरी नज़र में तो ऐसे कार्यक्रम हैं ही नहीं जो ज्ञानवर्धक और शिक्षाप्रद हों। दूरदर्शन पर दिखाए जाने वाले कार्यक्रमों में अच्छे-बुरे का ध्यान नहीं रखा जाता।

पुत्र : पिताजी, आजकल तो सामान्य ज्ञान, विज्ञान, धर्म, संस्कृति, इतिहास, कृषि आदि से सम्बन्धित अनेक कार्यक्रम प्रसारित किए जाते हैं।

पिता : लेकिन ऐसे कार्यक्रम कब आते हैं? मैंने तो कभी देखे नहीं।

पुत्र : मैं मानता हूँ कि दूरदर्शन पर अनेक ऐसे कार्यक्रम आते रहते हैं जिनमें पारिवारिक सम्बन्धों, भारतीय संस्कृति आदि पर उतना ध्यान नहीं दिया जाता, पर आजकल ऐसे अनेक कार्यक्रम शुरू किए गए हैं जो अत्यन्त ज्ञानवर्धक हैं। आज जब ये कार्यक्रम आएँगे तो मैं आपको भी दिखाऊँगा फिर आप निश्चित करना कि ये किस स्तर के हैं तथा कितने उद्देश्यपूर्ण हैं?

कुछ करके सीखें

1. निम्नलिखित अधूरे वार्तालाप को अपनी कल्पना के आधार पर आगे बढ़ाते हुए पूरा कीजिए—

महिला : भाई, ज़रा ये सब्ज़ियाँ तौल देना।

सब्ज़ीवाला : मैडम जी, दो मिनट रुको, पहले इन भाई साहब की सब्ज़ियाँ तौल दूँ।

महिला : हाँ, हाँ पहले इनकी सब्ज़ियाँ ही तौल दो। मगर ये 100 ग्राम के बाट की जगह तुमने पत्थर क्यों रखा है?

सब्ज़ीवाला : मैडम जी, घर में बच्चों ने खेलते-खेलते न जाने बाट कहाँ गुम कर दिया। जल्दी में मैंने संगमरमर के पत्थर को तोड़-घिसकर सौ ग्राम का बाट बनाया।

महिला : मगर हम कैसे मान लें कि यह सौ ग्राम का बाट सही तौल दे रहा है?

सब्ज़ीवाला : मैडम जी, कहीं भी तुलवा लो। बाट में एक ग्राम का भी इधर-उधर नहीं होगा।

महिला : .....

सब्ज़ीवाला : .....

महिला : .....

सब्ज़ीवाला : .....

महिला : .....

सब्ज़ीवाला : .....

2. निम्नलिखित विषयों पर संवाद लेखन कीजिए—

(क) परीक्षा में आए कठिन प्रश्नों को लेकर दो सखियों में बातचीत।

(ख) अपने क्षेत्र में फैली गन्दगी के सम्बन्ध में क्षेत्र के स्वास्थ्य अधिकारी और क्षेत्र के निवासियों के बीच बातचीत।

(ग) एक दुकानदार और ग्राहक के बीच किसी घटिया सामान की वापसी को लेकर हुई बातचीत।

(घ) देश में बढ़ते भ्रष्टाचार के सम्बन्ध में दो बुजुर्गों की बातचीत।

(ङ) परीक्षा की तैयारी के सम्बन्ध में दो विद्यार्थियों के बीच हुई बातचीत।

(च) बढ़ते हुए फैशन के सम्बन्ध में दो महिलाओं के बीच हुई बातचीत।

(छ) दिल्ली में मेट्रो रेल लाइन को लेकर दो व्यक्तियों में हुई बातचीत।

(ज) दो मित्रों में किसी विषय की पढ़ाई सम्बन्धी कठिनाइयों के सम्बन्ध में हुई बातचीत।

20

कहानी-लेखन
Story-Writing

कहानी गद्य साहित्य की महत्त्वपूर्ण विधा है। कहानी सुनना और पढ़ना सभी को, विशेषकर बच्चों को, बहुत अच्छा लगता है। कहानी में राजा-रानी, परी, मनुष्य, पशु-पक्षी आदि का चित्रण होता है। ये कहानी के पात्र होते हैं। पात्र आपस में जो बातें करते हैं उन्हें संवाद या कथोपकथन कहते हैं। पात्रों की परिस्थितियों और कार्यों के वर्णन को कहानी की कथावस्तु कहा जाता है जो वास्तविक भी हो सकती है और काल्पनिक भी। प्रत्येक कहानी का कोई-न-कोई प्रयोजन (उद्देश्य) होता है। मुख्य उद्देश्य तो मनोरंजन कराना है। परन्तु इससे हमें प्राय: कोई शिक्षा अवश्य मिलती है। इस प्रकार, कहानी के चार मुख्य अंग होते हैं—कथावस्तु, पात्र, कथोपकथन और उद्देश्य।

कहानी-लेखन अपने-आप में एक ऐसी कला है जिससे कहानीकार की अभिव्यक्ति क्षमता, कल्पना-शक्ति, सम्प्रेषणनीयता (परख/जाँच) तथा भाषा-ज्ञान का मूल्यांकन किया जा सकता है।

कहानी-लेखन में ध्यान रखने योग्य महत्त्वपूर्ण बिन्दु—

- कहानी में आदि से अन्त तक कुतूहल बना रहना चाहिए। अच्छी कहानी वही है जिसका परिणाम जानने की अन्त तक उत्सुकता बनी रहे।
- कहानी की घटनाओं में स्वाभाविकता होनी चाहिए और कथा-सूत्र का विकास सुसम्बद्ध होना चाहिए।
- कहानी को रोचक और प्रभावी बनाने के लिए सरल, सहज, बोधगम्य, मुहावरेदार, पात्रानुकूल भाषा का प्रयोग किया जाना चाहिए।

इस स्तर पर कहानी-लेखन सिखाने के लिए निम्नलिखित प्रकार के अभ्यास उपयोगी सिद्ध हो सकते हैं—

1. दिए हुए संकेतों के आधार पर कहानी का विकास करना।
2. दी गई अधूरी कहानी को पढ़कर पूरी करना।

1. दिए हुए संकेतों के आधार पर कहानी का विकास करना

नीचे दिए गए संकेतों और उनसे विकसित कहानी को ध्यानपूर्वक पढ़िए, समझिए तथा संकेतों के आधार पर कहानी का विकास करना सीखिए। अन्त में उस कहानी से मिलने वाली शिक्षा का भी उल्लेख कीजिए—

गर्मी के दिन .... एक बारहसिंगे का झरने पर पानी पीने आना .... जल में अपनी परछाईं देखना .... अपने सींगों की सुन्दरता की प्रशंसा करना .... अपनी टाँगों के भद्देपन की चर्चा करना .... तभी शिकारी कुत्तों की आवाज सुनाई देना .... जान बचाने के लिए भागना .... भागने में टाँगों की सहायता .... भागते-भागते सींग का झाड़ी में फँस जाना .... निकालने की कोशिश करना .... शिकारी कुत्तों का पास आ जाना .... बहुत मुश्किल से झाड़ी से सींग का निकलना .... टाँगों की सहायता से छलाँग लगाकर सुरक्षित स्थान पर पहुँचना .... जान बचाने में टाँगों की मदद तथा मुसीबत में डालने के लिए सुन्दर सींगों के बारे में सोचना ....।

गर्मी के दिन थे। एक बारहसिंगे को प्यास लगी। अपनी प्यास बुझाने के लिए वह एक झरने पर आया। झरने का पानी बहुत ठण्डा था। जब बारहसिंगा पानी पी रहा था, तो जल में उसने अपनी परछाईं देखी। वह अपनी परछाईं को बहुत ध्यान से देख रहा था। वह बोला, मेरे सींग कितने सुन्दर हैं और मेरी पतली टाँगें कितनी भद्दी हैं। काश! मेरी टाँगें भी मेरे सींगों की तरह सुन्दर होतीं। लगता है ईश्वर ने मेरी टाँगों को इतना भद्दा बनाकर मेरे साथ अन्याय किया है।

वह ऐसा सोच ही रहा था कि शिकारी कुत्तों के उसकी तरफ आने की आवाज़ सुनाई दी। अपने जीवन की रक्षा के लिए वह तेजी से भागा। भागने में उसकी टाँगों ने उसकी सहायता की। भागते-भागते वह एक ऐसे स्थान पर पहुँच गया जहाँ कँटीली झाड़ियाँ थीं। यहाँ उसके सींग झाड़ियों में फँस गए। उसने अपने सींगों को उन झाड़ियों से निकालने की बहुत कोशिश की, परन्तु उसके सींग झाड़ियों से न निकल पाए। वह अपने सींगों को जितना ही झाड़ियों से निकालने का प्रयत्न करता, वे उतना ही और उलझ जाते थे। तभी उसे कुत्तों के आने का शोर सुनाई दिया। बारहसिंगा बहुत घबराया। उसने अपनी जान बचाने के लिए एक बार पुन: प्रयास किया और इस बार उसके सींग झाड़ियों से निकल आए। अब बारहसिंगे को कुछ दूरी पर कुत्ते स्पष्ट नजर आ रहे थे। उसने पूरे जोर से छलाँग लगाई और तेज़ी से दौड़ता हुआ वह एक सुरक्षित स्थान पर पहुँच गया।

वहाँ उसने सोचा, "मैं अपनी जिन टाँगों की बुराई कर रहा था तथा उन्हें भद्दी बता रहा था, आज उन्हीं टाँगों ने मेरे प्राणों की रक्षा की। मैं अपने जिन सींगों की सुन्दरता का बखान करके फूला नहीं समा रहा था, उन्हीं के कारण आज मुझे अपने प्राणों से हाथ धोना पड़ता।"

शिक्षा—किसी भी वस्तु को उसके रंग-रूप को देखकर बेकार नहीं समझना चाहिए।

2. दी गई अधूरी कहानी को पूरा करना

निम्नलिखित अधूरी कहानी और उसके विकसित शेष भाग को पढ़िए और समझिए। कहानी के अन्त में उसका उपयुक्त शीर्षक भी सुझाया गया है—

किसी नगर में एक धनवान व्यापारी रहता था। उसके यहाँ अनेक नौकर-चाकर काम करते थे। एक दिन उसकी अलमारी से उसकी सोने की चेन गुम हो गई। उसने पहले तो अलमारियों में अच्छी प्रकार से खोजबीन की, पर जब चेन नहीं मिली तो घर में काम करने वाले नौकर-चाकरों से पूछताछ की। उसका सन्देह नौकरों में से ही किसी एक पर था, पर किसी भी नौकर ने चोरी की बात स्वीकार नहीं की। तभी उसका मित्र वहाँ आया। उसने अपने मित्र को चेन के बारे में बताया। उसका मित्र बहुत बुद्धिमान था। उसने कहा, "चिन्ता मत करो, कल असली चोर का पता चल जाएगा।" उसने घर के सभी नौकरों को बुलाया और उन्हें एक-एक छड़ी दी और कहा, "तुममें से जिसने भी सेठ जी की चेन चुराई है, कल तक उसकी छड़ी दो सेन्टीमीटर लम्बी हो जाएगी। कल तुम सब अपनी-अपनी छड़ी लेकर आना, चोर का पता चल जाएगा"।

कहानी का शेष भाग—दूसरे दिन जब सेठ जी के मित्र के सामने उपस्थित होने का समय आया तो जिस नौकर ने चेन चुराई थी, उसने अपनी छड़ी का दो सेन्टीमीटर हिस्सा काट दिया था, क्योंकि उसे यही डर था कि जादू के प्रभाव से उसकी छड़ी दो सेन्टीमीटर बढ़ जाएगी। अब सेठ जी के मित्र ने सबकी छड़ी नापी तो उस नौकर की छड़ी दो सेन्टीमीटर छोटी थी। इस प्रकार वह चोर पकड़ा गया और सेठ जी की सोने की चेन मिल गई।

शीर्षक—चोर की दाढ़ी में तिनका।

1. दिए हुए संकेतों के आधार पर कहानी का विकास कीजिए—

(क) पीपल के वृक्ष पर एक बन्दर और एक गौरैया ..... गौरैया का घोंसला ..... बन्दर का शाखाओं पर निवास ..... एक दिन तेज़ वर्षा का आना ..... गौरैया अपने घोंसले में सुरक्षित ..... बन्दर का वर्षा में भीगना ..... गौरैया का बन्दर को उपदेश देना ..... हम पक्षियों द्वारा घोंसला बनाया जा सकता है, तो तुम क्यों नहीं बना सकते ..... तुम हमसे अधिक बलवान ..... यदि तुम्हारा घर भी होता, तो वर्षा में भीगना न पड़ता ..... एक छोटी-सी गौरैया के उपदेश सुनकर बन्दर को क्रोध आ जाना ..... उछलना ..... गौरैया के घोंसले को तोड़-फोड़ देना ..... गौरैया का दु:खी होना।

(ख) एक सुदर्शन नाम का राजा ..... उसके चार पुत्र ..... पुत्रों का पढ़ाई में रुचि न लेना। ..... राजा का पुत्रों के भविष्य के बारे में चिन्ता करना ..... राजा द्वारा पण्डितों को बुलाकर पुत्रों को राजनीति सिखाने की बात करना ..... पण्डितों का शान्त रहना ..... विष्णु शर्मा नामक पण्डित द्वारा राजकुमारों को छ: महीने में राजनीति में निपुण बनाने का वचन देना ..... पशु-पक्षियों की कहानियों के माध्यम से राजकुमारों को राजनीति में निपुण करना ..... राजा का खुश होकर विष्णु शर्मा को पुरस्कार देना।

2. कहानी का एक अंश नीचे लिखा गया है। इसे पूरा कीजिए तथा उपयुक्त शीर्षक दीजिए—

(क) किसी गुरु के पास दो बालक पहुँचे। उन्होंने हाथ जोड़कर प्रार्थना की, "कृपया, हमें अपना शिष्य बना लीजिए। हम विद्याध्ययन करना चाहते हैं।" गुरु ने उत्तर दिया, "मैं अपना शिष्य उसी को बनाता हूँ जो मेरा उपदेश ध्यान से सुनकर उसे ग्रहण कर सके।" दोनों बालकों ने यह बात सहर्ष स्वीकार कर ली।

अगले दिन प्रात: गुरु ने दोनों बालकों को उपदेश दिया, "कभी कोई बुरा काम न करो। भगवान सब जगह है। वह सब कुछ देखता है।"

उसी दिन सायंकाल गुरु ने पहले बालक से कहा, "यहाँ से थोड़ी दूर पूर्व दिशा में एक बाग में पके हुए फल लगे हैं। जाओ, कुछ फल तोड़ लाओ। परन्तु जब कोई न देखता हो, तभी फल तोड़ना।" आज्ञा पाकर पहला बालक फल तोड़ने चला गया। तब गुरुदेव ने दूसरे बालक से कहा, "यहाँ से थोड़ी दूर पश्चिम दिशा में गन्ने का खेत है। जाकर वहाँ से थोड़े गन्ने ले आओ। परन्तु सावधान रहना। ऐसे समय गन्ना तोड़ना जब कोई न देखता हो।" आज्ञा पाकर दूसरा बालक भी गन्ना तोड़ने चला गया।

जब दोनों बालक वापस आए तो···

(ख) किसी नगर में एक राजा था। राजा को मछली खाने का बहुत शौक था। एक बार भयंकर तूफान आया और राजा को मछलियाँ खाने को न मिलीं। राजा ने घोषणा करवाई कि जो भी अच्छी मछलियाँ लाकर देगा, उसे अच्छा खासा इनाम दिया जाएगा। एक मछुआरा अच्छी मछलियाँ लेकर राजा के महल तक पहुँचा, पर राजा के सेनापति ने उसे रोक लिया और कहा, "मैं तुम्हें केवल एक शर्त पर भीतर जाने दे सकता हूँ। जो इनाम तुम्हें मिलेगा तुम उसका आधा मुझे दोगे।" मछुआरा बहुत बुद्धिमान था। उसने थोड़ी देर कुछ सोचा और सेनापति की शर्त स्वीकार कर ली। राजा मछलियों को देखकर बहुत खुश हुआ। उसने मछुआरे को इनाम के रूप में रुपये देने चाहे, पर मछुआरा बोला ·····।

पत्र-लेखन
Letter-Writing

हमारे जीवन में पत्र-लेखन का बड़ा महत्त्व है। पत्र मन के विचारों को प्रकट करने का सर्वोत्तम साधन है। प्राचीन काल से ही मनुष्य अपने सन्देश या भाव दूसरों तक पहुँचाने के लिए पत्र का सहारा लेता आया है। आधुनिक काल में टेलीफोन, फैक्स, ई-मेल आदि के आ जाने से इसके प्रयोग में थोड़ी कमी अवश्य आ गई है परन्तु इसका महत्त्व नहीं घटा है। ये लिखित और स्थायी दस्तावेज होते हैं।

पत्र लिखते समय हमें निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना चाहिए—

- पत्र की भाषा सरल व स्पष्ट हो। हमें विस्तृत वर्णन से बचना चाहिए।
- आयु व सम्बन्ध के अनुकूल शब्दावली का प्रयोग करना चाहिए।
- विचारों की क्रमबद्धता का ध्यान रखना चाहिए।
- पत्र का उद्देश्य व विषय-वस्तु स्पष्ट होने चाहिए।

पत्र के भेद

मूल रूप से पत्र के दो भेद होते हैं—

1. अनौपचारिक या निजी-पत्र—ये पत्र अपने निकट-सम्बन्धियों अथवा मित्रों को लिखे जाते हैं। इनमें निजी बातों का ब्योरा (वर्णन) होता है।

2. औपचारिक-पत्र—ये पत्र उन्हें लिखे जाते हैं जिनसे हमारा निजी सम्बन्ध नहीं होता। इनके कई रूप हो सकते हैं; जैसे—प्रार्थना-पत्र, व्यावसायिक-पत्र और कार्यालयी-पत्र।

1. अनौपचारिक-पत्र

1. अपने मित्र को परीक्षा में प्रथम आने पर बधाई देते हुए पत्र लिखिए।

107, आलमबाग, लखनऊ
17 मई, 20.....

प्रिय मित्र शुभम,

सस्नेह नमस्कार।

अभी-अभी फोन पर राहुल से पता चला कि तुम बोर्ड की परीक्षा में प्रथम श्रेणी से उत्तीर्ण हुए हो। यह सुखद समाचार सुनकर मुझे जो हार्दिक प्रसन्नता हुई उसे शब्दों में व्यक्त कर पाना कठिन है।

तुमने परीक्षा में प्रथम आकर यह प्रमाणित कर दिया है कि यदि किसी लक्ष्य को प्राप्त करने का दृढ़ संकल्प कर लिया जाए, तो उसे प्राप्त करना कठिन नहीं होता।

अपनी इस शानदार सफलता पर मेरी ओर से हार्दिक बधाई स्वीकार कीजिए। मुझे विश्वास है कि तुम भविष्य में भी इसी प्रकार सफलता प्राप्त करके अपना, अपने परिवार एवं विद्यालय का नाम रोशन करते रहोगे। शेष मिलने पर,

तुम्हारा अभिन्न मित्र
वैभव

2. **पुस्तक मेले से पुस्तकें खरीदने के लिए धन की माँग करते हुए पिता को पत्र लिखिए।**

बिरला छात्रावास

करोल बाग, दिल्ली।

दिनांक : 20 फरवरी, 20.....

पूज्य पिता जी,

सादर चरण-स्पर्श।

मैं यहाँ कुशलतापूर्वक हूँ। आशा है कि आप और माँ भी कुशल होंगे। मेरी पढ़ाई ठीक चल रही है। आपके निर्देशानुसार मैं प्रतिदिन सैर पर जाता हूँ। विशेष बात यह है कि अगले महीने दिल्ली के प्रगति मैदान में 'अन्तर्राष्ट्रीय पुस्तक मेला' आयोजित होने जा रहा है। पुस्तक मेला 26 फरवरी से 16 मार्च तक चलेगा। देशी-विदेशी प्रकाशक इस दौरान अपनी पुस्तकों के साथ यहाँ आएँगे।

मेरी हार्दिक इच्छा है कि मैं यह पुस्तक मेला देखने जाऊँ। मेले से मैं कुछ पुस्तकें भी खरीदना चाहता हूँ। मैंने फ्रेंच भाषा सीखी है, अत: फ्रेंच भाषा की कुछ पुस्तकें खरीदने की इच्छा है। कम्प्यूटर साइंस की भी कुछ पुस्तकें खरीदनी हैं। अत: आपसे अनुरोध है कि पुस्तकें खरीदने के लिए मुझे शीघ्रातिशीघ्र चार हजार रुपये भेजने का कष्ट करें।

आशा है कि आप मेरा अनुरोध स्वीकार करेंगे तथा उक्त रकम समय पर भेजने की कृपा करेंगे।

दादाजी व माँ को मेरा प्रणाम कहिएगा।

आपका आज्ञाकारी पुत्र

आयुष

2. औपचारिक-पत्र

1. **अपने विद्यालय के प्रधानाचार्य को स्थानान्तरण एवं चरित्र प्रमाण-पत्र के लिए प्रार्थना-पत्र।**

श्रीमान प्रधानाचार्य जी

जीवन ज्योति विद्यालय, फरीदाबाद।

दिनांक : 30 अक्टूबर, 20.....

विषय—स्थानान्तरण एवं चरित्र प्रमाण-पत्र के सम्बन्ध में।

मान्यवर,

सविनय निवेदन है कि मैं आपके विद्यालय की कक्षा आठ—'ए' का छात्र हूँ।

मेरे पिता जी आयकर विभाग में अधिकारी हैं। उनका स्थानान्तरण कोलकाता हो गया है। अत: मुझे भी आपका विद्यालय छोड़ना पड़ेगा तथा कोलकाता के किसी विद्यालय में प्रवेश लेना पड़ेगा।

अत: आपसे प्रार्थना है कि मुझे स्थानान्तरण प्रमाण-पत्र तथा चरित्र प्रमाण-पत्र प्रदान करने की कृपा करें।

सधन्यवाद!

आपका आज्ञाकारी शिष्य

विशाल

कक्षा आठ, अनुक्रमांक-29

.....

हस्ताक्षर अभिभावक

2. अपने विद्यालय के प्रधानाचार्य को सायंकाल में खेलों के प्रशिक्षण की सुविधा का प्रबन्ध कराने के लिए प्रार्थना-पत्र।

श्रीमान प्रधानाचार्य महोदय

ऋषिकुल विद्यापीठ, कनखल, हरिद्वार।

दिनांक : 13.09.20....

विषय—विद्यालय में सायंकाल के समय खेलों के प्रशिक्षण की सुविधा के सम्बन्ध में।

मान्यवर,

सविनय निवेदन है कि मैं आपके विद्यालय की आठवीं कक्षा का विद्यार्थी हूँ तथा 'जूनियर गेम्स कैप्टन' भी हूँ। इस पत्र के माध्यम से अत्यन्त विनम्रतापूर्वक आपका ध्यान विद्यालय में खेलकूदों के प्रशिक्षण की सुविधा के सम्बन्ध में आकर्षित करना चाहता हूँ।

हमारे विद्यालय की गिनती इस क्षेत्र के सर्वोत्तम विद्यालयों में की जाती है। परन्तु खेलकूदों में विद्यालय की वह छवि अभी उभरकर नहीं आई जो आनी चाहिए थी। मेरी दृष्टि में इसका एक कारण विद्यालय के समय के बाद विभिन्न खेलकूदों के लिए प्रशिक्षण-सुविधाओं का अभाव हो सकता है। हमारे आस-पास के विद्यालयों में इस प्रकार की सुविधाएँ उपलब्ध हैं, जिसके परिणामस्वरूप जो छात्र खेलकूद में रुचि रखते हैं, वे विद्यालय के समय के पश्चात् प्रशिक्षित विशेषज्ञों द्वारा प्रशिक्षण ले रहे हैं। इसीलिए विभिन्न खेलकूद प्रतियोगिताओं में उनका स्तर अन्य विद्यालयों से बेहतर है।

आपसे करबद्ध प्रार्थना है कि हमारे विद्यालय के छात्रों के लिए भी यह सुविधा उपलब्ध करवाने की कृपा करें जिससे कि हमारे विद्यालय के छात्र भी विभिन्न खेलकूदों में अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन कर सकें। सधन्यवाद!

आपका आज्ञाकारी शिष्य

शरद गर्ग

- निम्नलिखित विषयों पर पत्र लिखने का अभ्यास कीजिए—

(क) अपने विद्यालय के प्रधानाचार्य को छात्रवृत्ति के लिए प्रार्थना-पत्र लिखिए।

(ख) अपने मित्र को अपने विद्यालय की क्रिकेट टीम का कप्तान चुने जाने पर बधाई देते हुए पत्र लिखिए।

(ग) अपने छोटे भाई को मन लगाकर पढ़ने का आग्रह करते हुए पत्र लिखिए।

(घ) अपने पिता से विद्यालय की ओर से राजस्थान भ्रमण पर जाने की अनुमति माँगते हुए पत्र लिखिए। साथ ही भ्रमण के लिए पाँच सौ रुपये भेजने की प्रार्थना भी कीजिए।

(ङ) अपने नगर के विद्युत संस्थान को बिजली के बार-बार चले जाने की शिकायत करते हुए पत्र लिखिए।

(च) अपने पड़ोस में हुई चोरी की घटना की शिकायत करते हुए थानाध्यक्ष को पत्र लिखिए।

22

निबन्ध-लेखन
Essay-Writing

निबन्ध का अर्थ है—भली प्रकार से बँधा हुआ यानी एक सूत्र में बँधी हुई रचना। निबन्ध साहित्य का प्रमुख अंग है। इसे गद्य की कसौटी माना गया है। निबन्ध-लेखन में शब्द-सीमा बँधी हुई होती है, उसी में लेखक को अपनी बात प्रभावशाली ढंग से व्यक्त करनी होती है। निबन्ध-लेखन में अध्ययन और निरन्तर अभ्यास द्वारा कुशलता प्राप्त की जा सकती है।

अच्छा निबन्ध लिखने के लिए निम्नलिखित बातों को अवश्य ध्यान में रखें—

- निबन्ध लिखने से पहले विषय की जानकारी प्राप्त कीजिए तथा अपने विचारों को व्यवस्थित कीजिए।
- निबन्ध का आरम्भ सशक्त व प्रभावशाली होना चाहिए।
- निबन्ध के बीच-बीच में महान व्यक्तियों के कथनों, सूक्तियों आदि का प्रयोग करके उसे स्पष्ट कीजिए।
- विषय से सम्बन्धित सभी पहलुओं पर अपने विचार प्रकट कीजिए।
- भाषा की शुद्धता व विराम-चिह्नों का ध्यान रखिए।
- निबन्ध के अनुच्छेद एक-दूसरे से जुड़े होने चाहिए।

1. हमारी राष्ट्रभाषा : हिन्दी

किसी देश के अधिकतर निवासियों द्वारा प्रयोग में लाई जाने वाली भाषा **राष्ट्रभाषा** कहलाती है। प्रत्येक राष्ट्र की कोई-न-कोई राष्ट्रभाषा अवश्य होती है। हमारे देश की राष्ट्रभाषा हिन्दी मानी जाती है, क्योंकि यह भारत के अधिकांश क्षेत्रों में लगभग 70 प्रतिशत जनसंख्या द्वारा प्रयोग में लाई जाती है। लेकिन हिन्दी को राष्ट्रभाषा की आधिकारिक मान्यता प्राप्त नहीं है।

भारत में संवैधानिक रूप से बाईस भाषाओं को मान्यता दी गई है, परन्तु हिन्दी ही ऐसी भाषा है जो सम्पूर्ण देश को आपस में जोड़ने में सहयोग देती है। आज़ादी से पहले जब भारत स्वतन्त्रता के लिए संघर्ष कर रहा था, उस समय हिन्दी ने सभी स्वतन्त्रता के दीवानों को आपस में जोड़ा। महात्मा गांधी, पण्डित नेहरू तथा सुभाषचन्द्र बोस आदि ने हिन्दी को एक सशक्त भाषा के रूप में स्वीकार किया। भारतेन्दु हरिश्चन्द्र द्वारा कही गई ये पंक्तियाँ आज भी हमारे मानस में हिन्दी के प्रति सम्मान जगाती हैं—

"निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल।
बिन निज भाषा ज्ञान के, मिटै न हिय को शूल।।"

जब भारत स्वतन्त्र हुआ तब देश को ऐसी भाषा की आवश्यकता अनुभव हुई जो सम्पूर्ण भारत को एक करने में सहयोग दे सके। अंग्रेज़ी भाषा के समर्थकों ने यह चाहा कि अंग्रेज़ी ही भारत की राष्ट्रभाषा बने, परन्तु अंग्रेज़ी केवल पढ़े-लिखे समाज द्वारा ही प्रयोग में लाई जाती थी और भारतवासी, जो अंग्रेज़ों द्वारा दो सौ से भी अधिक वर्षों से सताए गए थे, अंग्रेज़ी को राष्ट्रभाषा के रूप में स्वीकार नहीं कर रहे थे; अन्ततः 14 सितम्बर, 1949 ई० को संविधान के अनुच्छेद 343 के अनुसार, हिन्दी को भारत की राजभाषा के रूप में स्वीकार किया गया। इसीलिए 14 सितम्बर को प्रतिवर्ष हिन्दी दिवस मनाया जाता है तथा देश भर में अनेक कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं।

आज़ादी के बाद भी अंग्रेज़ी भाषा का चलन जारी रहा। अंग्रेज़ी पोषक देशवासियों को हिन्दी भाषा का प्रयोग करने में शर्म महसूस होती थी, इसलिए हिन्दी जिस सम्मान की अधिकारिणी थी, उसे वह सम्मान नहीं मिल पाया। आज भी हिन्दी भाषा का प्रयोग करते समय लोग लज्जा का अनुभव करते हैं और अंग्रेज़ी का प्रयोग करते समय गर्व अनुभव करते हैं। हिन्दी की इस स्थिति के ज़िम्मेदार हम सभी हैं। सरकार, राजनेता व भारतवासी सभी इसके लिए दोषी हैं। विदेशों के नेता कभी अपनी राष्ट्रभाषा को छोड़कर अन्य भाषा में भाषण नहीं देते। चीन, जापान, रूस, अमेरिका, किसी भी देश को ले लीजिए, वहाँ के नेता और निवासी सभी अपनी राष्ट्रभाषा में बातचीत करते हैं और अपनी राष्ट्रभाषा पर गर्व करते हैं। इसके विपरीत भारतवासी आज भी अंग्रेज़ी के दीवाने हैं और जो अंग्रेज़ी नहीं जानता उसे हीन दृष्टि से देखते हैं। ऐसा नहीं है कि अन्य भाषाएँ नहीं सीखनी चाहिए, परन्तु अपनी भाषा का मान बनाए रखना हमारा कर्तव्य है।

विश्व में सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषाओं में हिन्दी का 'तीसरा' स्थान है। हिन्दी फ़ीज़ी, सूरीनाम, ट्रिनीडाड, मलेशिया, मॉरीशस आदि देशों में बहुत अधिक बोली जाती है। हिन्दी ही एकमात्र भाषा है, जिसे जैसा बोला जाता है वैसा ही लिखा जाता है। यह हमारे राष्ट्र की एकता, सम्मान तथा विकास का आधार है। किसी भुलावे में न रहकर हमें भी अपनी हिन्दी भाषा को वही सम्मान देना चाहिए, जैसा कि दूसरे देशों में उनकी राष्ट्रभाषा को प्राप्त है। याद रखें—

"हिन्दी है पहचान हमारी, आन-बान और शान हमारी।
इसकी आन न मिटने देंगे, नित-नित इसको गौरव देंगे।।"

2. स्वास्थ्य और व्यायाम

महाकवि कालिदास ने कहा है—'शरीरमाद्यं खलु धर्म साधनम्' अर्थात् धर्म का सर्वप्रथम साधन स्वस्थ शरीर है। स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मन तथा आत्मा का वास होता है। यदि मन स्वस्थ नहीं तो विचार स्वस्थ नहीं, और जब विचार स्वस्थ नहीं तो कर्तव्य की साधना कहाँ? इसीलिए शरीर को स्वस्थ रखना व्यक्ति का प्रथम परम कर्तव्य है।

अंग्रेज़ी में एक कहावत है—Health is wealth, जिसका आशय है—'स्वास्थ्य ही सच्चा धन है'। यह अक्षरश: सत्य है, क्योंकि स्वस्थ व्यक्ति ही इस संसार और जीवन में इच्छित कार्य पूर्ण करने में समर्थ है; दुर्बल तथा रोगी नहीं। इसीलिए यह भी कहा गया है कि अच्छी सेहत या स्वास्थ्य ही सभी प्रकार का आनन्द एवं वरदान कहा जा सकता है।

हमारी संस्कृति में मानव जीवन के चार उद्देश्य बताए गए हैं—धर्म, अर्थ, काम एवं मोक्ष। जीवन के इन उद्देश्यों को स्वस्थ शरीर द्वारा ही प्राप्त किया जा सकता है। जब व्यक्ति स्वयं सुखी एवं सन्तुष्ट होता है तो दूसरों को भी सुखी बनाने का प्रयास करता है तथा समाज एवं राष्ट्र के लिए कुछ कर पाने में समर्थ होता है। जो व्यक्ति अच्छे स्वास्थ्य के महत्त्व की उपेक्षा कर देता है, वह मानो अपने सभी सुखों की उपेक्षा कर रहा है। दुर्बल, रोगी तथा अशक्त मनुष्य न तो स्वयं की, न अपने परिवार की, न समाज की, न अपने राष्ट्र की और न ही मानवता की सेवा कर सकता है। इसीलिए शरीर को पुष्ट, चुस्त एवं बलिष्ठ बनाए रखना परमावश्यक है।

एवरेस्ट की चोटी पर चढ़ना, पानी की धारा के प्रवाह के विरुद्ध नौका खेना, सीमाओं की रक्षा के लिए विषम परिस्थितियों में डटे रहना—क्या ये सब काम दुर्बल तथा अस्वस्थ व्यक्ति कर सकते हैं? चन्द्रलोक की यात्रा करना अस्वस्थ व्यक्ति का काम नहीं। प्राय: देखा गया है कि दुर्बल और अशक्त व्यक्ति निराशावादी और भाग्यवादी बन जाया करते हैं।

अच्छा स्वास्थ्य बनाए रखने के लिए व्यायाम अत्यन्त आवश्यक है। व्यायाम और स्वास्थ्य का चोली-दामन का साथ है। व्यायाम आदि से न केवल शरीर ही पुष्ट होता है अपितु मानसिक रूप से भी व्यक्ति स्वस्थ रहता है। व्यायाम करने से आलस्य कोसों दूर भागता है। आलस्य व्यक्ति का सबसे बड़ा शत्रु कहा गया है। आलसी व्यक्ति जीवन के हर क्षेत्र में

निराश और असफल होते हैं। व्यायाम न करने से व्यक्ति का शरीर बेडौल हो जाता है तथा शरीर में चर्बी चढ़ जाती है। मोटापे के कारण उसे अनेक भयंकर रोगों का खतरा उत्पन्न हो जाता है; जैसे—मधुमेह, उच्च रक्तचाप, हृदय रोग, तनाव, अतिनिद्रा, साँस फूलना आदि। अत: इन रोगों से बचने के लिए व्यक्ति को अपने शरीर को व्यायाम द्वारा चुस्त, फुर्तीला तथा सुडौल रखना चाहिए।

अच्छे स्वास्थ्य के लिए अनेक प्रकार के व्यायाम हो सकते हैं—सैर करना, दौड़ना, दण्ड बैठक करना, खेलकूद, तैराकी, घुड़सवारी, योगासन आदि प्रमुख हैं। इन व्यायामों का चुनाव अपनी आयु, शारीरिक क्षमता आदि को ध्यान में रखकर सोच-समझकर करना चाहिए। बड़ी आयु वालों के लिए सैर करना तथा योगासन उत्तम व्यायाम है।

व्यायाम से शरीर की मांसपेशियाँ सुदृढ़ होती हैं, रक्त संचार बढ़ता है तथा शरीर चुस्त, फुर्तीला और गतिशील रहता है। व्यायाम करने वाले लोगों के शरीर में रोगों से लड़ने की क्षमता का विकास होता है तथा बुढ़ापा उन पर शीघ्र आक्रमण नहीं करता। नीरोग व्यक्ति प्रसन्नचित्त, हँसमुख तथा उल्लसित रहता है, जिसके कारण उसके व्यवहार में माधुर्य तथा नम्रता स्वत: आ जाती है।

निष्कर्षत: अच्छा स्वास्थ्य व्यक्ति के लिए महावरदान है। अपने स्वास्थ्य की रक्षा करना प्रत्येक व्यक्ति का कर्तव्य है। विद्यार्थियों के लिए तो अच्छा स्वास्थ्य अत्यन्त अनिवार्य है, क्योंकि स्वस्थ विद्यार्थी ही ज्ञानार्जन करके जीवन की चुनौतियों को स्वीकार करने योग्य बन पाता है। प्रत्येक विद्यार्थी को चाहिए कि न केवल विद्यालय में खेलकूदों में भाग ले अपितु व्यायाम आदि को भी अपनी दिनचर्या का आवश्यक अंग बना ले।

3. मेरा प्रिय लेखक

हिन्दी साहित्य जगत् में अनेक महान लेखक व कवि हुए हैं। वीरगाथा काल, भक्ति काल, रीति काल तथा आधुनिक काल में जन्मे इन साहित्यकारों ने हिन्दी साहित्य को समृद्ध किया है। इनमें मुंशी प्रेमचन्द का नाम स्वर्णाक्षरों में अंकित है। हिन्दी साहित्य में इनका योगदान अतुलनीय है। मैंने भी कुछ लेखकों की रचनाएँ पढ़ी हैं किन्तु मुंशी प्रेमचन्द से मैं अत्यधिक प्रभावित हूँ। वे मेरे प्रिय लेखक हैं।

प्रेमचन्द का जन्म 1880 में काशी के निकट लमही गाँव में कायस्थ कुल में हुआ था। उनके बचपन का नाम धनपत राय था। पिता की अल्पायु में मृत्यु हो जाने के कारण इनका जीवन संघर्षों में बीता। स्कूल में बीस रुपये की अध्यापक की नौकरी करते हुए इन्होंने बी०ए० की परीक्षा उत्तीर्ण की और फिर स्कूलों के सब डिप्टी इंस्पेक्टर हो गए, लेकिन गांधी जी से प्रभावित होकर नौकरी छोड़ दी और सम्पूर्ण रूप से साहित्य रचना में लगे रहकर देश-सेवा में जुट गए। इन्होंने हंस, मर्यादा, माधुरी पत्रिकाएँ और जागरण पत्रों का सम्पादन किया। संघर्षों से जूझते हुए रोगग्रस्त होकर 1936 ई० में इनकी मृत्यु हो गई। समाज में फैली कुरीतियों, भेदभावों, अव्यवस्थाओं आदि को इन्होंने अपनी कलम के माध्यम से लोगों तक पहुँचाया और समाज में जागरूकता पैदा की, इसलिए इन्हें 'कलम का सिपाही' भी कहा जाता है। इनके द्वारा लिखी गई सैकड़ों कहानियाँ, उपन्यास आम आदमी की कहानी कहते हैं। ये साधारण जनता से इस कदर जुड़े थे कि उनके जीवन की एक-एक घटना व परिस्थिति को इन्होंने इस तरह उकेरा है कि वे सभी पुस्तक पढ़ते समय पाठक की आँखों के समक्ष सजीव हो उठते हैं। यही प्रेमचन्द की सर्वोत्तम उपलब्धि है।

आज भी हमें इनके द्वारा लिखा गया साहित्य प्रेरणा देता है। साधारण मनुष्य की आशाओं, समस्याओं, समाज में फैली विषमताओं आदि पर जितना मुंशी प्रेमचन्द ने लिखा है उतना किसी और लेखक ने नहीं लिखा। इनके द्वारा लिखी गई कहानियाँ 'मानसरोवर' नामक ग्रन्थ में संकलित हैं। इन्हें उपन्यास-सम्राट भी कहा जाता है। इनके द्वारा लिखे गए मुख्य

उपन्यास हैं—गबन, गोदान, सेवा सदन, रंगभूमि, निर्मला आदि। मुंशी प्रेमचन्द आज तो हमारे बीच नहीं हैं, परन्तु इनकी रचनाएँ अमर हैं। उनका नाम सदैव हिन्दी साहित्य में आदर के साथ लिया जाता रहेगा और सदा हमें प्रेरणा देता रहेगा। मुंशी प्रेमचन्द को हिन्दी साहित्य जगत् में वही स्थान प्राप्त है जोकि अंग्रेज़ी साहित्य में शेक्सपियर को प्राप्त है।

4. वृक्षारोपण

मानव और प्रकृति का सम्बन्ध सनातन है। आदिकाल से प्रकृति मानव की सहचरी रही है। मनुष्य ने प्रकृति की गोद में जन्म लिया, इसी से अपने भरण-पोषण की सामग्री प्राप्त की। प्रकृति ने ही उसे संरक्षण प्रदान किया, प्रकृति ने ही उसकी अनेक आवश्यकताओं की पूर्ति की, प्रकृति से प्राप्त वस्तुओं से उसने घर बनाया, अपनी भूख मिटाई, अपनी तृषा शान्त की तथा तरह-तरह के सुखों का भोग किया। पेड़-पौधे प्रकृति के सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण अंग हैं।

पेड़-पौधे मनुष्य के लिए लाभदायक ही नहीं अनिवार्य भी हैं। पेड़-पौधों की लकड़ी से बने खिलौने बच्चों का मन बहलाते हैं। पेड़-पौधे ही यौवन को झूले पर झुलाते हैं, तो पेड़-पौधे ही बुढ़ापे की लाठी बनकर सहारा भी प्रदान करते हैं। अनाज, फल-फूल, जड़ी-बूटियाँ, ईंधन, इमारत लकड़ी जैसी वस्तुएँ हमें पेड़-पौधों से ही मिलती हैं। पेड़-पौधे हमें शुद्ध वायु प्रदान करते हैं। ये कार्बन डाइ-ऑक्साइड को ग्रहण कर हमें ऑक्सीजन प्रदान करते हैं। वृक्ष न केवल प्रदूषण की रोकथाम करते हैं अपितु मिट्टी के कटाव को भी नियन्त्रित करते हैं, वर्षा में सहायक होते हैं, भूमि को उर्वरा बनाए रखते हैं।

वृक्षों की उपयोगिता को देखते हुए आज समूचे विश्व में वृक्षारोपण के महत्त्व को स्वीकारा गया है। आज पर्यावरण के प्रदूषण की चर्चा चारों ओर सुनी जा सकती है। प्रदूषण के कारण प्राकृतिक सन्तुलन छिन्न-भिन्न हो गया है तथा अनेक प्रकार की समस्याओं का विस्तार हो गया है। बढ़ती हुई जनसंख्या, बढ़ते हुए उद्योगों आदि की आवश्यकता की पूर्ति के लिए वनों की अन्धाधुन्ध कटाई की जा रही है जिसके परिणामस्वरूप वातावरण में शुद्ध वायु का नितान्त अभाव होता जा रहा है। वनों को काट-काटकर या तो औद्योगिक इकाइयों की स्थापना की जा रही है या फिर आवास की व्यवस्था। वनों की इस अन्धाधुन्ध कटाई के कारण मिट्टी का कटाव, भूक्षरण, भूस्खलन, भयंकर बाढ़ें, सूखा, भूकम्प, वर्षा की अनिश्चितता, अनेक बीमारियाँ तथा वायुमण्डल का प्रदूषण और अन्य भयंकर समस्याएँ बढ़ती जा रही हैं।

वनों के कटाव के कारण धरती के सौन्दर्य पर तो कुठाराघात हुआ है, पशु-पक्षियों की अनेक दुर्लभ जातियाँ-प्रजातियाँ भी लुप्त होती जा रही हैं। नदियों के उद्गम स्थलों व पर्वत-पठारों से वृक्षों के कटाव के कारण स्थिति और भी भयावह हो गई है, अनेक औषध-वनस्पतियाँ अतीत की कहानी बन चुकी हैं।

आज वृक्षारोपण मानव-जीवन की सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण आवश्यकता बन गया है। प्रकृति के वातावरण में एक सहज स्वाभाविक सन्तुलन बनाए रखने के लिए हमें वृक्षों का संरक्षण तथा वृक्षारोपण करना नितान्त आवश्यक हो गया है।

वृक्षों की उपयोगिता को हमारे ऋषि-मुनियों ने पहचाना। हमारी संस्कृति में वृक्षारोपण एक पवित्र कार्य माना जाता है। हमारे यहाँ तो पीपल, तुलसी, बरगद, केला, आम आदि वृक्षों की पूजा भी की जाती है। हमारे यहाँ कहा जाता है—'एक वृक्ष लगाने से उतना ही पुण्य मिलता है जितना दस गुणवान पुत्रों का यश।' भारत सरकार ने वृक्षों की आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए सन् 1952 में 'वन महोत्सव' या 'वृक्षारोपण कार्यक्रम' भी प्रारम्भ किया था जो प्रतिवर्ष जुलाई माह में सम्पूर्ण भारत में मनाया जाता है। वृक्षों की कटाई रोकने के लिए कानून भी बनाए गए हैं। इस दिशा में अनेक समाजसेवी संगठन भी सक्रिय हैं। 'चिपको आन्दोलन' की इस सन्दर्भ में भूमिका अत्यन्त सराहनीय रही है।

आज हमें यह भली-भाँति जान लेना चाहिए कि पेड़-पौधे मानव-जीवन की संजीवनी हैं तथा पेड़-पौधों के संरक्षण तथा उनके आरोपण में ही स्वयं मानव का हित निहित है। अत: हमारा कर्तव्य है कि अधिक-से-अधिक वृक्ष लगाएँ तथा प्रदूषणरहित वातावरण का निर्माण करके मानवता तथा उसके भविष्य को सुरक्षित करें।

5. गणतन्त्र-दिवस

भारत जैसा महान देश सैकड़ों वर्षों तक पराधीनता की बेड़ियों में जकड़ा रहा। पराधीनता के अभिशाप से मुक्त होने के लिए उसके हृदय में तड़प जागी, वह पिंजरबद्ध सिंह की भाँति गर्जना करने लगा। स्वतन्त्रता की चिनगारी बढ़ती हुई धीरे-धीरे एक ज्वाला का रूप लेकर फैलने लगी। अनेक वीरों ने अपने प्राणों की आहुतियाँ देकर स्वतन्त्रता का मार्ग प्रशस्त किया। अन्ततः 15 अगस्त, 1947 को भारत दासता के इस पिंजरे से निकलने में समर्थ हो ही गया। किन्तु यह स्वतन्त्रता अभी अधूरी थी क्योंकि उस समय तक देश का शासन ब्रिटिश कानूनों के अनुसार चल रहा था, इसलिए देश के लिए नए संविधान की आवश्यकता अनुभव हुई। 26 जनवरी, 1950 को यह कार्य पूर्ण हुआ। 26 जनवरी को ही संविधान लागू करने के पीछे एक ऐतिहासिक कारण था।

भारतीय स्वतन्त्रता-संग्राम के इतिहास में 26 जनवरी का दिन अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। 26 जनवरी, 1929 को लाहौर में रावी के तट पर कांग्रेस के अधिवेशन में पूर्ण स्वतन्त्रता की माँग की गई। 26 जनवरी, 1930 को स्वराज्य दिवस मनाकर यह प्रतिज्ञा दोहराई गई तथा तब से प्रतिवर्ष यह प्रतिज्ञा दोहराई जाती रही। नए संविधान का निर्माण कर उसे लागू करने के लिए 26 जनवरी का दिन ही चुना गया तथा इसे 26 जनवरी, 1950 को ही लागू किया गया। इस दिन भारत 'सर्वप्रभुतासम्पन्न लोकतन्त्रात्मक गणराज्य' के रूप में प्रतिष्ठित हुआ।

26 जनवरी का पर्व अर्थात् गणतन्त्र दिवस समारोह समस्त भारत में ही नहीं, विदेशों में भी, जहाँ-जहाँ भारतीय रहते हैं, बड़ी धूमधाम से मनाया जाता है। इस दिन स्थान-स्थान पर जन-सभाएँ होती हैं, जुलूस निकाले जाते हैं, स्वतन्त्रता की बलिवेदी पर अपने प्राणों की बलि देने वाले अमर सपूतों को स्मरण करके उन्हें श्रद्धा-सुमन अर्पित किए जाते हैं।

भारत की राजधानी दिल्ली में यह महोत्सव अत्यन्त भव्यता से मनाया जाता है। देश के कोने-कोने से हजारों की संख्या में लोग इसे देखने आते हैं। प्रातः 8 बजे इण्डिया गेट के पास विजय चौक पर राष्ट्रपति सेना के तीनों अंगों का निरीक्षण करते हैं और राष्ट्रीय ध्वज फहराते हैं। इस अवसर पर जल, थल और वायु सेना की टुकड़ियाँ अपनी पूरी साज-सज्जा से राष्ट्रपति को अभिवादन करती हुई उनके सामने से निकलती हैं। राष्ट्रपति को तोपों की सलामी दी जाती है।

इस अवसर पर सेना का शस्त्रास्त्र प्रदर्शन, पुलिस, अर्द्ध-सैन्य बलों द्वारा परेड, विभिन्न राज्यों की कलात्मक व सांस्कृतिक झाँकियाँ, देश के विभिन्न भागों से आए लोकनर्तकों के लोकनृत्य, स्कूल के बच्चों द्वारा पुलिस तथा सैनिक बैण्डों की स्वर-लहरी—ये सभी अत्यन्त चित्ताकर्षक होती हैं। अन्त में विमानों की उड़ान होती है। इस शानदार कार्यक्रम को देखने के लिए लोगों की भीड़ उमड़ पड़ती है।

इसी दिन सायंकाल सरकारी भवनों पर प्रकाश किया जाता है। इस दिन सार्वजनिक अवकाश रहता है। सायंकाल राष्ट्रपति भवन में देश के राष्ट्रपति विशिष्ट पदाधिकारियों, सैनिकों, कवियों, अध्यापकों, खिलाड़ियों तथा अन्य गणमान्य व्यक्तियों को उनकी अमूल्य सेवाओं तथा उपलब्धियों के लिए पदक प्रदान कर उन्हें सम्मानित करते हैं। वहाँ राज्य के राज्यपाल परेड की सलामी लेते हैं।

स्कूलों और कॉलेजों में भी यह पर्व उत्साह से मनाया जाता है। सबसे पहले प्रधानाचार्य ध्वजारोहण करते हैं। फिर सब लोग राष्ट्रध्वज को सलामी देते हैं। छात्र-छात्राएँ देशभक्ति से पूर्ण गीतों और कविताओं का पाठ करते हैं। अध्यापक-अध्यापिकाएँ बच्चों को गणतन्त्र दिवस का महत्त्व समझाते हैं। सभा के अन्त में बच्चों को लड्डू बाँटे जाते हैं।

गणतन्त्र दिवस हमारे हृदयों में राष्ट्र के प्रति प्रेम और श्रद्धा का संचार करता है। यह हमें उन असंख्य बलिदानियों की याद दिलाता है जिन्होंने देश के लिए अपने प्राणों की आहुति दे दी। इस दिन हमें प्रतिज्ञा करनी चाहिए कि अपने राष्ट्र के गौरव की रक्षा के लिए हम अपने प्राण देने में भी पीछे नहीं हटेंगे। हमें यह स्मरण रखना होगा कि हमें विश्व में अपनी खोई प्रतिष्ठा पुनः प्राप्त करनी है तथा भारत को पुनः विश्व का सिरमौर बनाना है।

1. निम्नलिखित विषयों पर उनकी रूपरेखाओं के अनुरूप निबन्ध लिखिए—

(क) समय अनमोल है

- समय सदा चलता रहता है,
- किसी की प्रतीक्षा नहीं करता
- समय व्यर्थ न गँवाएँ
- निश्चित समय पर कार्य पूरा करें
  (महान व्यक्तियों के उदाहरण)
- आलस सबसे बड़ा शत्रु है
- समय का मूल्य पहचानना।

"काल करै सो आज कर, आज करै सो अब।
पल में परलै होएगी, बहुरि करोगे कब।।"

(ख) जीवन में कम्प्यूटर का महत्त्व

- प्रस्तावना
- कम्प्यूटर का परिचय
- मानव-जीवन में कम्प्यूटर
- शिक्षा में कम्प्यूटर
- चिकित्सा के क्षेत्र में कम्प्यूटर
- मानव-जीवन का एक आवश्यक अंग
- उपसंहार

2. निम्नलिखित विषयों पर निबन्ध लिखिए—

(क) मेरे आदर्श शिक्षक
(ख) बचपन के दिन
(ग) लेखनी की आत्मकथा
(घ) मनोरंजन के साधनों की दुनिया
(ङ) भारत : त्योहारों का देश
(च) फैशन का भूत और युवा पीढ़ी
(छ) मानवता की मूर्ति : मदर टेरेसा
(ज) मेरे सपनों का भारत
(झ) मेरे प्रिय नेता : पूर्व राष्ट्रपति स्वर्गीय ए०पी०जे० अब्दुल कलाम
(ञ) यदि मैं विद्यालय का प्रधानाचार्य होता/प्रधानाचार्या होती

23 अपठित बोध
Unseen Passages

अपठित बोध का अर्थ है—जो अवतरण पहले से नहीं पढ़ा गया है, उसकी समझ। इसका उद्देश्य विद्यार्थियों की अर्थ बोध क्षमता की जाँच करना होता है। ऐसा अवतरण गद्य में होने पर अपठित गद्यांश तथा पद्य में होने पर अपठित पद्यांश कहलाता है।

केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड द्वारा प्रस्तावित नवीन मूल्यांकन पद्धति (CCE) के अनुसार, गद्यांश अथवा काव्यांश पर आधारित बहुविकल्पीय उत्तर वाले प्रश्न भी पूछे जा सकेंगे। यहाँ हम ऐसे प्रश्नों के उत्तर देने का भी अभ्यास करेंगे।

अपठित अवतरण पर आधारित प्रश्नों को हल करते समय निम्नलिखित बातों का ध्यान रखिए—

- अपठित अवतरण को ध्यान से एक-दो बार पढ़िए।
- अब इन प्रश्नों के उत्तरों को जहाँ तक सम्भव हो अपनी भाषा में संक्षेप में लिखिए।
- यदि अवतरण का शीर्षक भी लिखने को कहा जाता है, तो ध्यान रखिए कि—शीर्षक कम-से-कम शब्दों का हो।

1. अपठित गद्यांश

अपठित गद्यांश किसी अन्य कहानी, निबन्ध, लेख, जीवनी आदि के अंश हो सकते हैं। इन पर आधारित प्रश्न हल करने के लिए दिए जाते हैं, जिनमें लघु प्रश्न, भाषा पर आधारित प्रश्न आदि होते हैं, जिससे छात्र के अर्थ-ग्रहण, मौलिक चिन्तन तथा पढ़कर स्वयं हल ढूँढ़ने की क्षमता का विकास होता है।

नीचे कुछ अपठित गद्यांश तथा उन पर आधारित प्रश्नों के उत्तर दिए गए हैं। इन पर ध्यान दीजिए—

1. मनुष्य के लिए प्रतिभा नहीं, उद्देश्य आवश्यक है। विश्वास जानिए, आँख मींचकर फेंका हुआ तीर अपना लक्ष्य नहीं भेद सकता, अन्धे होकर भागने से मार्ग नहीं कटता, आँख मूँदकर बेमौसम बीज फेंकने वाला किसान कभी सफल नहीं होता। भला आप उस व्यक्ति के बारे में क्या सोचेंगे जो गाड़ी में सवार होने के लिए स्टेशन पहुँचा हुआ है, पर जिसे यह नहीं मालूम कि उसे कहाँ जाना है? हम सब भी विश्व के रंगमंच पर आए हुए हैं। जीवन की नौका को संसार में खेने से पूर्व हमें जान लेना चाहिए कि हमें कहाँ जाना है? अत: हम अपनी इन बन्द आँखों को खोल लें, उद्देश्य बनाएँ और चल पड़ें। जिस नाविक ने लक्ष्य स्थिर नहीं किया उसके अनुकूल हवा कभी नहीं चलेगी। तुम शव नहीं हो कि संसार सागर की लहरें जिस किनारे चाहें तुम्हें पटक दें, परिस्थितियाँ जिधर चाहें ले चलें। भाग्य के नाम पर तुमको प्रवाह में बहना नहीं है अपितु प्रवाह का रुख बदलना है।

प्रश्न— (क) गद्यांश का उपयुक्त शीर्षक दीजिए।

(ख) सफल जीवन के लिए किस बात की आवश्यकता है?

(ग) जीवन की नौका को खेने से पहले क्या जान लेना आवश्यक है?

(घ) भाग्य का निर्माण स्वयं करने के लिए क्या आवश्यक है?

(ङ) 'परिस्थितियाँ' शब्द का क्या अर्थ है?

उत्तर— (क) लक्ष्यहीन जीवन।

(ख) सफल जीवन के लिए जीवन के लक्ष्य को स्थिर करना नितान्त आवश्यक है। लक्ष्यहीन व्यक्ति को असफलता मिलती है।

(ग) जीवन की नौका को खेने से पहले हमें अपने गन्तव्य का ज्ञान होना चाहिए।

(घ) भाग्य के निर्माण के लिए आवश्यक है कि हम प्रवाह का रुख बदलकर अपने अनुकूल करें।

(ङ) हालात।

2. इस संसार में सबसे अमूल्य वस्तु है—'समय'। संसार की सभी चीजों को घटाया-बढ़ाया जा सकता है, पर समय को नहीं। समय किसी के अधीन नहीं रहता। न वह रुकता है और न ही वह किसी की प्रतीक्षा करता है। विद्यार्थी जीवन में समय का अत्यधिक महत्त्व है। समय का सदुपयोग करने वाला व्यक्ति भावी जीवन में सफल होकर एक श्रेष्ठ नागरिक बनता है। जेम्स वॉट, मैडम क्यूरी, आइंस्टीन, एडीसन आदि ने समय के एक-एक क्षण का उपयोग कर संसार को अनेक आविष्कार प्रदान किए। समय का सदुपयोग केवल उद्यमी तथा कर्मठ व्यक्ति कर सकता है, आलसी नहीं। आलस्य ही समय का सबसे बड़ा शत्रु है। विद्यार्थियों को इस शत्रु से सावधान रहकर अच्छे लोगों की संगति में रहना चाहिए। सत्संगति के कारण व्यक्ति अपने अमूल्य समय को व्यर्थ की बातों में नहीं गँवाता।

I. सही उत्तर पर सही (✓) का चिह्न लगाइए—

(क) संसार में सबसे अमूल्य वस्तु क्या है?

(i) धन ( ) (ii) समय (✓) (iii) ज्ञान ( ) (iv) विवेक ( )

(ख) समय का सबसे बड़ा शत्रु कौन है?

(i) अज्ञान ( ) (ii) निर्धनता ( ) (iii) आलस्य (✓) (iv) श्रम ( )

(ग) सत्संगति का मनुष्य पर क्या प्रभाव पड़ता है?

(i) वह सब काम करता है ( ) (ii) वह समय व्यर्थ नहीं गँवाता (✓)

(iii) वह आलसी बन जाता है ( ) (iv) वह हँसता रहता है ( )

(घ) 'सत्संगति' शब्द में दो उपसर्ग कौन-कौन से हैं?

(i) सत + सम ( ) (ii) सत् + सम् (✓)

(iii) सद + सन् ( ) (iv) सत् + सन् ( )

II. दिए गए शब्दों के विलोम शब्द लिखिए—

(क) सदुपयोग ..... *दुरुपयोग* .....

(ख) आलस्य ..... *उद्यम (स्फूर्ति)* .....

2. अपठित पद्यांश

अपठित गद्यांश की भाँति परीक्षा में अपठित पद्यांश भी दिए जाते हैं। अपठित पद्यांश ऐसा पद्यांश होता है जो निर्धारित पाठ्य-पुस्तकों से नहीं लिया जाता। अपठित पद्यांश देकर उन पर आधारित प्रश्न पूछे जाते हैं।

नीचे कुछ अपठित पद्यांश तथा उन पर आधारित प्रश्नों के उत्तर दिए गए हैं। इन पर ध्यान दीजिए—

1. छिपा दिए सब तत्त्व आवरण के नीचे ईश्वर ने,
संघर्षों से खोज निकाला उन्हें उद्यमी नर ने।
ब्रह्मा से कुछ लिखा भाग्य में मनुज नहीं लाया है,
अपना सुख उसने अपने भुजबल से पाया है।
प्रकृति नहीं डरकर झुकती है, कभी भाग्य के बल से,
सदा हारती वह मनुष्य के, उद्यम से, श्रम-जल से।

प्रश्न—(क) मनुष्य ने संघर्षों से क्या खोज निकाला?
(ख) मनुष्य ने अपना सुख किस प्रकार प्राप्त किया है?
(ग) प्रकृति मनुष्य से कब और कैसे हारती है?
(घ) उपर्युक्त पंक्तियों में क्या सन्देश दिया गया है?
(ङ) विलोम शब्द लिखिए—भाग्य।

उत्तर—(क) मनुष्य ने अपने संघर्षों से पृथ्वी के नीचे छिपे खजाने को खोज निकाला है।
(ख) मनुष्य ने अपना सुख अपनी भुजाओं की शक्ति के सहारे प्राप्त किया है।
(ग) प्रकृति मनुष्य के उद्यम और परिश्रम के सामने हार जाती है।
(घ) व्यक्ति को अपने भाग्य पर आश्रित न रहकर पुरुषार्थ के बल पर सब कुछ प्राप्त करना चाहिए।
(ङ) भाग्य का विलोम शब्द है—पुरुषार्थ।

2. चाह नहीं, सुरबाला के गहनों में गूँथा जाऊँ,
चाह नहीं, प्रेमी-माला में बिंध प्यारी को ललचाऊँ।
चाह नहीं, सम्राटों के शव पर हे हरि डाला जाऊँ,
चाह नहीं, देवों के सिर पर चढ़ूँ भाग्य पर इठलाऊँ।
मुझे तोड़ लेना वनमाली, उस पथ में तुम देना फेंक,
मातृभूमि पर शीश चढ़ाने, जिस पथ जाएँ वीर अनेक।

सही उत्तर पर सही (✓) का चिह्न लगाइए—

(क) इस पद्यांश में किसका वर्णन किया गया है?
(i) वृक्ष का ( ) (ii) फूल का (✓) (iii) कली का ( ) (iv) नारी का ( )

(ख) 'पुष्प' की क्या अभिलाषा है?
(i) मन्दिर में चढ़ना ( ) (ii) माला में बिंधना ( )
(iii) गहनों में सजना ( ) (iv) वीरों के पथ पर बिछना (✓)

(ग) पुष्प ने स्वयं को वीरों के पथ पर डालने की किससे प्रार्थना की है?
(i) कवि ( ) (ii) वनमाली (✓) (iii) माता ( ) (iv) डाली ( )

(घ) इनमें से कौन-सा शब्द 'पथ' का समानार्थी नहीं है?
(i) रास्ता ( ) (ii) सड़क (✓) (iii) राह ( ) (iv) मार्ग ( )

निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर इस पर आधारित प्रश्नों के उत्तर दीजिए—

1. दूसरों को स्नेह देना और उनका सम्मान करना सामाजिक सफलता का एकमात्र मन्त्र है। जीवन में सुख-शान्ति और उन्नति चाहने वाले प्रत्येक महत्त्वाकांक्षी को सबसे पहले यही सीख धारण करनी चाहिए। युधिष्ठिर के राजसूय यज्ञ में कृष्ण ने लोगों के स्वागत की ज़िम्मेदारी ली और बदले में वे उस यज्ञ के सर्वाधिक पूज्य व्यक्ति माने गए। ईसा मसीह, गौतम बुद्ध, महावीर, महात्मा गांधी जैसे महापुरुषों में रंचमात्र भी अभिमान न था। उन्होंने सदैव दूसरों को महत्त्व दिया और इस तरह से वे स्वयं महान बन गए। मान-सम्मान का मूल्य चुकाना असम्भव है। बिना मान-सम्मान के यदि अमृत भी मिले तो विष बन जाता है और मानपूर्वक दिया गया विष अमृत बन जाता है। विद्यार्थी जीवन का प्रथम पाठ यही है कि वह गुरु के प्रति सच्चे सम्मान का भाव अपने हृदय में पैदा करे, अन्यथा उसकी विद्या निष्फल हो जाएगी।

सही उत्तर पर सही (✓) का चिह्न लगाइए—

(क) सामाजिक सफलता का एकमात्र मन्त्र क्या है?

(i) महत्त्वाकांक्षी बनना ◯ (ii) दूसरों का सम्मान करना ◯ (iii) उन्नति करना ◯

(ख) पाण्डवों में सबसे बड़ा कौन था?

(i) कृष्ण ◯ (ii) अर्जुन ◯ (iii) युधिष्ठिर ◯

(ग) श्रीकृष्ण युधिष्ठिर के राजसूय यज्ञ के सर्वाधिक पूज्य व्यक्ति माने गए, क्योंकि

(i) वे भगवान थे ◯ (ii) वे अर्जुन के सारथी थे ◯

(iii) उन्होंने लोगों के स्वागत की ज़िम्मेदारी ली ◯

(घ) विद्यार्थी-जीवन का प्रथम पाठ क्या है?

(i) वह माँ सरस्वती की पूजा करे ◯ (ii) वह गुरु का सच्चे मन से सम्मान करे ◯

(iii) वह मन लगाकर अध्ययन करे। ◯

निम्नलिखित पद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर इस पर आधारित प्रश्नों के उत्तर दीजिए—

2. तापित को स्निग्ध करे, प्यासे को चैन दे,
सूखे हुए अधरों को फिर से जो बैन दे,
ऐसा सभी पानी है।
लहरों के आने पर, काई-सा फटे नहीं,
रोटी के लालच में, तोते-सा रटे नहीं,
प्राणी वही प्राणी है।
बोले तो हमेशा सच, सच से हटे नहीं,
झूठ के डराए से, हरगिज़ डरे नहीं,
सचमुच वह सच्चा है।

प्रश्न—(क) पद्यांश के लिए एक उपयुक्त शीर्षक लिखिए।

(ख) कवि ने पानी के बारे में क्या कहा है?

(ग) सच्चा प्राणी कौन है?

(घ) 'सच्चा' मनुष्य कौन कहलाता है?

(ङ) 'रोटी के लालच में, तोते-सा रटे नहीं।' पंक्ति का आशय स्पष्ट कीजिए।

PERIODIC TEST I Term 1

(अध्याय 1 से 6 पर आधारित)

नोट–सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

समय : .....

पूर्णांक : .....

(क) सही विकल्प पर सही (✓) का चिह्न लगाइए—

1. वर्ण भाषा की कैसी इकाई है?
   (i) सबसे छोटी ☐ (ii) सबसे बड़ी ☐ (iii) सबसे लम्बी ☐
2. भाववाचक संज्ञा का उदाहरण है—
   (i) बचपन ☐ (ii) रामायण ☐ (iii) महल ☐
3. कौन-सा शब्द सदा एकवचन में प्रयोग किया जाता है?
   (i) दाल ☐ (ii) मिठाई ☐ (iii) दूध ☐

(ख) रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए—

1. जिस शब्द से क्रिया के करने वाले का बोध हो, उसे ..... कारक कहते हैं।
2. वे संज्ञा शब्द जो किसी समूह अथवा समुदाय का बोध कराते हैं, ... कहलाते हैं।
3. जो शब्द एक-दूसरे से मिलता-जुलता अर्थ प्रदान करते हैं, वे ..... कहे जाते हैं।
4. स्वर के ..... मुख्य भेद हैं।
5. ..... विचार-विनिमय का साधन है।

(ग) निम्नलिखित तत्सम शब्दों का तद्भव शब्दों से मिलान कीजिए—

1. अग्नि	(i) अँगूठा
2. अक्षि	(ii) धुआँ
3. अंगुष्ठ	(iii) कान
4. कर्ण	(iv) आग
5. धूम्र	(v) आँख

(घ) निम्नलिखित पुल्लिंग शब्दों को स्त्रीलिंग रूप में बदलिए—

आचार्य	.....	क्षत्रिय	.....
ग्वाला	.....	लेखक	.....
विधुर	.....	कवि	.....
बुद्धिमान	.....	प्रार्थी	.....

(ङ) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए—

1. वचन किसे कहते हैं? इसके कितने भेद हैं? उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।
2. व्यक्तिवाचक व जातिवाचक संज्ञा में अन्तर लिखिए।
3. देशज शब्द किन्हें कहते हैं?

HALF-YEARLY Test Paper

(अध्याय 1 से 12 पर आधारित)

समय : .....

पूर्णांक : .....

नोट–सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

(क) सही विकल्प पर सही (✓) का चिह्न लगाइए—

1. भावों तथा विचारों के आदान-प्रदान का माध्यम कहलाता है?

   (i) व्याक्य ☐ (ii) भाषा ☐ (iii) व्यंजन ☐ (iv) स्वर ☐

2. त, थ, द, ध, न का उच्चारण-स्थान क्या है?

   (i) दन्त ☐ (ii) ओष्ठ ☐ (iii) कण्ठ ☐ (iv) मूर्धा ☐

3. 'आसमान' किस प्रकार का शब्द है?

   (i) देशज ☐ (ii) तत्सम ☐ (iii) तद्भव ☐ (iv) विदेशी ☐

4. निम्नलिखित में भाववाचक संज्ञा कौन-सी है?

   (i) नेता ☐ (ii) ताजमहल ☐ (iii) स्त्री ☐ (iv) बुढ़ापा ☐

5. वाक्य में शब्दों के साथ जो कारक-चिह्न जाते हैं, वे क्या कहलाते हैं?

   (i) सन्धि ☐ (ii) विभक्ति/परसर्ग ☐ (iii) समास ☐ (iv) इनमें से कोई नहीं ☐

(ख) रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए—

1. ..... भाषा के शुद्ध रूप का ज्ञान कराता है।
2. संज्ञा के जिस रूप से एक या एक से अधिक होने का बोध होता है, उसे ..... कहते हैं।
3. संज्ञा के स्थान में प्रयुक्त होने वाले शब्द/पद ..... कहलाते हैं।
4. क्रिया के मूलरूप को ..... कहते हैं।
5. भाषा के मौखिक रूप को लिखित रूप में परिवर्तित करने के नियमों को उस भाषा की ..... कहते हैं।

(ग) निम्नलिखित के वर्ण-विच्छेद लिखिए—

1. वैज्ञानिक = ...
2. लक्ष्मण = ...
3. युधिष्ठिर = ...
4. इतिहास = ...
5. उच्चारण = ...

(घ) निम्नलिखित शब्दों के अर्थ स्पष्ट कीजिए—

लज्जा	.....	ग्लानि	.....
अहंकार	.....	अभिमान	.....
परीक्षक	.....	निरीक्षक	.....
उपहास	.....	परिहास	.....
दुराचार	.....	अत्याचार	.....

(ङ) निम्नलिखित शब्दों से नामधातु क्रियाएँ बनाइए—

हाथ	.....	बात	.....
शर्म	.....	लाज	.....
गर्म	.....	चमक	.....
महक	.....	टक्कर	.....
चक्कर	.....	अपना	.....

(च) निम्नलिखित अशुद्ध शब्दों को शुद्ध कीजिए—

बिमारी	.....	वधु	.....
प्रसंशा	.....	आर्शीवाद	.....
सन्यासी	.....	दृष्टव्य	.....
जबाब	.....	स्वास्थ	.....
घोतक	.....	मुसकिल	.....

(छ) निम्नलिखित वाक्यों में प्रयुक्त क्रियाओं के काल, वाक्यों के सामने लिखिए—

1. सूर्योदय का दृश्य बड़ा मनोरम होता है। .....
2. सुमित कल इंजीनियरिंग की प्रवेश-परीक्षा में बैठेगा। .....
3. विपिन चित्र बनाता होगा। .....
4. रवि अभी-अभी आया है। .....
5. यदि टिकट मिलता तो फ़िल्म देखते। .....

(ज) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए—

1. अनुस्वार और अनुनासिक में क्या अन्तर है? उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।
2. संज्ञा के कितने भेद हैं? दो-दो उदाहरण देकर स्पष्ट कीजिए।
3. मातृभाषा और राजभाषा में अन्तर स्पष्ट कीजिए।
4. सम्बन्धबोधक अव्यय किसे कहते हैं? उदाहरण देकर स्पष्ट कीजिए।
5. विकारी और अविकारी शब्दों में अन्तर स्पष्ट कीजिए।

PERIODIC TEST : Term 2

(अध्याय 1 से 18 पर आधारित)

समय : .....
पूर्णांक : .....

नोट–सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

(क) सही विकल्प पर सही (✓) का चिह्न लगाइए—

1. हिन्दी दिवस मनाया जाता है—
   (i) 14 सितंबर ☐ (ii) 15 अगस्त ☐ (iii) 5 मई ☐
2. निम्नलिखित में से कौन-सा सर्वनाम का भेद नहीं है?
   (i) पुरुषवाचक ☐ (ii) जातिवाचक ☐ (iii) निजवाचक ☐
3. 'रामानुज' शब्द का सन्धि विच्छेद है—
   (i) राम + अनुज ☐ (ii) रामा + नुज ☐ (iii) रा + मनुज ☐

(ख) निम्नलिखित शब्दों के संधि-विच्छेद कीजिए—

स्वागत = ... विद्यालय = ...

गिरीश = ... लंबोदर = ...

(ग) निम्नलिखित वाक्यों के समक्ष दिये निर्देशों के अनुसार वाक्यों को परिवर्तित कीजिए—

1. यह काम कर दीजिए। (निषेधवाचक) .....
2. दिव्या रोज़ पढ़ने जाती है। (आज्ञावाचक) .....
3. देवेश ने पत्र लिखा। (प्रश्नवाचक) .....
4. सुनयना गा रही है। (विस्मयादिबोधक) .....

(घ) निम्नलिखित वाक्यों में प्रयुक्त सर्वनाम के नीचे रेखा खींचकर उनके भेदों के नाम लिखिए—

भेद

1. वह कुछ भी नहीं बोला, चुप सुनता रहा। .....
2. विपिन अपना काम समाप्त कर चुका था। .....
3. जैसा करोगे वैसा भरोगे। .....
4. हिमांशु ने साइकिल अपने आप ठीक कर ली। .....
5. विपुल तुम क्या कर रहे हो? .....

(ङ) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए—

1. अल्पविराम और अर्ध विराम में क्या अन्तर है?
2. अर्थ की दृष्टि से वाक्य के कितने भेद हैं? उनके नाम लिखिए।
3. प्रत्यय से क्या अभिप्राय है? सोदाहरण स्पष्ट कीजिए।

ANNUAL Test Paper

नोट–सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

समय : .....

पूर्णांक : .....

(क) सही विकल्प पर सही (✓) का चिह्न लगाइए—

1. निम्नलिखित में से कौन-सा सर्वनाम का भेद नहीं है?
   (i) पुरुषवाचक ☐ (ii) जातिवाचक ☐ (iii) निजवाचक ☐ (iv) सम्बन्धवाचक ☐
2. विशेषण की विशेषता बताने वाले शब्द क्या कहलाते हैं?
   (i) विशेष्य ☐ (ii) प्रविशेषण ☐ (iii) सर्वनाम ☐ (iv) क्रियाविशेषण ☐
3. ध्वनि के अनुकरण के आधार पर बनी क्रियाएँ कहलाती हैं—
   (i) संयुक्त ☐ (ii) नामधातु ☐ (iii) मिश्रधातु ☐ (iv) प्रेरणार्थक ☐
4. जहाँ क्रिया का सीधा सम्बन्ध कर्ता से हो, वहाँ वाच्य होता है—
   (i) कर्तृवाच्य ☐ (ii) कर्मवाच्य ☐ (iii) भाववाच्य ☐ (iv) इनमें से कोई नहीं ☐
5. 'नमस्ते' शब्द का सही सन्धि-विच्छेद है—
   (i) नमः + स्ते ☐ (ii) नमः + ते ☐ (iii) नम + अस्ते ☐ (iv) न + मस्ते ☐

(ख) रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए—

1. जो शब्दांश क्रिया के धातुरूप में अन्त में जुड़कर संज्ञा या विशेषण का निर्माण करते हैं, उन्हें ..... कहते हैं।
2. हिन्दी भाषा में वाक्य में आए शब्दों का पूर्ण व्याकरणिक परिचय देना ..... कहलाता है।
3. वाक्य को ..... तथा ..... के आधार पर बाँटा गया है।
4. ..... वाक्य के अंश होते हैं।
5. जिस क्रिया को कर्म की अपेक्षा नहीं होती, उसे ..... कहते हैं।

(ग) निम्नलिखित शब्दों में प्रत्यय लगाकर नये शब्द बनाइए—

नौकर	.....	पत्र	.....	ईमान	.....
समाज	.....	गुलाब	.....	नाना	.....
इतिहास	.....	बच्चा	.....	अपना	.....
मीठा	.....	ऊँच	.....	नमक	.....
मोटा	.....	सोना	.....	दुःख	.....

(घ) निम्नलिखित मुहावरों के अर्थ लिखिए—

1. अँगूठा दिखाना .....
2. आग में घी डालना .....
3. सिर आँखों पर बैठाना .....
4. तलवे चाटना .....
5. हवा से बातें करना .....

(ङ) निम्नलिखित समस्तपदों का विग्रह करके समास का नाम लिखिए—

समस्तपद	समास-विग्रह	समास का नाम
1. यशप्राप्त	.....	.....
2. प्रेममग्न	.....	.....
3. चन्द्रमुख	.....	.....
4. नवरत्न	.....	.....
5. गजानन	.....	.....

(च) नीचे दिए गए शब्दों से विशेषण बनाइए—

प्रकृति	.....	भीतर	.....
बुद्धि	.....	पुराण	.....
चाचा	.....	उदय	.....
पत्थर	.....	शास्त्र	.....

(छ) निम्नलिखित में किसी एक विषय पर अनुच्छेद लिखिए—

1. दैव-दैव आलसी पुकारा
2. हँसी का महत्त्व
3. पर उपदेश कुशल बहुतेरे
4. कुसंगति का प्रभाव

(ज) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए—

1. कर्म कारक और सम्प्रदान कारक में अन्तर स्पष्ट कीजिए तथा दो-दो उदाहरण दीजिए।
2. विस्मयादिबोधक अव्यय किसे कहते हैं? सोदाहरण लिखिए।
3. यण् तथा अयादि सन्धि के दो-दो उदाहरण लिखिए।
4. विराम-चिह्न का प्रयोग क्यों किया जाता है?
5. उपसर्ग और प्रत्यय में क्या समानता और अन्तर है?

An imprint of Vidya Prakashan Mandir (P) Ltd.

व्याकरण सुमन

पुस्तक-शृंखला के सन्दर्भ में...

भाषा विचार-विनिमय व अभिव्यक्ति का माध्यम है। हिन्दी जनसंपर्क की एक सशक्त भाषा के रूप में उभरी है। उसी भाषा को प्रभावी माना जाता है जो व्याकरण के नियमों का पालन करती हो। अत: प्रारम्भिक स्तर पर व्याकरण की एक ऐसी पुस्तक की आवश्यकता है, जो हिन्दी व्याकरण के जटिल नियमों को सरल, सरस व आकलन योग्य बना सके तथा उसकी बारीकियों का समुचित ज्ञान करा सके। इस चुनौती को ध्यान में रखकर इस शृंखला की रचना की गयी है।

शृंखला की मुख्य विशेषताएँ निम्नवत् हैं—

- स्तरानुकूल सरल से कठिन की ओर बढ़ता ज्ञान।
- सरल भाषा, आकर्षक चित्र तथा दैनिक जीवन से जुड़े उद्धरण।
- खेल-खेल में व्यावहारिक भाषा के माध्यम से व्याकरण के नियमों का सहज ज्ञान।
- स्वयं प्रयोग से सीखने पर बल।

प्रत्येक प्रकरण से बच्चे जो कुछ सीख पाए, उसका आकलन करने के लिए 'अभ्यास' शीर्षक के अन्तर्गत विविध प्रश्नों का समावेश किया गया है। यह शृंखला अब तक चली आ रही व्याकरण-नियम की रटंत-विद्या से मुक्ति दिलाने में अवश्य ही मील का पत्थर सिद्ध होगी। हमें आशा है कि यह पुस्तक-शृंखला विद्यार्थियों के लिए अत्यन्त उपयोगी व अध्यापकगणों के लिए सहज स्वीकार्य होगी।

BRILLIANT BOOKS

ISBN 978938960671

₹325